और अर्ज्जुन रक्षा करते हैं, इसलिये युद्धमें साक्षात इन्द्र भी नहीं जीत सक्ता, मैं इससे अपने क्रोधको रोक नहीं सकता और जगत्‌में किसीको ऐसा भी नहीं देखता जो इसे शान्त कर सके। मैंने वावीत वह मनुष्योंके मुखसे यह सुना है कि मेरे मित्र दुर्य्योधनका निरादर हुआ इसलिये मैंने आपसे जो कुछ कहा वही निश्चय है, पाण्डवोंकी बिजय ही सुनकर मेरा हृदय जला जाता है अब मैं शत्रुओंका नाश करके ही सावधान होकर सुखसे सोऊंगा।

४ अध्याय समाप्त।

कृपाचार्य्य बोले, मूर्खको कितना ही समुझाओ तो भी वह नहीं समझता, हमारी बुद्धिमें ऐसा आता है, कि जिस मनुष्यके बशमें इन्द्री नहीं होती वह पूरी रीतिसे अर्थ और धर्म्मके जाननेमें समर्थ नहीं होता, इसी प्रकार महाबुद्धिमान भी नम्रताके मारे, दूसरे प्रकारकी शिक्षा ही नहीं सुनता। इसी लिये यह भी पूर्ण रीतिसे धर्म्म और अर्थके विषयोंको नहीं जान सक्ता। यदि मूर्ख बौर बहुत दिनतक भी पंडितोंकी सेवा करे, तो भी धर्म्मको इस प्रकार नहीं जान सक्ता, जैसे करछी भोजनके रसको और बुद्धिमान उन्हीं पंडितोंके पास क्षणमात्र बैठनेसे भी धर्म्मको इस प्रकार जान लेता है, जैसे जीभ अन्नके रसोंको जो धर्म्म सुननेकी इच्छावाला मनुष्य इन्द्रियोंको बशमें कर लेता है, वह बुद्धिमान सब शास्त्रोंके तत्वको शीघ्र ही जान लेता है, और ग्रहण करने योग्य विषयोंसे विरोध नहीं करता जो अभिमानी, बड़ोंके बचन न माननेवाला नीच पुरुष कल्याणको छोड़कर पाप करता है, वही पापी होता है।

सनाथ मित्रको मित्र पापसे रोकते हैं, और महात्मा ही मित्रोंके बचन सुनकर पापसे बचते हैं और पापी नहीं। जैसे मित्र अनेक प्रकारके बचन कहकर पागलको समुझाते हैं। ऐसे ही साधारण मनुष्यको भी समयपर समझाना चाहिये। जब देखे कि हमारा कोई बुद्धिमान मित्र पाप करता है, तब पंडितको उचित है, कि अपनी शक्तिभर उसे बार बार रोके यदि वह पाप करनेवाला मित्र भी अपने मनमें समझे कि यह बात कल्याणकी है तो उसे पीछे पछताना न पड़ेगा. सिद्धान्त यह है, कि जो मनुष्य सोता हो, जिसके पास शस्त्र न हो, जो कहे कि हम आपहीके हैं, जो शरणागत हो जिसके बाल खड़े हों और जिसका वाहन छूट गया हो ऐसे मनुष्योंको मारना धर्म्म नहीं। इस समय सब पाञ्चाल बिश्वास सहित कवच खोलकर प्रेतके समान अचेत सो रहे हैं, जो पापी मूर्ख इस समय उनसे द्रोह करेगा वह अवश्य ही अपार घोर नरकमें जायगा।

हमारी यह इच्छा है कि तुम सब शस्त्र जाननेवाले और प्रसिद्ध बीर हो तुम्हे जगतमें थोड़ा भी कलङ्क न लगने पावे। प्रातःकाल होते ही तुम सूर्य्य के समान तेज धारण करके सब शत्रुओं को जीतियो यदि तुम रीते पाञ्चालों को मारोगे तो तुम्हारे जीवनमें ऐसा कलङ्क लग जायगा जैसे सफेद वस्त्रमें लाल रङ्गका धब्बा।

अश्वत्थामा बोले, हे मामा! आपने जो कहा वह सब वैसे ही है, इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु पाण्डवोंहीने पहिले इस धर्म्म रूपी पुलके काटकर सैकड़ों टुकड़े कर दिये हैं, अनेक राजा और आपके देखते देखते शस्त्ररहित हमारे पिताको धृष्टद्युम्नने मार-डाला। जिस समय महारथ कर्णका पहिया पृथ्वीमें घुस गया था और वे उसके निकालनेमें महापरिश्रम कर रहे थे उसी समय अर्ज्जुनने उन्हें मारडाला, शिखण्डीको आगे करके अर्ज्जुनने शस्त्ररहित भीष्मको मारा, महाशस्त्रधारी भूरिश्रवाको व्रतमें बैठे देखकरभी अनेक राजोंके रोकनेपर भी सात्यकीने मारडाला। भीम-

सेनने गदायुद्धमें अधर्म्मसे राजाको मारा और उनके शिरपर पैर रक्खा, देखो अनेक महारथोंने मिलकर पुरुषसिंह महाराजको मरवा दिया, जांघ टूटे राजा मेरे आगे कैसे रोते थे, यह स्मरण करके मेरे शरीर जले जाते हैं; ऐसे पापी पाञ्चाल धर्म्मके छोड़नेवालोंकी निन्दा करते नहीं और हमारी निन्दा करते हो। चाहे मैं अगले जन्ममें कीड़ा हूं चाहे पतङ्गा बनूं परन्तु अपने पिताके मारनेवाले पाञ्चालोंको सोते ही मारूंगा, अब मैं अपने कर्म्मके लिये बड़ी ही शीघ्रता करता हूं, सो मुझे सुख और निद्रा कहां? जगत्में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है, न होगा जो मुझे इनके मारनेसे रोके।

सञ्जय बोले, ऐसा कहकर प्रतापवान् अश्वत्थामा उठे और अपने रथमें घोड़े जोड़कर एकवेही शत्रुओंकी ओर चल दिये, तब महात्मा कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा बोले, हे पुरुषसिंह! आपने अपने रथमें घोड़े क्यों जोड़े? आपके चित्तमें क्या आया है? हम लोग प्रातःकाल होते ही आपके सङ्ग युद्ध करनेको चलेंगे और आपके समान ही सुखदुःख भोगेंगे परन्तु इस समय आप कहां जाते सो कहिये?

उनके वचन सुन क्रोध भर अश्वत्थामा अपने पिताके मरनेका स्मरण करके अपनी इच्छा प्रकाशित करने लगे। आप लोग जानते हैं कि हमारे पिताने अपने तेज बाणोंसे लाखों वीरोंको मारा था और पीछे शस्त्र त्यागनेपर धृष्टद्युम्नने उन्हें मार डाला, अब मैं भी उस पापी, अधर्मी, शस्त्ररहित, धृष्टद्युम्नको वैसे ही पाप कर्म्मसे मारूंगा, मैं उस पापीको बिना शस्त्र ही पशुके समान मारूंगा, जिसमें उसे स्वर्ग न हो। आप दोनों महारथ शीघ्र कवच पहिनकर खड्ग और धनुष धारण करके यहीं खड़े खड़े हमारे लौटनेका मार्ग देखो।

ऐसा कहकर अश्वत्थामाने अपना रथ हांका और शत्रुओंकी ओरको चले उनके सङ्ग कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा भी चले उस समय इन तीनों वीरोंका ऐसा तेज दीखता था, जैसे यज्ञमें जलती हुई अग्नि चलते चलते थे तीनों वीर पाण्डवोंकी सेनाके पास पहुंचे और देखा तो वहां सब वीर सोते हैं तब महारथ अश्वत्थामा रथसे उतरे और द्वारपर गये।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! अश्वत्थामाको डेरोंके द्वारपर खड़े देख कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माने क्या किया सो हमसे कहो?

सञ्जय बोले, अश्वत्थामाको द्वारपर खड़े देख दोनों वीरोंने उनके संग सम्मति करी, तब क्रोध भरे अश्वत्थामा थोड़ा और आगे बढ़े तब उन्होंने द्वारपर चन्द्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी बड़े शरीरवाले बाघका चमड़ा ओढ़े काले हरिनका चमड़ा बिछाए जनेऊ पहिने, अनेक मोटे मोटे हाथोंमें शस्त्र लिये, सांपका बाजू बन्द पहिने, जलती हुई अग्निरूपी नेत्रयुक्त, भयानक, बड़ी बड़ी दाढ़वाला मुख फैलाए, सहस्रों नेत्र खोले एक भूतको देखा। हम उस भूतके शरीरका वर्णन नहीं कर सक्ते उसको देखकर पर्वतभी फटते थे।

अश्वत्थामाका देखते ही उस भूतके आंख, कान और नाकसे आगकी सहस्रों भयानक ज्वाला निकलने लगीं और उन ज्वालाओंसे सहस्रों शङ्ख, चक्र, गदाधारी विष्णु उत्पन्न होगये। उस भयङ्कर भूतको देखकर अश्वत्थामा कुछ न डरे और सावधान होकर सहस्रों दिव्य बाण उसके ऊपर चलाने लगे। अश्वत्थामाके सब दिव्य बाण उसके शरीरमें जाकर गुप्त होगए। अश्वत्थामा उस अद्भुत कर्म्मको देखकर विचारने लगे। जैसे बड़वाग्नि समुद्रके जलको भस्म कर देती है, ऐसे

ही मेरे बाण इस भूतके शरीरमें गुप्त और निरर्थक होगये।

अनन्तर अश्वत्थामाने जलती हुई अग्निकी समान तेज भरी एक सांगी लेकर मारी, तब वह शक्ती उसके शरीरमें लगकर इस प्रकार टूट गई जैसे प्रलयकालकी बिजली सूर्य्यमें लगनेसे।

अनन्तर चमकते हुए आकाशके समान सुन्दर सोनेके मूठवाला खड्ग उस भूतके शरीरमें मारा, वह खड्ग स्यानसे इस प्रकार निकला जैसे बिलसे सर्प निकलता है, तब वही खड्ग उस भूतके शरीरमें मारा, परन्तु वह उस भूतके शरीरमें ऐसे गुप्त होगया, जैसे बिलमें नवाल घुस जाता है तब अश्वत्थामाने क्रोध करके इन्द्रकी ध्वजाके समान लम्बी तेजसे भरी गदा मारी वह भी उसके शरीरमें चली गई।

तब अश्वत्थामाके पास कुछ शस्त्र न रहा उस समय अश्वत्थामा शस्त्ररहित होकर इधर उधर देखने लगे। तब देखा कि आकाश विष्णुवोंसे भर रहा है।

इस अद्भुत बातको देखकर शस्त्ररहित अश्वत्थामा दुःखी होकर कृपाचार्य्यके वचन स्मरण करके विचारने और मन कहने लगे कि जो अपने मित्रोंके कड़वे वचन नहीं सुनता वह हमारे समान आपत्तिमें पड़कर शोचता है। जो शास्त्र न पढ़ा मूर्ख बूढ़ोंके वचन न मानकर पाप करता है उसे अवश्य आपत्तिमें पड़ना होता है।

महात्मा गुरुवोंने ऐसा उपदेश किया है, कि गौ, ब्राह्मण, राजा, मित्र, स्त्री, माता, गुरु, दुर्ब्बल, मूर्ख, अन्धे, सोते, डरे और सोकर उसी समय उठे तथा पागल, मतवाले और प्रमत्त मनुष्यपर शस्त्र न चलावे।

परन्तु मैं सनातन शास्त्रमें लिखे धर्म्मको छोड़कर अधर्म्म करना चाहता था। इसी लिये इस घोर आपत्तिमें पड़ा, महात्मा उसे ही घोर आपत्ति कहते हैं, कि जो मनुष्य जिस कामको करना चाहे और भयसे उस कामको बिना करे लौट आवे। जैसे असमर्थ कर्म्म नहीं कर सक्ता, वैसेही उद्योगी मनुष्य जब लौटता है, तब वह भी उसीके समान होजाता है। जगत्में प्रारब्धके आगे मनुष्यका कर्म्म नहीं चलता परन्तु यदि मनुष्य परिश्रम करके अपने कार्य्यको समाप्त न कर सके और धर्म्मसे भी नष्ट होजाय, तब आपत्तिमें अवश्य ही पड़ता है।

पण्डित मनुष्यको उचित है, कि कामके आरम्भसे पहिले ही उसके बिगड़ने और सुधरनेके विषयोंको देख ले नहीं तो पीछे मेरे समान दुःखमें पड़कर भयसे कार्य्य छोड़कर निवृत्त होना पड़ता है, मैंने बिना बिचारे यह काम किया था, जो ही द्रोणाचार्य्यका पुत्र युद्धसे नहीं लौटेगा, परन्तु यह भूत दैवकी समान खड़ा है मैं अत्यन्त बिचारने पर भी इसको नहीं समझ सक्ता, मुझे यह निश्चय होता है, कि मैंने जो अधर्म्म करना बिचारा था, यह उसीका भयानक फल मेरा नाश करनेको आया है, मेरी प्रारब्धमें यही लिखा था, कि युद्धसे लौटना पड़ेगा, अन्यथा मुझको युद्धसे लौटानेकी समर्थ किसकी थी?

अब मैं कपाल मालाधारी, सूर्य्य नेत्रवाले, भक्तोंका दुःख दूर करनेवाले, रोगरहित, जटाधारी भगवान शिवकी शरण जाता हूं, वे ही मेरे इस घोर दुःखको दूर करेंगे वे तप और बलके कारण सब देवतोंसे अधिक हैं, इसलिये मैं उनहीं शूलधारी शिवकी शरण जाता हूं।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ऐसे कहकर अश्वत्थामा पृथ्वीमें खड़े होकर प्रणाम करके शिवकी स्तुति करने लगे।

अश्वत्थामा बोले, हम महातेजस्वी, स्थिर, कल्याणरूप, रुद्र, सर्व्व जगत्के स्वामी, ईश्वर,

पर्व्वतपर सोनेवाले, वर देनेवाले, विहार और प्रकाश करनेवाले, जगत्भावन ईश्वर, नीलकण्ठ, सनातन, व्यापक, दक्षयज्ञ बिनाशक, भक्तदुःख-नाशक, जगद्रूप, विरूपाक्ष, अनेक रूपधारी, पार्व्वतीपति, श्मशानवासी, महाबलवान गणोंके स्वामी, सर्व्व व्यापक, नरपञ्जर धारी, रुद्र, जटा धारी, ब्रह्मचारी, त्रिपुरासुर नाशक, स्तुतिकरने योग्य, स्तुति किये हुये देवतोंसे, स्तुतियोग्य, अनन्त, कृत्तिवासा, विलोहित, नीलकण्ठ, न सहनेयोग्य, दुःख निवारण करने योग्य, इन्द्र, ब्रह्माको बनानेवाले, ब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतधारी, तपस्वी, अपार, तपस्वियोंको फल देनेवाले, अनेक रूपधारी, त्रिनेत्रगणोंके प्यारे, धनके स्वामी, जगत्के सुख, पार्व्वतीके हृदयके प्यारे, कार्त्तिकेयके पिता, उत्तम बैलपर चढ़नेवाले, सूक्ष्म बस्त्रधारी, पार्व्वतीको भूषण, पहिरानेवाले, उत्तमसे उत्तम, अत्यन्त उत्तम, सबसे उत्तम, उत्तम शस्त्रधारी, सब जगत्के स्वामी, सब दिशा, और देशोंके रक्षक, सुवर्ण कलशधारी, और चन्द्रमाको माथेमें धारण करनेवाले भगवान शिवको मैं अत्यन्त कठिन और शुद्ध मनसे प्रणाम करता हूं। यदि मैं इस घोर आपत्तिसे पार होजाऊं तो पवित्र होकर सब प्रकारकी सामग्रियोंसे पवित्र शिवकी पूजा करूंगा।

महात्मा सुकर्म्मी अश्वत्थामाका अभिप्राय जानकर योगके बलसे उनके आगे एक सुवर्णकी वेदी बनगई और उसमें आपसे आप आग जलने लगी, और उसकी ज्वालासे सब आकाश और पृथ्वी पूरित होगई तब उस वेदीसे अनेक हाथ पैर शिरवाले, रत्नोंके बिचित्र आभूषण पहिरे दीप और पर्व्वतोंके समान शरीरवाले, अनेक गण उत्पन्न होगये।

किसीका मुख कुत्तेका, किसीका ऊंटका, किसीका गधेका, किसीका घोड़ेका, किसीका गायका, किसीका स्यारका, किसीका रीछका, किसीका बिलावका, किसीका चीतेका, किसीका कौवेका, किसीका बन्दरका, किसीका तोतेका, किसीका हन्सका, किसीका हाथीका, किसीका दावीघाट पक्षीका, किसीका गरुड़का, किसीका, कछुवेका, नाका शिशुमार अर्थात् घड़ियाल, मगर, मछली, कछुवे, कबूतर, परेवा, मञ्जनामक मछलीके समान मुख था।

किसीके हाथमें कान था, किसीके हजारों नेत्र थे, किसीके बड़ाभारी पेट था, किसीके शरीरमें मांसही नहीं था, किसीके कौवेका, किसीका गरुड़का मुख था, किसीके शिर ही नहीं था, किसीके रीछका ऐसा मुख था, किसीके नेत्र अग्निके समान थे, किसीको बड़ी भारी जिह्वा थी, किसीका अग्निके समान रङ्ग था, किसीके नेत्र और बाल अग्निके समान थे, सबके चार चार हाथ थे, किसीका बकरेके समान मुख था, किसीका भेड़ेके समान मुख था किसीका मुख शङ्खके समान था, किसीका शरीर शङ्खके समान था, कोई शङ्खकी माला पहिरे था, कोई शङ्ख बजा रहा था, और कोई खड्ग हाथमें लिये था, किसीके जटा थी, किसीके पांच शिखा थीं। कोई शिर सुड़ाये था, किसीका पतला पेट था, किसीके चार दांत थे, किसीके चार जीभ थीं, किसीके कान छोटे छोटे थे, कोई मूंजकी करधनी पहिरे था, कोई शिरमें किरीट धारण किये था, और कोई पगड़ी बांधे था।

किसीका बड़ा सुन्दर मुख था, और कोई सुन्दर आभूषण पहिरे था, किसीके गलेमें कमलकी माला और किसीके गलेमें नीले कमलकी माला थी, कोई मुकुट धारण किये थे, कोई उत्तम महात्म्यसे भरे थे, ऐसे सहस्रों गण अश्वत्थामाको दिखाई दिये, किसीके हाथमें शतघ्नी, किसीके हाथमेंलाठी, किसीकेहाथमें डण्डा, किसीके हाथमें भुशुण्डी, किसीके हाथमें परिघ, किसीके हाथमें बाण, किसीके घण्टा, किसीके परशुध, किसीके बरछी और किसीके

सांप था, हाथमें सबके पास ध्वजा और पताका थीं, कोई सांपका बाजूबन्द पहने था, और कोई उत्तम विचित्र आभूषण पहिरे था।

किसीके कमरमें तूणीर बंधा था, सब धूल और मिट्टीसे भरे सफेद वस्त्र और माला पहिने नीले और धूमले वस्त्रवाले थे, कोई मृदङ्ग, कोई घण्टा, कोई गोमुख बजाते थे, कोई सोनेके समान रङ्गवाला गण नाचता था, कोई कूदता था, कोई उछलता था, कोई भागता था, कोई वेगसे दौड़ता था, किसीके बाल वायुसे उड़ते थे कोई मतवाले, हाथीके समान गर्जकर इधर उधर, घूमते थे, कोई शूल और पट्टिश हाथमें लेकर भयानक रूप धारण करके दौड़ते थे, कोई अनेक प्रकारके रङ्गे वस्त्र, अनेक प्रकारकी माला कोई अनेक प्रकारकी गन्धि और रत्नोंके आभूषण किये था, वे सब शत्रुनाशन महापराक्रमी भक्तोंकी रक्षा करनेवाले और मांस तथा आन्तका भोजन करनेवाले, थे कोई चुड़ेल, कोई कर्णिकार और पिठरोदर नामक भूत थे, किसीके बड़े बड़े लिङ्ग थे, और किसीके बड़े बड़े अण्डकोश थे, किसीके बड़े बड़े दांत और किसीकी भयानक जटा थीं, उस समय उन्होंने नक्षत्र, तारा, ग्रह, सूर्य्य, चन्द्रमाके समान पृथ्वी कर दई। येही सब गण चारों प्रकारके जगत्का नाश कर सकते हैं, इन्हें कहीं भय नहीं, होता यही शिवकी भौंहको देख सकते हैं। येही जगत्के स्वामी और सब काम करनेमें समर्थ हैं, सब विद्याओंको जाननेवाले हैं, किसीका द्वेष नहीं करते। आठो प्रकारकी ऋद्धि प्राप्त होनेपर भी अभिमान नहीं करते, इनका कर्म्म देखकर शिव भी आश्चर्य्य करते हैं, यह भी शिवकी सदा आराधना करते हैं, ब्राह्मणोंके वैरियोंका रुधिर पीते हैं। भगवान शिव भी मन, वचन और कर्म्मसे अपना भक्त जानकर इन्हें पुत्रके समान मानते हैं। यही सदा चारों प्रकारके सोम पीते हैं। इन्होंने विद्या, ब्रह्मचर्य्य, तप और योगसे शिवको प्रसन्न किया है, और शिवकी सायुज्य मोक्ष पाई है, भगवान सब जगत्के स्वामी शिव पार्व्वतीके सहित इनके हृदयमें निवास करते हैं।

तब ये सब गण अनेक प्रकारसे बाजे बजाते हंसते, कूदते, उछलते, जगत्को डराते, अपने तेजसे सब ओर प्रकाश करते अश्वत्थामाकी ओर दौड़े और महात्मा अश्वत्थामाको सोते हुये वीरोंका तेज दिखाने लगे। और भयानक परिघ, शूल और पट्टिस लेकर अश्वत्थामाको डराने लगे। उनको देखकर तीनों लोक डर सकते हैं, परन्तु अश्वत्थामा न डरे तब धनुषधारी तलहत्थी पहिने वीर अश्वत्थामाने पवित्र धनुष और तेज बाणोंको समिध बनाकर अपने शरीरको आहुति करना चाहा अश्वत्थामाने भगवान शिवकी उत्तम स्तुतिकरके ऐसा कहा।

अश्वत्थामा बोले, हे भगवन् शिव! सब जगत् आपमें स्थित है, सब जगत्के गुण आपमें विद्यमान हैं; मैं अङ्गिरावंशमें उत्पन्न हुआ, ब्राह्मण हूं, सो अब आपकी भक्ति और योगसे अपने शरीरकी अग्निमें जलाता हूं, यदि मैं शत्रुओंको नहीं जीत सकता तो आप इस बलीको ग्रहण कीजिये। ऐसा कहकर अश्वत्थामा उस जलती हुई अग्निमें घुस गये।

इनको अग्निमें ऊपरको हाथ किये हुये खड़ा देख साक्षात् शिव हंसकर बोले, हे प्यारे भक्त! मुझे कृष्णने सत्य, पवित्रता, कोमलता, त्याग, तप, नियम, क्षमा, भक्ति, धारण बुद्धि और वचनसे प्रसन्न किया था, इसलिये उनके समान कोई जगत्में प्यारा नहीं है, उन्होंने मुझसे कहा था, कि तुम पाञ्चालोंकी रक्षाकरो इसी लिये मैं उनको रक्षा कर रहा था, परन्तु अब उनका काल आगया इसलिये अब वे नहीं जी सकते।

ऐसा कहकर भगवान् शिवने उनके शरीरमें प्रवेश किया और एक तेज खड्ग दिया, तब अश्व

त्थामा तेजसे अत्यन्त प्रकाशित होने लगी, और अत्यन्त बलवान होगयी।

अनन्तर ये सब भूतभी डेरेमें जाते हुये अश्वत्थामाके सङ्ग इस प्रकार चले जैसे शिवके सङ्ग चलते थे।

७ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब महारथ अश्वत्थामाने इस प्रकार डेरेमें प्रवेश किया तब कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा डरसे भाग तो नहीं गये? परन्तु अश्वत्थामाको डेरेमें घुसते हुए देख पहरे दारोंने क्यों न रोका? क्या उन्हें किसीने देखा ही नहीं? हमें जान पड़ता है कि उस कर्म्मको अत्यन्त भारी जानकर ये दोनों महारथ नहीं लौटे? प्रारब्धहीसे सोमक और पाण्डवोंको मारनेपर भी ये लोग जीते बच गए और दुर्य्योधनके सङ्ग स्वर्गको न गये? प्रारब्धहीसे ये दोनों वीर पाञ्चालोंके हाथसे बच गये कहो उस युद्धमें इन्होंने क्या क्या किया?

सञ्जय बोले, हे महाराज! जिस समय महात्मा अश्वत्थामा डेरोंके भीतर घुस गए तब कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा द्वारपर खड़े रहे, उनको अत्यन्त सावधानतासे द्वारपर खड़े देख अश्वत्थामा धीरेसे बोले, आप लोग अत्यन्त सावधान होकर खड़े रहिये; हमें निश्चय है कि आप सब क्षत्रियोंको मार सक्ते हैं और यह तो थोड़ेसे बचे मनुष्य हैं, तिसमें भी सोरहे हैं, मैं डेरेमें जाकर कालके समान घूमूंगा, आप लोग ऐसा यत्न कीजिये कि कोई मनुष्य जीता हुआ न भागने पावे।

ऐसा कहकर अश्वत्थामा द्वारकी ओरसे चल दिये और एक बिना द्वारके मार्गको देखकर धीरेसे कूदकर युधिष्ठिरके भयानक डेरेमें घुसे फिर अपने जीनेकी आशा और भय छोड़कर धृष्टद्युम्नके चिन्ह देखकर धीरेसे उनके डेरेमें घुसे

हे महाराज! उस समय धृष्टद्युम्न आदि सब क्षत्रिय, हमने युद्धमें घोर कर्म्म किया है, यह विचारकर विशेषकर थकाई और घावोंसे व्याकुल होनेके कारण बेचेत सोरहे थे।

हे महाराज! अश्वत्थामाने धीरेसे धृष्टद्युम्नके डेरेके भीतर जाकर देखाकी महात्मा धृष्टद्युम्न कड़े, विस्तृत अलसीके बने बिछौनायुक्त फूलोंकी माला लगी, उत्तम सुगन्धित चूर्ण और धूपसे सुगन्धित पलंगपर विश्वास पूर्व्वक निर्भय सोरहे थे।

हे महाराज! तब अश्वत्थामाने शीघ्रतासे महापराक्रमी महारथ महायोद्धा धृष्टद्युम्नके एक लात मारी। उसी समय वीर धृष्टद्युम्न जागे और देखा कि महारथ अश्वत्थामा आगे खड़े हैं, तब उन्होंने शीघ्रतासे उठना चाहा परन्तु अश्वत्थामाने शीघ्रतासे उनके बाल पकड़कर पृथ्वीमें गिरा दिया और छातीपर पैर रख दिया, वीर धृष्टद्युम्न निद्रासे अत्यन्त व्याकुल थे इसलिये कुछ न कर सके तब अश्वत्थामाने एक पैर उनके कण्ठपर और एक पैर छातीपर रखकर पशुके समान मारना आरम्भ किया, तब पाञ्चालराजका शब्द भी बन्द होगया।

अनन्तर उन्होंने अपने नखूनोंसे अश्वत्थामाको चीरना चाहा परन्तु जब वह भी न कर सके तब कुछ तुतलाते धीरे धीरे बोले, हे गुरुपुत्र आप यह क्या करते हैं? हमें शस्त्रसे मारिये। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! तब हम आपकी कृपासे वीरलोकको जायेंगे उस समय शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न इसके सिवाय और कुछ न कह सके, वीर पाञ्चालराजपुत्र इतना ही कहकर चुप होगये, तब बलवान अश्वत्थामा बोले, अरे कुलाधम दुर्बुद्धे! जो लोग गुरुको मारते हैं उन्हें वीर लोक नहीं मिलता इसलिये तू शस्त्रसे मारने योग्य नहीं, ऐसा कहकर धृष्टद्युम्नके मर्म्मस्थानोंमें बलसे लात मारने लगे, मरते हुए वीर धृष्टद्युम्नके शब्दसे उनके पास

कोई स्त्रियां और उनकी रक्षा करनेवाले जागे उन्होंने अपने स्वामीकी ऐसी दशा देख अश्व-त्थामाको भूत जाना और भयके मारे कुछ न बोल सकीं। इसी प्रकार धृष्टद्युम्नको अश्व-त्थामाने पशुके समान मारडाला।

अनन्तर उस डेरेसे निकलकर तेजस्वी अश्वत्थामा रथपर बैठकर दूसरे डेरोंकी ओर शत्रुवोंको मारनेको दौड़े।

अश्वत्थामाके जानेके पीछे स्त्रियोंने देखा कि महाराज मरे पड़े हैं, तब वे सब हाहाकार करके और अत्यन्त शोकसे व्याकुल होकर रोने लगीं।

तब सब श्रेष्ठ क्षत्रिय जागे और कहने लगे कि यह क्या हुआ? ऐसा कहकर सब क्षत्रिय युद्धके लिये व्यूह (किला) बनाने लगे। तब द्वारपर आकर देखा कि कृपाचार्य्य खड़े हैं; तब सब स्त्री उनको देखकर डरीं, तब सब क्षत्रिय उनसे पूंछने लगे कि जिसने महाराज पाञ्चाल-राजको मारा है और जो रथपर चढ़कर भागा जाता है वह क्या कोई राक्षस है वा मनुष्य?

ऐसा कहते हुये वे सब वीर अश्वत्थामाको मारने दौड़े, परन्तु अश्वत्थामाने रुद्रास्त्रसे उन सबको मार डाला। फिर यहांसे चलकर उत्तमौजाके डेरेमें पहुंचे और उनको भी सोते ही देखा फिर उनके भी कण्ठमें एक पैर और एक पैर छातीमें धरकर उन्हें भी वैसे ही मार डाला। शत्रुनाशन उत्तमौजाको मरा हुआ सुन महाबलवान युधामन्यु गदा लेकर उठे और अश्वत्थामाको राक्षस जानकर एक गदा उसकी छातीमें मारी, तौभी अश्वत्थामाने उसके बाल पकड़कर पृथ्वीमें गिरा दिया और पशुके समान मार डाला।

हे महाराज! तब वहांसे दूसरे दूसरे महा-रथोंके डेरोंमें जाकर सबको सोते ही मार-डाला। किसीको कांपते हुये मारा और किसीको उठते हुये मारडाला।

खड्गयुद्ध जाननेवाले अश्वत्थामाने घूम घूमकर इस प्रकार शत्रुवोंको मारा जैसे कोई यज्ञमें पशुवोंको मारे।

अनन्तर सब गुल्मोंमें घुसकर केवल शस्त्र-रहित सोते और थके गुल्मपालकोंको मारा फिर हाथी और घोड़ोंके बन्धन खड्गसे काट दिये। उस समय रुधिरमें भीगे अश्वत्था-माका शरीर प्रलयकालके यमराजके समान दीखता था।

खड्गधारी अश्वत्थामा तीन गतियोंसे रुधि-रमें भीगे खड्गको घुमाते हुये महाभयानक राक्षसोंके समान दीखने लगे।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! उस समय जो क्षत्रिय डेरोंमें जागते थे, वेही अश्वत्थामाका स्वरूप देखकर चुप होकर आंख बन्दकर लेते थे, और डरके मारे मूर्च्छित होजाते थे, शत्रुनाशन अश्व-त्थामाका रूप देखकर सब लोग उसे राक्षस जानते थे, उन्हे कालके समान अपने डेरोंमें घूमते देख बचे हुये पाञ्चाल और द्रौपदीकेपुत्र जागे और अश्वत्थामाने भी उन्हें देखा तब अनेक धनुषधारी अश्वत्थामाको देखकर डरने लगे। इतनेमें द्रौपदीके पुत्रोंने सुना कि हमारे मामा धृष्टद्युम्न मारे गये, तब वे पांचों क्रोध करके डेरोंके द्वारकी ओर चले, वहां जाकर देखा कृपाचार्य्य खड़े हैं, तब उन्होंने कृपाचार्य्यके ऊपर बाण बर्षाना आरम्भ किया इतनेमें प्रभ-द्रकवंशी क्षत्रियोंमें समाचार पहुंचा तब वे लोग भी पहुंचे।

तब शिखण्डी क्रोध करके अश्वत्थामाके ऊपर घोर बाण बरषाने लगे। कृपाचार्य्य उनको देखकर सिंहके समान गर्ज्जे, उस समय उस शब्दको सुनते ही अश्वत्थामाको अपने पिताके मरनेका स्मरण आगया। तब महा-क्रोध करके तेज खड्ग लेकर उन वीरोंके मार-नेके लिये अपने रथसे कूदे और अनेक चन्द्र-माके समान प्रकाशित अनेक बिन्दयुक्त ढाल

और सोनेकी मूठवाला चमकता हुआ, खड्ग लेकर द्रौपदीके पुत्रोंकी ओर दौड़े और प्रतिविन्ध्यके कोखमें एक खड्ग मारा, उसके लगतेही वह कटकर पृथ्वीमें गिर गया, उसके गिरते ही प्रतापवान श्रुतसोमने एक प्रास अश्वत्थामाके मारा, और फिर खड्ग लेकर उनकी ओर दौड़े, परन्तु अश्वत्थामाने शीघ्रताके सहित उनका हाथ काट दिया, फिर शीघ्रता सहित उनकी पसुलीमें एक खड्ग मारा, उसके लगते ही उसका हृदय फट गया, और मरकर पृथ्वीमें गिरगया, तब नकुलपुत्र बलवान शतानीककी कुछ शस्त्र न मिला, तब टूटे हुये रथका पंहिया उठाकर अश्वत्थामाकी छातीमें वेगसे मारा, तब अश्वत्थामाने वेगसे दौड़कर उसे पृथ्वीमें गिरा दिया, और फिर उसका शिर काट लिया, तब श्रुतकर्म्माने दौड़कर एक परिघ अश्वत्थामाकी छातीमें मारा, वह परिघ अश्वत्थामाके खड्गसहित दहिने हाथमें लगा तब अश्वत्थामाने झपटकर उसके मुखमें एक खड्ग मारा, वह भी मरकर पृथ्वीमें गिर गया, तब वीर महारथ श्रुतकीर्त्ति, अश्वत्थामाकी ओर सहस्रों बाण बर्षाने लगे। परन्तु अश्वत्थामाने ढालसे उन सब बाणोंको बचाकर चमकते हुये कुण्डलों सहित श्रुतकीर्त्तिका शिर छेदन किया, तब भीष्मके मारनेवाले शिखण्डीको प्रभद्रकवंशी क्षत्रियोंमें खड़ा देख अश्वत्थामा उनकी ओर दौड़े, वीर शिखण्डीने भी अनेक प्रकारके बाण चलाये परन्तु कुछ सिद्धि न हुई तब एक बाण दोनों भौंहके बीचमें मारा, उसके लगनेसे द्रोणपुत्रको महाक्रोध हुआ, और दौड़कर शिखण्डीको मध्य शरीरसे काट दिया।

शत्रुनाशन अश्वत्थामा क्रोधमें भरकर शिखण्डीको मारकर प्रभद्रक सेनाकी ओर वेगसे दौड़े फिर राजा विराटके वंशमें जो बचे थे, जो राजा द्रुपदके बेटे, पोते और मित्र रह गये थे, उन सबको मारडाला।

फिर और और भी प्रधान प्रधान क्षत्रियोंको खड्गसे काट दिया, उस समय सब वीरोंको यह दीखता था, कि लाल बस्त्र पहिने फांसी हाथमें लिये लाल मुख और लाल नेत्रवाली काली लाल माला और लाल चन्दन धारण किये काली युद्धमें घूम रही है, और फांसीसे अनेक मनुष्य और हाथियोंको मार रही है, किसीने यह देखा कि सोते हुए शस्त्ररहित महारथोंको वही काली फांसीसे खींच रही है।

किसीको यह दीखने लगा कि यही काली और यही अश्वत्थामा युद्धके आरम्भसे हमारा नाश कर रहे हैं।

हे राजन्! उन सब पाञ्चालोंको प्रारब्धने पहले ही मारडाला था, पीछे अश्वत्थामाने उनका नाश किया, उस समय अश्वत्थामाके भयानक शब्दसे पाण्डवोंके डेरेके सब मनुष्य घबड़ा रहे थे, कोई वीर अश्वत्थामाके भयानक रूपको देखकर उसे साक्षात् यमराज समझते थे।

अनन्तर उस घोर शब्दसे पाण्डवोंके डेरोंमें सोते हुए सैकड़ों सहस्रों धनुषधारी वीर जागे तब अश्वत्थामाने भी प्रलयकालके यमराजके समान रूप धारण करके किसीका पैर, किसीका हाथ, किसीकी कोख और किसीकी जङ्घा काट दी कोई हाथी घोड़ोंकी भूटमें आकर मरगया कोई कहने लगा, यह क्या है? यह कौन है? क्यों एक बारगी इतना हल्ला हो रहा है? डेरोंमें क्या होता है?

इस प्रकार अश्वत्थामा उन वीरोंके लिये कालरूप होगये शस्त्र चलानेवालोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने कवच और शस्त्ररहित अनेक वीरोंको उठते उठते मार डाला। तबनिद्रासे व्याकुल अश्वत्थामाके शस्त्रसे पीड़ित अनेक क्षत्रिय इधर उधर डरसे भागने लगे। किसीका पैर न चला कोई भयसे व्याकुल होगया, इस प्रकार वे सब वीर हाहाकार

करने लगे। तब अश्वत्थामा फिर शीघ्रतासे घोर शब्दवाले रथपर चढ़ और बाणोंसे सहस्रों वीरोंको मारने लगे और जिसको अपनी ओर आते देखा उसको मारडाला।

कोई रथके पहियेमें आकर मर गया और किसीको अश्वत्थामाने अनेक प्रकारके बाणोंसे मार डाला, फिर थोड़ीदूर जाकर रथसे उतर और आकाशके समान चमकते हुए खड्गसे फिर वीरोंको मारने लगे।

महावीर अश्वत्थामाने उस डेरेको ऐसा व्याकुल कर दिया जैसे मतवाला हाथी तालाबको व्याकुल कर देता है।

हे राजन्! उस घोर शब्दसे सहस्रों योद्धा उठते थे, परन्तु भय और निद्रासे व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ने लगते थे, कोई वृथा बकता था और कोई हाहाकार करता था, कोई शस्त्र और वस्त्र ढूंढ़ता था, किसीके बाल खुले थे, कोई इधर उधर घूमता था और कोई थककर बैठ जाता था।

हे राजन्! हाथी, घोड़े अपने बन्धन छुड़ाकर भागते थे कोई हाथी, घोड़ा मूत्र करता था और कोई लीद करता था, कहीं योद्धा भयके मारे पृथ्वीमें सो जाते थे और हाथी घोड़े उन्हें आकर मार डालते थे।

हे राजन्! उसी समय अनेक राक्षस और भूत प्रसन्नतासे गर्ज्जने लगे और उस शब्दसे आकाश पूरित होगया तब हाथी, घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे। उनके घूमनेसे घोर धूल उठी तब महाअन्धकार छागया, तब कोई मनुष्य अपने पिता और भाईको भी न पहिचान सका, हाथी, हाथियोंको और घोड़े घोड़ोंको और दौड़े और परस्पर एक दूसरेको मारते थे, कहीं कोई हाथी, घोड़ा, मनुष्यको पीस देता था, कहीं निद्रा और अन्धकारसे व्याकुल वीर पड़े थे कहीं वीर अपने ही वीरोंको मारते थे, कहीं द्वारपाल द्वारोंको छोड़कर इधर उधर भागते थे, कहीं गुल्ममें सोते वीर गुल्म छोड़कर इधर उधर भागते थे, कहीं वीर भयसे व्याकुल होकर बाप और बेटोंको पुकारते थे, कहीं अपने बान्धवोंको छोड़कर योद्धा भागते थे, कहीं अपना अपना गोत्रका नाम लेकर अपना परिचय देते थे, कोई हाहाकार करके पृथ्वीमें गिर जाता था, जो कोई लड़नेको उठता था, उसको अश्वत्थामा मार डालता था, जो क्षत्रिय भयसे व्याकुल होकर अपना जीव लेकर भागता था, उसीको द्वारपर कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा मार डालते थे।

शस्त्ररहित और कवचरहित हाथ जोड़ते हुये और कांपते हुये क्षत्रियोंको भी उन्होंने मार डाला, कोई जीता वीर डेरोंसे बाहर न निकल सका।

अनन्तर दुर्बुद्धि कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माने और अश्वत्थामाकी प्रसन्नताके लिये डेरोंमें तीनों ओर आग लगाय दई तब वीर अश्वत्थामा खड्ग लेकर शीघ्रतासे उस चान्दनेमें घूमने लगे। तब सहस्रों वीरोंको खड्गसे इस प्रकार मारडाला जैसे कोई मनुष्य तिलके वृक्ष उखाड़कर फेंक देता है।

तब हाथी गर्ज्जने लगे, मरे हुये मनुष्योंसे पृथ्वी भर गई किसी वीरका हाथ कट गया, किसीका पैर कट गया, किसीकी पीठ फट गई, किसीका मुंह कट गया इस प्रकार महात्मा अश्वत्थामाने सहस्रों वीरोंको गिरा दिया, वह भयानक अन्धकार रात्रि और भी भयानक दीखने लगी कहीं न मारने योग्य शरीरमें शस्त्रलग गया वह रात्रि भागते हुये हाथी, घोड़े और मनुष्योंसे भयानक दीखने लगी, और कोई भाईको, कोई बापको, और कोई बेटोंको पुकारने लगे और कोई कहने लगा कि क्रोध भरे धृतराष्ट्रके पुत्रोंने हमारे लिये जो नहीं किया था, सो आज सोते समय भयानक राक्षसोंने किया, हाय पांचो पाण्ड-

वोंमेंसे एक भी यहां नहीं है, इसी लिये राक्षसोंने हमारा नाश कर दिया, जिनकी रक्षा करनेवाले साक्षात् श्रीकृष्ण हैं, उन्हें राक्षस, गन्धर्व्व और यक्ष भी नहीं जीत सकते।

पाण्डव ब्राह्मणोंके भक्त, सत्यवादी, जितेन्द्रिय और सब मनुष्योंपर कृपा करनेवाले हैं, अर्ज्जुन सोते, मतवाले, शस्त्ररहित, हाथजोड़ते, भागते और खुलेहुये बालवालोंको नहीं मारते। परन्तु इन पापी राक्षसोंने हमारा सर्व्वनाश कर दिया, इस प्रकार कहते हुए अनेक वीर पृथ्वीमें गिर गये, कोई धीरेसे बोलने लगा और कोई तड़फने लगा, तब क्षणमात्रमें यह शब्द भी बन्द होगया और रुधिरसे भीगनेके कारण पृथ्वीकी धूल भी बैठ गई, फिर अश्वत्थामाने कुछ उद्योग करते हुए वीरोंको देखा, तब क्रोध करके उनको भी इस प्रकार मारडाला जैसे प्रलयकालमें शिव प्रजाका नाश करते हैं। कहीं लपटे हुए सोते वीरोंको मारडाला। कहीं भागतोंको मारा कहीं पड़े हुए वीरोंको मारा, कहीं युद्ध करते हुवोंको मारा, कहीं वीर अग्निमें जलने लगे और कहीं परस्पर लड़कर मर गये।

हे महाराज! जिस समय अश्वत्थामाने पाण्डवोंके डेरोंमें प्रवेश किया था, उस समय रात्रिके पहिले दो पहर बीत चुके थे, अर्थात् आधीरातको डेरोंमें गये थे, वह रात्री हाथी, घोड़े और मनुष्योंका नाश करनेवाली थी और मांस खानेवाले भूत और जन्तुओंको प्रसन्नता बढ़ाती थी, तब अनेक प्रकारके राक्षस घूमने लगे, वे मनुष्योंके मांसखाने और रुधिर पीने लगे, कोई भयानक धूएले रङ्गवाला, किसीके बड़े बड़े दांत, कोई धूलसे भरा, किसीके बड़ी बड़ी जटा, किसीका बड़ा मुंह, किसीका बड़ा पेट, किसीके पैरके पञ्जे पीछेको थे, कोई घण्टा बजा रहा था, किसीका नीलाकण्ठ था, कोई महाभयानक था, ये सब भयानक निर्द्दय अनेक रूपधारी राक्षस पुत्र और स्त्रियोंके सहित वहां आए, फिर मनुष्योंका रुधिर पीकर नाचने लगे और कहने लगे कि यह रुधिर बड़ा स्वादमें श्रेष्ठ और पीने योग्य है, मांस खाने वाले जन्तु भी प्रसन्नता पूर्व्वक रुधिर पीने लगे। चरबी, मांस और वसा खाने लगे। चरबी खानेसे राक्षसोंके पेट फूल गये, एक प्रकारके मुखवाले भयानक सहस्रों राक्षस मनुष्योंको घोर रूप बनाकर और घोर कर्म्म करके डराते थे, उस घोर युद्धमें मांस खाकर और रुधिर पीकर बहुत प्रसन्न हुये।

तब अश्वत्थामाने देखा कि आकाश लाल होगया उस समय अश्वत्थामाके खड्गकी मूठि रुधिरसे भीग गई थी और खड्ग हाथमें फंस गया था, मानो एक ही होगया था, तब अश्वत्थामाने भी डेरोंसे निकलनेकी इच्छा करी।

और उस घोर कर्म्मको करके प्रसन्नता पूर्व्वक ऐसे खड़े हुए जैसे प्रलयकालमें अग्नि। उन्होंने इस कर्म्मको अपनी प्रतिज्ञानुसार ही समाप्त किया, फिर अपने पिताके मरनेका शोक भी छोड़ दिया।

पुरुषसिंह अश्वत्थामा सोते शब्द रहित डेरोंमें घुसे थे और सबको मारकर शब्दरहित डेरोंमेंसे निकले फिर डेरोंसे बाहर आकर कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मासे मिले और प्रसन्न होकर उनसे सब समाचार कहा और वह भी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, कि अच्छा हुआ फिर ताड़ी बजाने लगे।

हे महाराज! इस प्रकार यह भयानक रात्री सोमकोंके लिये आई थी, उसमें सोते हुए उन्मत्त सहस्रों सोमकोंका नाश हुआ, देखो इन ही सोमकोंने हमारी सेनाका नाश किया था और यही आज इस प्रकार मारे गये, कालकी गतिको कोई नहीं जान सक्ता यह बड़ी ही कठिन है।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! महारथ अश्वत्थामाके यह इच्छा तो थी, कि हमारे पुत्रकी विजय होय तब उन्होंने पहिले यह कर्म्म क्यों नहीं किया था?

दुर्य्योधनके मरनेपर महात्मा द्रोणपुत्रने ऐसा कुकर्म्म क्यों किया सो तुम हमसे कहो?

सञ्जय बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ! पाण्डवोंके और कृष्णके भयसे अश्वत्थामाने ऐसा नहीं किया था, आज वे पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकी सेनामें नहीं थे, इसही लिये अश्वत्थामाने इनको मार डाला। यदि वे लोग होते तो साक्षात् इन्द्र भी उन लोगोंको नहीं मार सक्ता था।

हे महाराज! इस प्रकार यह सोती हुई पाण्डव सेनाका नाश हुआ, तब तीनों महारथ कहने लगे कि बहुत अच्छा हुआ, तब अश्वत्थामा अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले, कि सब पाञ्चाल द्रौपदीके पुत्र, सोमक और बचे हुये मत्स्यवंशी क्षत्रिय मारे गये, अब हम लोग कृतकृत्य होगए, अब राजाके पास चलना चाहिये कदाचित् वे जीते होयं तो उनसे यह सब समाचार कहैं।

८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ये तीनों बीर पाञ्चाल और द्रौपदीके पुत्रोंको मारकर रथोंपर चढ़कर वहां पहुंचे, जहां राजा दुर्य्योधन पड़े थे, उन्होंने जाकर देखा कि महाराज मरा ही चाहते हैं। तब वे सब रथोंसे उतरे और राजाके पास गये, उस समय राजा तड़फ रहे थे, उनके मुंहसे रुधिर बहता था, चारों ओर अनेक स्यार और भेड़िये आदि मांस खानेवाले जन्तु खड़े थे, और पीड़ासे व्याकुल राजा दुर्य्योधन कठिनतासे उनको हटा रहे थे, तब ये तीनों बीर रुधिर भीगे राजाके पास गये और शोकसे व्याकुल होकर खड़े होगए।

उस समय इन तीनों रुधिर भीगे बीरोंके बीचमें राजाकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे तीन अग्नियोंके बीचमें प्रधान अग्नि की।

महाराजको अनुचित रीतिसे पड़े देख तीनों बीर सांस लेकर रोने लगे। तब कृपाचार्य्य उनके पास गये और उनके मुखका रुधिर अपने हाथसे पोंछकर रोकर कहने लगे। प्रारब्ध बहुत बड़ी बस्तु है देखो ग्यारह अक्षौहिणीके स्वामी राजा दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें मूर्छित होकर सोते हैं; देखो सोनेके समान रङ्गवाले गदाके प्यारे महाराजको सोनेसे भूषित गदा पृथ्वीमें पड़ी है, यह गदा इस महात्मा यशस्वी बीरको किसी युद्धमें नहीं छोड़ती थी अब स्वर्ग जाते समय भी इनको नहीं छोड़ती। देखो यह सोनेके भूषणवाली गदा इन महात्मा बीरके संग प्यारी स्त्रीके समान सोती है। हाय! यही शत्रुनाशन महराज पहिले राजोंके आगे चलते थे, आज पृथ्वीमें पड़े हुये धूल खाते हैं। समय बड़ा कठिन है। हाय! जिस कुरुराजके हाथसे मारे हुए सहस्रों शत्रु पृथ्वीमें सोते थे, वही ये आज शत्रुओंके हाथसे लड़कर पृथ्वीमें सोते हैं, जिनको देखते ही सैकड़ों राजा डरसे नीचे हो जाते थे, वही महाराज आज मांस खानेवाले, जन्तुओंके बीचमें बीरके योग्य शय्यापर सोरहे हैं, जिन महाराजके पास हर समय सहस्रों ब्राह्मण धनके लिये बैठे रहते थे, इन्हींके पास आज मांस खानेके लिये स्यार खड़े हैं।

सञ्जय बोले, कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधनको इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े देख अश्वत्थामा ऊंचे स्वरसे रोने लगे और कहने लगे।

हे राजशार्दूल! आपको सब जगत्के क्षत्रिय धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ कहा करते थे, आप कुबेरके समान योद्धा साक्षात् बलरामके शिष्य हैं।

हे पापरहित! भीमसेनने अनन्तर पाकर आपको कैसे मारडाला?

हे महाराज! महापराक्रमी और अत्यन्त चतुर आपको पापी भीमसेनके हाथसे मरा हुआ हम देखते हैं, समयकी गति बहुत ही कठिन, पापी, चुद्र, मूर्ख भीमसेनने धर्म्म जाननेवाले, आपको मारडाला। इससे हम जानते है, कि समयकी गति बड़ी कठिन है, धर्म्मसे बुलाकर और धर्म्म युद्ध आरम्भ करके भीमसेनने आपकी जङ्घा तोड़ दी, इससे अधिक अधर्म्म और क्या होगा? जिसने अधर्म्मसे मरे हुये आपके शिरमें पैर रखते भीमसेनको देखा उस चुद्र, कृष्ण और युधिष्ठिरको धिक्कार है, जबतक पृथ्वीमें मनुष्य रहेंगे तबतक सब वीर भीमसेनकी अवश्य निन्दा करेंगे।

हे महाराज! यदुकुलश्रेष्ठ वीर बलराम सदा कहा करते थे, कि गदा युद्धमें दुर्य्योधनके समान कोई नहीं है, बलराम सब सभाओंमें आपकी प्रशंसा किया करते थे, कि राजा दुर्य्योधन गदायुद्धमें हमारे शिष्य हैं, हे महाराज! महामुनियोंने जो चत्रियोंके लिये उत्तम गति कही है, युद्धमें मरनेसे आपको वही गति प्राप्त हुई।

हे पुरुषसिंह दुर्य्योधन! हम आपका कुछ शोच नहीं करते परन्तु हमें पुत्ररहित गान्धारी, और आपके पिताहीका शोच है, वे दोनों बूढ़े शोकसे व्याकुल होकर भिचुकोंके समान पृथ्वीमें घूमेंगे, दुर्बुद्धी कृष्ण और अर्ज्जुनको धिक्कार है, जो धर्म्मज्ञ अभिमान करनेपर भी आपकी यह दशा देखते रहे निर्लज्ज पाण्डव क्या यह कह सकेंगे, कि हमने दुर्य्योधनको धर्म्मसे मारा?

हे गान्धारीपुत्र! आपको धन्य है, जो शत्रुवोंके आगे धर्म्मयुद्धमें मारे गये, परन्तु पुत्ररहित गान्धारी और अन्धेराजाकी क्या गति होगी हमें यही शोक है, महारथ कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, और हमें धिक्कार है; जो आपके सङ्ग स्वर्गको न चले, आप हमें सब प्रकारका सुख देते थे, रचा करते थे, और प्रजाका कल्याण करते थे, सो हम आपके सङ्ग न चल सके इसलिये हम नीच मनुष्योंको धिक्कार है, हमने, हमारे पिताने और कृपाचार्य्यने आपकी कृपासे रत्न भरे घर पाये, आपकी प्रसन्नतासे हम लोगोंने मित्र और बान्धवोंके सहित दचिणाओंके सहित भारी भारी यज्ञ करीं अब हम पापी इस जगत्में कैसे जियेंगे।

अब हम इस जगत्में रहकर दरिद्र होकर आपके धर्म्मका स्मरण करेंगे वह कौनसा कर्म्म आपका है, जिसका स्मरण हम नहीं करेंगे।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! अब हमको जगत्में दुःख ही भोगना शेष है, क्यों कि अब आपके बिना हमको सुख और शान्ति कहां? हे महाराज आप स्वर्गमें जाकर सब महारथियोंसे मिलकर हमारी ओरसे क्रमके अनुसार सबकी पूजा करना फिर सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ गुरुजीको प्रणाम करके कहना, कि मैंने धृष्टद्युम्नको मारडाला। फिर महारथ राजा बाह्लीक, सिन्धुराज जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवादि स्वर्गमें बैठे राजोंसे मिलकर कुशल प्रश्न करना।

सञ्जय बोले, जांघ टूटे मूर्च्छित राजासे ऐसा कहकर फिर उनके सुखकी ओर देखकर अश्वत्थामा बोले, हे महाराज दुर्य्योधन! अभी आप जीते हो तो कानको सुख देनेवाले, मेरे बचन सुनिये, अब पाण्डवोंकी सब सेनामें केवल सात मनुष्य शेष हैं और आपकी ओरसे हम तीन बचे हैं, पाण्डवोंकी ओर पांचो पाण्डव छठे कृष्ण और सातवें सात्यकी, आपकी ओर मैं कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्य।

द्रौपदीके पांचोपुत्र, धृष्टद्युम्नके पुत्र, पाञ्चाल और मत्स्यवंशी सब बचे हुए चत्री मारे गये; मैंने आपके वैरका बदला ले लिया, पाण्डवोंका वंश नाश होगया। मैंने रातको डेरोंमें घुसकर वाहनों सहित सब वीरोंको मारडाला।

पृथ्वीनाथ! मैंने डेरोंमें घुसकर पापी सोते हुये धृष्टद्युम्नको पशुके समान मारा।

राजा दुर्य्योधन अश्वत्थामाके प्यारे वचन सुनकर चैतन्य होकर बोले, जो कर्म्म भीष्मने तुम्हारे पिता द्रोणाचार्य्यने और कर्णने नहीं किया था सो कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माके सहित तुमने मेरे लिये किया, पापी चुद्र पाण्डवोंका सेनापति शिखण्डीके सहित मारा गया यह सुन कर मैं अपनेको इन्द्रके समान मानता हूं आप लोगोंका कल्याण हो अब हम फिर आप लोगोंसे स्वर्गमें मिलेंगे।

हे राजन्! ऐसा कहकर महावीर महामनस्वी दुर्य्योधन शान्त होगये और मित्रोंका शोक नाश करके प्राण पवित्र स्वर्गको चला गया और शरीर यहां पड़ा रहा।

हे महाराज! इस प्रकार आपके पुत्र दुर्य्योधन शत्रुओंसे युद्ध करके मारे गये, ये तीनों वीर भी मरे हुए राजाका स्पर्श करके रोते हुये अपने अपने रथोंपर बैठे और पीछेको देखते हुये शोकसे व्याकुल होकर नगरकी ओर चले उसी समय सूर्य्य भी उदय होने लगा।

हे महाराज! आपकी बुरी सम्मतिसे यह कुरुकुलका नाश हुआ। हे महाराज! जब आपके पुत्र स्वर्गको चले गये, तब मुझे भी व्यासदेवजीकी दी हुई दिव्य दृष्टि नष्ट होगई।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा धृतराष्ट्र इस प्रकार अपने पुत्रका मरना सुनकर शोकसे व्याकुल होगये और चिन्ता करने लगे।

९ अध्याय समाप्त।

ऐषीकपर्व्व।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब रात्रि बीत गई तब धृष्टद्युम्नका सारथी धर्म्मराजके पास आकर कहने लगा।

सारथी बोला, हे महाराज! द्रुपदके पौत्रोंके सहित आपके पांचो पुत्र मारे गये, वे सुखसे विश्वास पूर्व्वक डेरोंमें सो रहे थे, उसी समय कृतवर्म्मा, पापी कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्थामाने सबको मारडाला।

हे महाराज! आपकी हाथी, घोड़ा और मनुष्योंसे भरी सेनामें केवल एक मैं ही बचा हूं उन्होंने प्रास, शक्ति और परश्वधोंसे हमारी सेनाका नाश कर दिया, उस समय आपकी सेनामें ऐसा शब्द होता था, जैसे कुल्हाडीसे कटते हुए बनमें।

हे धर्म्मात्मन्! मैं किसी प्रकार कृतवर्म्मासे बचकर भाग आया हूं, उस सब सेनामेंसे केवल मैं ही एकला बचा हूं।

सारथीके ऐसे वचन सुन महापराक्रमी महाराज युधिष्ठिर पुत्रशोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिरपड़े, तब उनको गिरते देख सात्यकी, कृष्ण, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेव दौडे और उन्हे पकड़ लिया, तब कुन्तीपुत्र थोड़े समयमें चैतन्य हो; शोकसे व्याकुल होकर ऐसे दीनवचन बोले।

हमने पहले शत्रुओंको जीत लिया था, और अब फिर हार गये. दिव्य दृष्टिवाले महात्मा भी समय और कार्य्योंकी गतिको नहीं जान सक्ते, देखो कोई हारकर हारता है, और हम जीतकर हार गये; भाई, पिता, बन्धु, मित्र, पुत्र और पोतोंको मारकर भी हम लोग पीछे हार गये, अर्थोंको विचारना और देखना भी अनर्थ ही है, हमारी यह विजय भी पराजयके समान होगई जिस विजयको पाकर दुर्बुद्धि राजाको शोच करना पड़े, उसे वुद्धिमान् विजय क्यों कहेंगे, वह तो पराजयसे भी अधिक दुःख दायक है, जिन मित्रोंके लिये हम पाप और विजय करनेकी इच्छा करते थे, वेही हमारे बिजयी मित्र आज मारे गये।

जिन्होंने बाणरूपी फण, खड्गरूपी जिह्वा, धनुषरूपी फैलेहुए मुख, धनुष टङ्काररूपी फुङ्कार

वाले पुरुष वीर, कर्णरूपी क्रोधी विषैले सांपके विषको शान्त किया था, वही युद्धसे न भागनेवाले हमारे मित्र आज हमारी भूलसे मारे गये।

जो रथ भौर, बाणतरङ्ग, घोड़ेरत्न, शक्ति और खड्ग मछली, ध्वजा नाका, धनुष भौर, बाणफेन, युद्ध चन्द्रमा और धनुषकी टङ्काररूपी शब्दयुक्त, द्रोणाचार्य्यरूपी समुद्रको शस्त्ररूपी नावपर चढ़कर तैर गये थे, वेही राजपुत्र आज हमारी भूलसे मारे गए।

देखो जगत्में भूलके समान और कोई बुरी बात नहीं है, भूले हुये मनुष्यके सब अभिप्राय नष्ट होजाते हैं, और अनेक अनर्थ उसका घेर लेते हैं।

जिन्होंने ऊंचो ध्वजारूपी, धूआं बाण ज्वाला, क्रोध वायु धनुष पहिए और तल शब्द-रूपी शब्द और अनेक प्रकारके शस्त्र, आहुत युक्त भीष्मरूपी सेनामें जलती हुई अग्निका सहा था, वही राजपुत्र आज भूलसे मारे गये।

प्रमत्त मनुष्य विद्या, तप, लक्ष्मी और यशको नहीं पा सक्ता देखो शत्रुओंको मारकर इन्द्र सुखसे राज करते हैं।

देखो आज ये इन्द्रके समान पराक्रमी राज-पुत्र और राजोंके पोते भूलसे सामान्य मनुष्योंके समान इस प्रकार मारे गये, जैसे धनधान्य भरे बनिये समुद्रको पार होकर छोटी नदीमें तरते हुए डब जांय हमें यह निश्चय है, कि हमारे सब सम्बन्धी सोते हुये मारे गये, अब हमें कुछ शोच नहीं है, वे सब निश्चय ही स्वर्गको चले गए हमें केवल पतिव्रता द्रौपदीहीका शोक है, कि वह अपने भाई, पुत्र और बूढ़े पिताको मरा हुआ, सुन किस दशाको प्राप्त होगी?

निश्चय ही वह शोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर पड़ेगी आज वह सुख भोगने योग्य द्रौपदी इस शोकसमुद्रके पार कैसे जायगी? उसकी क्या दशा होगी अपने भाई पुत्रोंको मरा हुआ सुन उसकी ऐसी दशा होजायगी जैसे आगमें जलते हुये मनुष्यकी।

कुरुकुलके स्वामी महाराज युधिष्ठिर इस प्रकार रोते हुए व्याकुल होकर नकुलसे बोले, तुम जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्रीको उसके पिता और भाइयोंकी स्त्रियोंके समेत तथा और भी उनके मातृपक्षकी स्त्रियोंको अपने सङ्ग लेकर आवो।

माद्रीपुत्र नकुलने शरीरधारी धर्म्मके समान महाराजके बचन ग्रहण किये और रथपर चढ़कर शीघ्रता सहित पाञ्चाल राजपुत्री द्रौपदी और पाञ्चालदेशीय स्त्रियोंके पास चले।

महाराज युधिष्ठिर भी नकुलको उधर भेजकर आप शोकसे व्याकुल होकर रोते हुये अपने मित्र और भाइयोंके सहित उस मांस खानेवाले जन्तुओंसे भरी युद्ध भूमिकी ओर चले।

वहां जाकर उस भयानक शोकसे भरी हुई भूमिमें महाराज धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ कुरुवंशि-योंमें आगे चलनेवाले युधिष्ठिरने अपने पुत्र, सम्बन्धी और मित्रोंको भूमिमें सोते, रुधिरसे भीगे, शरीर और शिर कटे पृथ्वीमें सोते हुए देखा। उनको देखकर महाराज एकबार ऊंचे स्वरसे रोये और फिर सब मित्रोंके सहित मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर गये।

१० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! अपने बेटे, पोते और सम्बन्धियोंको मरा-हुआ देखकर महाराज अत्यन्त शोकसे व्याकुल होगये; जब महात्मा युधिष्ठिर बेटे, पोते, भाई और सम्बन्धियोंके शोकसे व्याकुल होकर आंखोंमें आंसू भरकर कांपने लगे तब सब रोते हुये मित्र उन्हें समझाने लगे।

उसी समय प्रातःकालके सूर्य्यके समान चमकते हुये, रथपर बैठे हुए रोती हुई द्रौप-

दोके सहित नकुल आपहुंचे। द्रौपदी पहिले ही उपप्लव (छावनी) को चली गई थीं, वहीं अपने पुत्रोंके मरनेका समाचार सुना और व्याकुल होगई। द्रौपदी महाराजके पास आकर और शोकसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़ी जैसे केलेका वृक्ष आंधीसे टूट-कर गिर पड़ता है, उस समय फूले हुये कमलके समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख शोकसे व्याकुल होनेके कारण ऐसा होगया जैसा राहुके ग्रहण करनेसे चन्द्रमा।

द्रौपदीको पृथ्वीमें पड़ी देख महापराक्रमी भीमसेनने अपने हाथोंमें उठा लिया और समझाने लगे, तब रोती हुई द्रौपदी महाराजसे बोली, हे पृथ्वीनाथ! आज प्रारब्धहीसे आप इस सब पृथ्वीके राजा हुए; अब क्षत्रियोंके धर्म्मके पालनेवाले अपने बेटोंको यमराजको भेंट देकर आप कुशलसे तो हैं? कहिये इस सब पृथ्वीका राज्य पाकर अब आप मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्युका कभी स्मरण तो न कीजिएगा ना? कहिए क्षत्रियोंके धर्म्ममें रहनेवाले वीर पुत्रोंकी मृत्यु सुनकर आप मेरे सङ्ग विहार तो कीजिएगा ना? और कभी उन पुत्रोंकातो स्मरण नहीं कीजिएगा? मैं यह बात सुन कर, कि पापी अश्वत्थामाने मेरे पुत्रोंको सोते हुए मारडाला शोकसे व्याकुल होगई हूं, शोक मेरे शरीरको इस प्रकार तपाता है, जैसे पास रक्खी हुई अग्नि वस्तुको।

हे राजन्! यदि आप अपने पराक्रमसे उस पापी अश्वत्थामाको युद्धमें नहीं मारियेगा तो मैं अन्न नहीं खाऊंगी और यहीं मर जाऊंगी। हे पाण्डवों! तुम भी सब हमारी इस प्रतिज्ञाको सुनो यदि अश्वत्थमा इस पापके फलको नहीं पावेगा तो मैं यहीं मर जाऊंगी।

ऐसा कहकर यशस्विनी द्रौपदी धर्म्मराज युधिष्ठिरके पास बैठ गई; धर्म्मात्मा राजऋषी युधिष्ठिरने अपनी प्यारी पटरानीकी व्रतमें बैठे देख उस सुन्दरीसे ऐसे वचन कहे, हे धर्म्म जाननेवाली सुन्दरी! तुम क्षत्रियोंके धर्म्मका स्मरण करो तुम्हारे पुत्र और भाई धर्म्मयुद्धसे मारे गये हैं, इसलिये कुछ शोक मत करो; हे कल्याणी, हे सुन्दरी! अश्वत्थामा इस समय किसी वन पर्व्वतमें छिप रहे हैं, उनको हम कैसे मार सकेंगे?

द्रौपदी बोली, हे महाराज! तुमने सुना है कि अश्वत्थमाके शिरमें उत्पन्न हुई मणि है, उस पापीको मारकर वही छीन लेनी चाहिये। मैं उसको आपके शिरमें स्थापन करके जिऊंगी यही मेरी इच्छा है, इसलिये आप ऐसा ही कीजिये।

ऐसा कहकर द्रौपदी भीमसेनके पास गई और कहने लगी, हे भीम! आप क्षत्रियोंके धर्म्मका स्मरण करके हमें इस दुःखसे बचाइये उस पापी अश्वत्थामाको इस प्रकार जीतिये, जैसे इन्द्रने सम्बरको जीता था, जगत्में तुम्हारे समान कोई मनुष्य बलवान् नहीं है, उस लाक्षाभवनमें आपने मरते हुए पाण्डवोंको जैसे बचाया था सो समाचार जगत्में प्रसिद्ध हैं, जब हिड़म्ब राक्षससे पाण्डवोंको आपत्ति हुई थी तब भी आपहीने इनकी रक्षा की थी, जिस समय बिराट नगरमें कीचकने मुझे अत्यन्त दुःख दिया था, तब भी आपने मेरी इस प्रकार रक्षा करी थी जैसे इन्द्र इन्द्राणीकी रक्षा करते हैं।

हे कुन्तीपुत्र! आपने जैसे ये सब कर्म्म करे हैं ऐसे ही अश्वत्थामाको मारकर सुखी हूजिये।

द्रौपदीका अनेक प्रकारका रोना सुनकर महा बलवान् कुन्ती पुत्र भीमसेन क्षमा न कर सके और सानेके रथपर बैठ धनुष पर रोदा चढ़ाकर बाण चढ़ाने लगे। उसी समय नकुल अपने स्थानसे उठकर भीमसेनका रथ हांकने लगे। तब भीमसेनने अपने धनुषपर टङ्कार दिया और नकुलने अपने घोड़ोंको वायु

के समान वेगसे हांका, तब नकुलके हांकनेसे वे शीघ्र चलनेवाले घोड़े अपने डेरोंसे निकलकर अश्वत्थामाके रथको लौकापर चले।

११ अध्याय समाप्त।

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब महापराक्रमी भीमसेन अश्वत्थामाको मारने चले गये, तब यदुकुल श्रेष्ठ, कमलनेत्र श्रीकृष्ण कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरसे बोले, हे पाण्डव! ये आपके भाई भीमसेन पुत्रशोकसे व्याकुल होकर एकले ही अश्वत्थामाको मारने चले जाते हैं। हे भरतकुलश्रेष्ठ! भीमसेन आपको सब भाइयोंमें प्यारे हैं, आप उनको इस आपत्तिसे उबारनेके लिये क्यों नहीं दौड़ते? महात्मा शत्रुनाशन सब धनुष धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने जो सब पृथ्वीको भस्म करनेमें समर्थ अर्ज्जुनको प्रसन्न होकर जो शस्त्र दिया था वही एक दिन क्रोधी अश्वत्थामाने अपने पितासे मांगा। महात्मा धर्म्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने विचारा कि यह बड़ा चञ्चल और दुष्ट है, तब भी द्रोणाचार्य्यने अश्वत्थामाको वह शस्त्र सिखा दिया परन्तु अधिक प्रसन्न होकर नहीं दिया और फिर कहा कि, हे पुत्र! अत्यन्त आपत्ति पड़नेपर भी तुम यह शस्त्र किसी मनुष्यपर न छोड़ना।

गुरुजीने अपने पुत्रसे ऐसे वचन कहकर फिर कहा कि तुम इस जगत्में महात्माओंके मार्गपर नहीं चल सकोगे।

पापी दुष्टात्मा अश्वत्थामा अपने पिताके कठोर बचन सुनकर सब सुखोंसे निराश हो गये और शोकसे व्याकुल होकर जगत्में घूमने लगे। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! उन दिनों आप बनमें थे तब ही घूमते घूमते अश्वत्थामा द्वारिकामें पहुंचे, वहां यादवोंने उनका बहुत ही स्वागत किया तब वे वहां कुछ दिनतक ठहर गये, एक दिन हम और वे दोनों समुद्रके तटपर घूम रहे थे, तब उन्होंने हंसकर हमसे कहा कि, हे कृष्ण! हमारे पिताने जो घोर तप करके देवता और दानवोंसे पूजित ब्रह्मशिर नामक अस्त्र अगस्त मुनिसे पाया है, मैं भी उसे आजकल अपने पिताके समान ही जानताहूं, इसलिये आप हमसे उस शस्त्रको सीखिये और युद्धमें शत्रुवोंके नाश करनेवाला अपना दिव्य चक्र हमको दे दीजिये।

हे राजन्! मैंने अश्वत्थामाको हाथ जोड़ते अनेक यत्न करके चक्र मांगतेदेख ऐसे बचन कहे।

जगत्में देवता, दानव, गन्धर्व्व, मनुष्य, पत्ती और सांप कोई ऐसा नहीं है, जो हमारे बलके सौ भागके एक भागके समान भी हो, जो हो यह धनुष, यह चक्र, यह शक्ती और यह गदा रक्खी है, जो शस्त्र चाहो सो ले लो हम देते हैं, तुम जिस शस्त्रको उठा सको और युद्धमें चला सको उसे ही ले लो और उसके बदलेमें जो शस्त्र तुम देना चाहते हो सो हम नहीं लेते।

अश्वत्थामाने सहस्र धारवाले बीचमें बज्रसे बने लोहेके चक्रको हमसे मांगा, तब हमने भी कहा कि लो, तब वह प्रसन्न होकर उठे और बांये हाथसे उठाने लगे। परन्तु जरासा भी स्थानसे न उठाने सके तब दहिना हाथ लगाकर उठाने लगे, परन्तु सब बल और सब पराक्रम करके हार गए परन्तु चक्र न उठा। जब वे उसको उठा वा हिला न सके तब बहुत ही मलीन मन होकर थककर बैठ गये।

तब मैंने उनको निवृत्त देखकर घबड़ाये हुये अश्वत्थामासे कहा, जो जगत्में सब धनुषधारियोंमें प्रमाण गिने जाते हैं, जो गाण्डीव धनुष, सफेद घोड़े और हनुमानकी ध्वजा सहित रथपर बैठते हैं, जिन्होंने साक्षात् पार्व्वती नाथ शिवको द्वन्द्वयुद्धमें प्रसन्न किया है, जिसके समान इस जगत्में मुझे कोई मान्य और प्यारा नहीं है जिसको मैं अपनी स्त्री और पुत्र दे सक्ता हूं उस मित्र और धीर कर्म्म करनेवाले

अर्ज्जुनने भी मुझसे आजतक ऐसे वचन नहीं कहे जैसे आज आपने कहे, जिसके लिये हमने बारह बर्षतक हिमाचल पर्व्वतपर घोर तप किया था, जो हमारे समान धर्म्म करनेवाली रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुआ है उस सनत्कुमारके समान तेजस्वी हमारे पुत्र प्रद्युम्नने भी आजतक ऐसे वचन नहीं कहे थे, जैसे तुमने आज कहे। महाबलवान् बलदेव, गदा और साम्ब आदि वृष्णी और अन्धकवंशी द्वारिका वासी किसी चत्रियने ऐसे वचन नहीं कहे जैसे आज तुमने कहे। तुम भरतकुलके गुरु द्रोणाचार्य्यके पुत्र हो यही जानकर सब यादवोंने आपका सत्कार किया। हे महारथ ! इस चक्रको आप लेकर कौनसे महारथसे युद्ध कीजिएगा सो कहो हमारे ऐसे वचन सुन अश्वत्थामाने हमसे कहा।

हे कृष्ण! हम यह चक्र लेकर आपकी गुरु पूजा करके आपहीसे युद्ध करते हम आपसे सत्य कहते हैं कि इसीलिये हमने आपसे ये देवता और दानवोंसे पूजित चक्र मांगा था और यह भी इच्छा थी कि हमें कोई न जीत सके परन्तु यह दुर्लभ काम हमारा सिद्ध न हुआ इसलिये हम प्रसन्नता पूर्व्वक आपसे जानेकी आज्ञा मांगते हैं, आप सब भयानकोंसे भी भयानक हैं, इसी लिये इस भयानक चक्रको कोई नहीं ले सक्ता।

ऐसा कहकर हमारे दिये हुए खच्चर, घोड़े धन और अनेक प्रकारके रत्न लेकर अश्वत्थामा अपने घरको चले गये।

वही अश्वत्थामा अत्यन्त पापी चञ्चल और दुष्ट है, और ब्रह्मशिर अस्त्रको जानता भी है, इसलिये भीमसेनकी इससे रक्षा करनी चाहिए।

१२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय ! यदुकुल श्रेष्ठ श्रीकृष्ण सब शस्त्रोंसे भरे काम्बोजदेशमेंसे उत्पन्न हुए सोनेकी माला पहिने घोड़ोंसे युक्त रथमें बैठे उस सूर्य्यके समान चमकते हुए रथके धुरके दहिनी ओर शैब्य, बाईं ओर सुग्रीव और आगेकी ओर मेघपुष्प और बलाहक नामक घोड़े जोड़े गए। ऊपरसे विश्वकर्म्माकी बनाई रत्न जड़ी सोनेकी ऊंचे दण्डेवाली प्रकाशमान गरुड़युक्त ध्वजा, फहराने लगी। उसीमें सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ कृष्णके दोनों ओर अर्ज्जुन और युधिष्ठिर इस प्रकार बैठकर शोभित हुए जैसे इन्द्रको दोनों ओर बैठे अश्विनीकुमार, तब कृष्णने उस लोक पूजित घोड़ोंके रथको कोड़ेसे हांका तब घोड़े उस रथ, युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको लेकर शीघ्रतासे दौड़े।

जिस समय श्रीकृष्णने उन शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंको हांका तब ऐसा शब्द होने लगा, जैसे आकाशसे पक्षी गिरते हैं। तब चणमात्रमें ये तीनों बीर महाधनुषधारी भीमसेनके पास पहुंचे यद्यपि इन सब महारथोंने भीमसेनको बहुत रोका तो भी क्रोधी भीमसेन शत्रुके मारनेसे निवृत्त न हुए उन सब महाधनुषधारी बीरोंके सहित भीमसेन शीघ्र घोड़ोंको दौड़ाते हुए गङ्गाके तीरको चले गये, क्यों कि उन्होंने मार्गमें सुना था, कि हमारे पुत्रोंको मारनेवाला अश्वत्थामा वहीं है ?

थोड़ी दूर जाकर गङ्गाके तटपर जाकर महात्मा व्यासको ऋषियोंके सहित बैठे देखा और वहीं देखा कि दुष्ट अश्वत्थामा शरीरमें घी लगाए कुशाकी चटाई ओढ़ शरीरमें धूल लपटाये बैठा है।

उसको देखते ही भीमसेन धनुषपर बाण चढ़ाकर खड़ा रह खड़ा रह कहकर दौड़े।

अश्वत्थामा भीमसेनको धनुष धारण किये और पीछेसे युधिष्ठिर, अर्ज्जुन और श्रीकृष्णको एक रथपर आते देख बहुत घबड़ाया और डरकर समयके अनुसार यही विचारा कि ब्रह्मशिर अस्त्र चलाऊं।

तब महात्मा अश्वत्थामाने उसी दिव्य अस्त्रका ध्यान किया, फिर एक सींक बांधि हाथमें लेकर उस मन्त्रको पढ़ा और उन सब शस्त्रधारी वीरोंपर चमा न कर सके, फिर "जगत् पाण्डवरहित होजाय" क्रोध करके ऐसा कहकर सब जगत्का नाश करनेके लिये प्रतापी अश्वत्थामाने उस शस्त्रको छोड़ दिया। तब वह सींक आगसे जलने लगी, और ऐसा जान पड़ा कि यह प्रलयकालके यमराजके समान आज तीनों लोकको भस्म करदेगी।

१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज जनमेजय! महाबाहु श्रीकृष्णने उन सब लक्षणोंसे अश्वत्थामाका सब अभिप्राय जानकर शीघ्रतासे अर्जुनसे कहा।

हे अर्जुन! हे अर्जुन! तुम्हारे हृदयमें जो द्रोणाचार्य्यका बताया हुआ दिव्य अस्त्र वर्त्तमान है, अब उसके छोड़नेका समय आगया। हे पाण्डव! हे अर्जुन! अपने भाई और अपनी रक्षाके लिये शीघ्रतासे दिव्य अस्त्रको छोड़ो।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन शत्रुनाशन अर्जुन धनुष बाण लेकर शीघ्रतासे उतरे और ब्रह्मशिर अस्त्र छोड़नेके पहिले "हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामाका कल्याण होय पीछे हमारे भाइयोंका और हमारा कल्याण होय" ऐसा कहकर देवता, गुरु और शिवको प्रणाम करके "अश्वत्थामाका शस्त्र हमारे शस्त्रसे शान्तहो" ऐसा कहकर अर्जुनने उस शस्त्रको छोड़ दिया।

वह शस्त्र गाण्डीव धनुषसे छूटकर प्रलयकालकी अग्निके समान जलने लगा, उसी प्रकार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका महातेजस्वी शस्त्र भी जलने लगा, और चारों ओर प्रकाश करने लगा उस समय आकाशसे बिजली गिरने लगी, और भी भयानक सहस्रों अपशकुन होने लगी। सब जगत् भयसे व्याकुल होगया। आकाश शब्द और आगसे पूरित होगया, बन और पर्व्वतोंके समेत पृथ्वी हिलने लगी।

तब महामुनि नारद और कुरुकुलके पितामह महात्मा व्यासने सब लोगोंको तपाते हुए उन दोनों शस्त्रोंके तेजको देखा फिर वीर अश्वत्थामा और अर्जुनको शान्त करने लगे। सब धर्मोंके जाननेवाले सब जगत्के कल्याण चाहनेवाले महातेजस्वी नारद और व्यासमुनि दोनों जलते हुए शस्त्रोंके बीचमें खड़े होगए उन दोनों जलते हुये बाणोंके बीचमें इस प्रकार शोभित हुए जैसे जलती हुई दोअग्नि। इन दोनों महात्माओंको देवता वा दानवादि इनकी पूजा करते थे, इनका कोई निरादर नहीं कर सक्ता, था, इसी लिये ये उस शस्त्रसे नहीं जले तब ये दोनों महात्मा सब जगत्का कल्याण करनेके लिये ऐसे बचन बोले।

पहिले समयमें भी शस्त्रविद्या जाननेवाले अनेक महावीर हुये हैं, परन्तु किसीने मनुष्योंके लिये इस शस्त्रको नहीं छोड़ा, हे वीरो! तुमने ऐसा साहस क्यों किया?

१४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! हे पुरुषसिंह! उन शस्त्रोंको अग्निके समान जलते हुए देख अर्जुनने शीघ्रतासे अपने शस्त्रको लौटाना चाहा और हाथ जोड़कर उन दोनों महात्माओंसे बोले, हमने इसलिये इस शस्त्रको छोड़ा कि इसके तेजसे अश्वत्थामाके शस्त्रका तेज नष्ट होय, अब हम शस्त्रको लौटा लेयं तो पापी अश्वत्थामा अपने शस्त्रके तेजसे निश्चय ही हम सबको भस्म कर देगा, इसलिये इस समय जो कुछ हमारे और जगत्के कल्याणके लिये बात हमसे कहिए सो ही हम करें क्यों कि आप दोनों देवतोंके समान ऋषी हैं। ऐसा कहकर अर्जुनने अपने शस्त्रको लौटा लिया।

हे राजन्! उस अस्त्रका लौटारना बड़ा ही कठिन था, अर्जुनके सिवाय साक्षात् इन्द्र भी उसे नहीं लौटा सकते थे; वह ब्रह्माके तेजसे बना था, इसलिये छोड़नेके पश्चात् ब्रह्मचारीके सिवाय कोई पापी उसे लौटा नहीं सक्ता, जो बिना कार्य्य किये उस अस्त्रको छोड़े और फिर लौटानेकी इच्छा करे तो वह अस्त्र उसहीका शिर काट देता था।

अर्जुन ब्रह्मचारी और व्रती होकर भी घोर आपत्तिमें पड़नेसे भी उस घोर अस्त्रको कभी नहीं छोड़ते थे, ये व्रतको पालनेवाले वीर और ब्रह्मचारी तथा गुरुको सेवा करनेवाले थे, इसलिये इस अस्त्रको लौटा सके।

अनन्तर अश्वत्थामाने ऋषियोंको अपने आगे खड़ा देख अस्त्र लौटानेकी इच्छा करी परन्तु शीघ्र न लौटा सके, तब अश्वत्थामा दीन होकर व्याससे बोले।

हे मुने! मैंने भीमसेनके भयसे घोर आपत्तिमें पड़कर अपनी रक्षाके लिये इस अस्त्रको छोड़ा था, इसने दुर्य्योधनको मारते समय बहुत अधर्म्म किया था, यह भीमसेन युद्धमें अन्याय करता है, इसी लिये मैंने भीमपर यह अस्त्र छोड़ा था, अब मैं इसका लौटा नहीं सकता; मैंने इस घोर दिव्य अस्त्रको अग्निका मन्त्र पढ़कर पाण्डवोंका नाश करनेके लिये छोड़ा था, सो अब यह पाण्डवोंका अवश्य ही नाश करेगा।

हे ब्रह्मन्! मैंने क्रोधमें भरकर भूलसे युद्धमें जो ये अस्त्र छोड़ा सो पाप किया।

श्रीव्यास मुनि बोले, हे तात! कुन्तीपुत्र अर्जुन भी इस ब्रह्मशिर अस्त्रको जानते हैं। उन्होंने जो युद्धमें इस अस्त्रको छोड़ा था, सो क्रोधमें भरकर या तुम्हारा नाश करनेके लिये नहीं वरन् केवल तुम्हारे अस्त्रका बल शान्त करनेहीके लिये छोड़ा था, और फिर उन्होंने उसे लौटा भी लिया, देखो तुम्हारे पिताहीसे उन्होंने भी सीखा था, महाबाहु अर्जुन क्षत्रियोंके धर्म्ममें स्थित हैं, बुद्धिमान साधु और सर्व्व अस्त्रविद्याके पण्डित हैं तब तुम उन्हें बन्धुओंके सहित क्यों मारना चाहते हो? जहां ब्रह्मशिर अस्त्रके तेजसे शान्त किया जाता है, उस देशमें बारह बर्षतक जल नहीं बर्षता इसी लिये प्रजाका कल्याण चाहनेवाले महाबाहु अर्जुन समर्थ होनेपर भी इस अस्त्रको नहीं काटते।

हे महाबाहो! तुम्हें पाण्डव और राज्य इन सबहीकी रक्षा करनी चाहिये इसलिये तुम इस अस्त्रको लौटा लो तुम्हारा क्रोध शान्त हो, पाण्डवोंका कल्याण हो क्यों कि राजऋषि युधिष्ठिर अधर्म्मसे किसीको जीतना नहीं चाहते तुम अपने शिरकी मणी पाण्डवोंको दे दो तब ये तुम्हारे प्राण छोड़ देंगे।

अश्वत्थामा बोले, हे भगवन्! मैंने पाण्डवोंसे जितने रत्न पाये हैं, और कौरवोंसे जो धन पाया है उन सबसे यह मणि अधिक है, जिसके पास रहनेसे प्यास, भूख, शस्त्र, रोग, देवता, दानव, सांप, राक्षस, और चोरोंसे कुछ भय नहीं होता ऐसी उत्तम मणी मैं पाण्डवोंको नहीं दे सक्ता परन्तु आपके बचनोंको टाल भी नहीं सक्ता इसलिये यह मणी रक्खी है, और यह मैं बैठा हूं परन्तु अब यह व्यर्थ अस्त्र अभिमन्युकी स्त्रीके गर्भमें जाकर गिरैगा, क्यों कि मैं इसे छोड़कर लौटा नहीं सक्ता, मैं आपके बचनको भी टाल नहीं सक्ता इसलिये यह अस्त्र वहीं जाय।

श्रीव्यास मुनि बोले, हे पापरहित! जो तुम चाहते हो सोही करो और इस अस्त्रको गर्भमें छोड़कर शान्त हो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, व्यासके बचन सुन अश्वत्थामाने उस छोड़े हुए अस्त्रको उत्तराके गर्भमें जानेकी आज्ञा दी।

१५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! पापी अश्वत्थामाके अभिप्रायको जानकर

श्रीकृष्ण प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे बोले, एक दिन राजा बिराटकी पुत्री अभिमन्युकी स्त्री उत्तरा अपने घरमें बैठी थी, तब उससे एक ब्राह्मणने आकर ऐसे बचन कहा, कि जब कुरुकुलका नाश हो चुकेगा, तब तुम्हारे पुत्र होगा वह पहले गर्भमें नष्ट होजायगा फिर उसका जन्म होगा। आज उस महात्माका बचन सत्य हुवा अब कुरुकुलकी रक्षा करनेवाला परीक्षित नामक उत्तराका पुत्र होगा।

यदुकुलश्रेष्ठ श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन अश्वत्थामा क्रोधमें भरकर बोले, हे कमलनेत्र कृष्ण! जो तुम पाण्डवोंके पक्षपातसे कह रहे हो सो ऐसा नहीं होगा क्योंकि हमारा बचन मिथ्या नहीं होता; जिस बिराटपुत्रीके गर्भको तुम रक्षा करना चाहते हो यह हमारा छोड़ा हुआ शस्त्र उसी गर्भका नाश करेगा।

श्रीकृष्ण बोले, अरे क्षुद्र! यह शस्त्र वृथा नहीं होगा वह गर्भ मर जायगा परन्तु फिर जीकर दीर्घायु पावेगा, तुझे सब मनुष्य नपुंसक, पापी, सदा पाप करनेवाला और बालकोंको मारनेवाला कहेंगे, इसलिये हम और भी एक शाप तुझे देते हैं, क्योंकि इस महापापका फल अवश्यही तुझे होना चाहिए। तू तीन हजार बर्षतक कहीं किसीसे किसी प्रकारकी सम्पत्ति बिना पाये एकला और असहाय होकर जगत्में डोलेगा, हे क्षुद्र! तू मनुष्योंके बीचमें नहीं रहेगा, तेरे शरीरसे पीव और रुधिरकी दुर्गन्धि आवेगी भयानक जङ्गलोंमें घूमता फिरेगा और अनेक प्रकारके दुःख सहेगा, परीक्षित भी दीर्घायु पाकर वेद पढ़ेंगे, अनेक प्रकारके ब्रत करेंगे, और कृपाचार्य्यसे सब शस्त्रविद्या सीखकर क्षत्रियोंका धर्म्म पालन करेंगे, और धर्म्मात्मा परीक्षित साठ बर्ष राज्य करेंगे, युधिष्ठिरके पीछे महाबाहु परीक्षित ही कुरुकुलके राजा होंगे, रे नराधम! रे दुर्बुद्धे! तेरे देखते देखते परीक्षित महाराज होंगे तू हमारे सत्य और तपके बलको देख तेरे शस्त्रकी अग्निसे जले हुए परीक्षितको हम जिला देंगे।

श्रीव्यास मुनि बोले, तुमने हमारे बचनोंका निरादर करके ऐसा घोर कर्म्म किया तुम ब्राह्मण और बिशेष कर पण्डित होके ऐसे ऐसे घोर कर्म्म करते हो और क्षत्रीधर्म्मका पालन करते हो इसलिये देवकीपुत्रने जो कुछ तुम्हारे लिये कहा सो सब सत्य होगा।

अश्वत्थामा बोले, पुरुषश्रेष्ठ भगवान् कृष्णके बचन सत्य होय मैं आजसे आपके संगही रहूंगा।

वैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहकर अश्वत्थामाने महात्मा पाण्डवोंको मणि दे दयी और आप मलीन होकर सबके देखते देखते बनको चले गये।

पाण्डव लोग भी अश्वत्थामाके संग उत्पन्न हुई मणि लेकर श्रीकृष्ण, वेदव्यास और महामुनि नारदको आगे करके शीघ्रता सहित ब्रत धारिणी, यशस्विनी द्रौपदीके पासको चले गए।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब पुरुषसिंह पाण्डव घोड़ोंको वायुके समान दौड़ाते हुए कृष्णके सहित डेरोंको चले गए, वहां जाकर सब लोग रथसे उतरे और शोकसे भरी द्रौपदीको शोकसे व्याकुल देखा परन्तु द्रौपदी इन्हें देखकर प्रसन्न होगई। तब श्रीकृष्णके सहित पांचो पाण्डव द्रौपदीके चारों ओर बैठ गये तब राजाकी आज्ञासे महाबली भीमसेनने वह मणी द्रौपदीको दी और ऐसे बचन कहे।

हे कल्याणी! यह तुम्हारे बेटोंके मारनेवालेसे जीतकर लीनी है, अब तुम उठो और क्षत्राणियोंके धर्म्मका स्मरण करो। हे कमल नयनो! जिस समय मधुदैत्यके नाश करनेवाले श्रीकृष्ण हस्तिनापुरसे महाराजसे बिदा होकर चले थे, उस समय तुमने कैसे कैसे कठोर बचन कहे थे कि मेरे पति, पुत्र और तुम सब मर गए जिस समय महाराजने शान्ति करनेकी इच्छा कीथी तब तुम इनसे कैसे कैसे कठोर बचन

कहे थे ! वे सब चत्रिगियोंके धर्म्मके अनुसार ही थे, क्या तुम उन्हें कुछ भी नहीं स्मरण करती हो ? हमारा राज्य छीननेवाला पापी दुर्य्योधन मारा गया, मैंने तड़फते हुए पापी दुःशासनका रुधिर पिया, बैर समाप्त होगया ; अब तुम पाण्डवोंसे कुछ नहीं कह सक्ती हो अश्वत्थामाको जीतकर ब्राह्मण और गुरु समझकर जीता छोड़ दिया, उसका यश जगतमें नष्ट होगया, केवल शरीर ही बाकी रह गया है उससे मणि और शस्त्र छीन लिये ।

द्रौपदी बोली, अब मैं अरिण होगई गुरु-पुत्र तो हमारे गुरुही हैं अब इस मणिको राजा अपने शिरमें बांधे ।

महाराज युधिष्ठिरने उस मणिको गुरुका प्रसाद मानकर द्रौपदीको हठसे अपने शिरमें बांधा । उस समय उस मणिसे राजा ऐसे शोभित हुए, जैसे चन्द्रमाके सहित पर्व्वत, तब द्रौपदी शोकसे व्याकुल होकर उठीं और महाबाहु युधिष्ठिरने श्रीकृष्णसे कुशल पूंछी ।

१६ अध्याय समाप्त ।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब इस प्रकार तीनों बीरोंने रात्रिको सोते हुए युधिष्ठिरकी सब सेनाको मारडाला, तब शोच करते हुए राजा युधिष्ठिर कृष्णसे बोले, हे कृष्ण ! पापी चुद्र दुरात्मा अश्वत्थामाने हमारे सब महारथ पुत्रोंको कैसे मारडाला ? सब शस्त्रविद्याके जाननेवाले एकले ही सैकड़ों और सहस्रों बीरोंसे लड़नेवाले द्रुपदके सब पुत्रोंको कैसे अश्वत्थामाने मारडाला ? देखो जिस महारथको युद्धमें खड़ा देखकर महाधनुषधारी द्रोणाचार्य्य युद्धसे हट जाते थे, उस बीर धृष्टद्युम्नको एकले अश्वत्थामाने कैसे मार डाला ? हे पुरुषसिंह ! हमारे गुरुपुत्र अश्वत्थामाने कौनसा कर्म्म किया था, जिससे एकलेहीने सबको मारडाला ।

श्रीकृष्ण बोले, हमे यह निश्चय है कि अश्वत्थामा निश्चय ही देवतोंके देवता, ईश्वरके ईश्वर, सनातन शिवकी शरण गये होंगे, इसीसे उन्होंने सबको मारडाला । शिव प्रसन्न होकर मनुष्यको अमर कर सकते हैं और ऐसा पराक्रम दे सक्ते हैं जिससे मनुष्य इन्द्रको भी मार सक्ता है, हम देवतोंके देवता शिवके अनेक पुराने कर्म्म जानते हैं । हे भारत ! वह जगत्के आदि अन्त और मध्य हैं उनकी शक्तिसे सब जगत् अपना अपना काम करता है, जिस समय भगवान् ब्रह्मा पहिले सृष्टि बनाने लगे । तब उन्होंने भी शिवके ऐसे ही प्रभाव देखे और शिवसे कहा कि तुम सृष्टि बनाओ तब शिवने कहा कि अच्छा और फिर ब्रह्माको जगत्के दोष दिखलाये तब महातपस्वी ब्रह्माने बहुत दिनतक जलमें डूबकर तपस्या करी इस प्रकार बहुत दिनतक तपस्या करते करते ब्रह्मा जगत्कर्त्ता शिवका मार्ग देखते रहे फिर उन्होंने अपने मनसे एक मनुष्य उत्पन्न किया ।

ब्रह्माने अपने पिता शिवको जलमें सोता हुआ देख उस पुरुषसे कहा यदि मुझसे पहिले कोई उत्पन्न न हुआ हो तो मैं सृष्टि रचूं, उस पुरुषने कहा कि, तुम बिश्वास रक्खो तुमसे पहिले उत्पन्न हुआ कोई नहीं है, ये जो जलमें सोते हैं सो सनातन पुरुष हैं अब तुम प्रजा उत्पन्न करो ।

तब ब्रह्माने दच प्रजापति आदि लेकर सब जगत् बनाया फिर स्वेदज, अण्डज, उद्भिज और जरायुज ये चार प्रकारको सृष्टि रची, हे राजन् ! यह सब प्रजा उत्पन्न होते ही भूखसे व्याकुल होकर दच प्रजापतिको खाने दौड़ी । दच प्रजापति अपनी रचाके लिये, ब्रह्माके पीछे दौड़े और कहा कि, हे भगवन् ! आप इनसे हमारी रचा कीजिये और इन्हे खानेको कुछ दीजिए, तब ब्रह्माने उन्हे अन्न और स्थावर औषधी दी और चलनेवालेमें यह नियम कर दिया कि दुर्व्वलको बलवान खाजाय ।

हे राजन्! तब वह प्रजा अन्न लेकर अपने घरको चली गई; तभीसे अपनी अपनी जातियोंमें प्रेम रहने लगा। जब यह सब जगत् उत्पन्न होगया तब सनातन पुरुष भी जलसे उठ बैठे और सब प्रजाको देखने लगे। सब जगत्को अनेक रूपसे उत्पन्न हुआ और बढ़ा हुआ देख शिवको बड़ा क्रोध हुआ और अपने लिंगको बलसे पृथ्वीमें पटक दिया, वह लिङ्ग पृथ्वीमें गिरकर वैसा ही रह गया।

तब ब्रह्मा उन्हें शान्त करके बोले, तुमने इतने दिनतक पानीमें सोकर क्या किया? और इस लिङ्गको पृथ्वीमें क्यों पटक दिया?

तब जगत्के गुरु शिव ब्रह्मासे क्रोध करके बोले, प्रजा तो दूसरेने बनाही लो अब मैं इसको रखकर क्या करूंगा? तुमने तपसे अन्न और ओषधी भी बना लिए अब प्रजा सुख करे ऐसा कहकर शिव क्रोधमें भरकर सुञ्जमाल नामक पर्व्वतपर तप करनेको चले गए।

१७ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले, हे राजन्! युधिष्ठिर जब सत्ययुग बीत चुका तब देवतोंने वेदोंके प्रमाणसे विधिपूर्व्वक यज्ञोंको बनाया, उनके अनुसार ही यज्ञकी सामग्री घी और भाग लेने योग्य देवतोंको बनाया, परन्तु वे यथार्थ रूपसे शिवको नहीं जानते थे, इसलिये उन्होंने भगवान शिवका भाग न दिया, तब शिवने क्रोध करके पहिले धनुष बनाया फिर लोक यज्ञ, क्रियायज्ञ, सनातन गृहयज्ञ, पञ्चभूत यज्ञ और नृयज्ञ, बनाया, और फिर जगत् बनाया, फिर लोक यज्ञ और नृयज्ञसे पांच हाथका धनुष बनाया हे भारत! उस धनुषका रोदा वषट्कार हुआ और सब यज्ञकी सामग्रीसे उसे पुष्ट किया तब महादेव क्रोध करके उस धनुषको लेकर उस स्थानपर आये जहां सब देवता यज्ञ कर रहे थे, ब्रह्मचारी सनातन शिवको धनुष लिये देख पृथ्वी और पर्व्वत कांपने लगे। वायु चलता चलता बन्द होगया, आग जलती जलती बुत गई, आकाशमें तारे और नक्षत्र घूमने लगे। सूर्य्य और चन्द्रमाका मण्डल अस्त होगया, जगत् और आकाश अन्धकारसे भर गया देवता और सब प्राणी घबड़ाने लगे। सब देवता घबड़ा गए, तब शिवने उस यज्ञके हृदयमें एक बाण मारा तब यज्ञ और अग्नि हरिण बनकर भाग गये, शिवभी उस तेजसे प्रकाशित होने लगे, और आकाशमें यज्ञको ढूढ़ने लगे। जब यज्ञ नष्ट होगया तब सब देवता घबड़ाने लगे। तब शिवने क्रोध करके धनुषके कोनेसे सविताके हाथ, भगके नेत्र और पूषाके दांत तोड़ डाले, तब सब देवता और यज्ञके अङ्ग इधर उधरको भाग गये कोई वहीं मुरदेके समान गिरपड़े तब शिवने देवतोंको भागते देख धनुषके कोनेसे सबको रोक दिया, तब देवतोंने अपने बचनसे उस धनुषके रोदेको काट दिया तब सब देवता यज्ञको संगमें लेकर धनुषरहित शिवकी शरणमें गये।

तब शिवने भी उनके ऊपर कृपाकर दी तब भगवान शिवने अपनेको पके तलावमें गिराय दिया, वहीं क्रोध अब अग्नि रूप होकर जलको सुखाता है, शिवने फिर प्रसन्न होकर भगको नेत्र, सविताको हाथ और पूषाको दांत दे दिये और फिर जगत्में यज्ञ होने लगे। उसी दिनसे सब जगत् सावधान होगया तभीसे देवतोंने सब यज्ञोंमें शिवका भाग दे दिया।

हे राजन्। शिवहीके क्रोधसे यह सब नाश हुआ और उनहीकी प्रसन्नतासे सुख होगा, इसीसे तुम्हारे सब महारथ पुत्र और साथियों सहित धृष्टद्युम्न मारे गए आप उस कर्म्मको अश्वत्थामाका किया न मानिये यहसब शिवकी कृपासे हुआ है, अब आगे जो कुछ काम हो सो कीजिए।

१८ अध्याय समाप्त।

ऐषीक और सौप्तिक पर्व्व समाप्त।

महाभारत।

स्त्री पर्व्व।

दोहा।

नरनारायण व्यास प्रभु, बन्दि सरस्वति पाय।
भारतको भाषा करों, सुजननको सुखदाय॥

महाराज जनमेजय बोले, हे वैशम्पायन मुने! जिस समय राजा दुर्य्योधन सब सेनाके सहित मारे गये तब महाराज धृतराष्ट्रने सुनकर क्या किया? महामनस्वी कुरुकुलराज महाराज युधिष्ठिरने क्या किया? और कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, और कृतवर्म्माने क्या किया? हमने यह सुना कि कृष्णने अश्वत्थामाको शाप दिया था सञ्जयने राजासे क्या कहा सो हमसे कहिये?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! सौ पुत्रोंके मरनेसे राजा धृतराष्ट्रकी ऐसी दशा होगई जैसे शाखा कटनेसे वृक्षकी उस समय, पुत्र शोकसे व्याकुल चिन्तासे भरे राजा धृतराष्ट्रके पास जाकर सञ्जय बोले।

हे महाराज! शोक किसीकी सहायता नहीं करता इसलिये आप क्यों शोक करते हैं? देखो अठारह अक्षोहिणी सेना मारी गई, इस समय पृथ्वी मनुष्योंसे रहित होगई है अब किसी और कुछ उत्सव नहीं दीखता, अनेक देशोंसे आये हुये राजा तुम्हारे पुत्रोंके सहित मारे गये, अब आप उठिये, गुरु, बेटे, पोते, जाती और मित्रोंका प्रेत कर्म्म कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! सञ्जयके ऐसे दया भरे बचन सुनकर अपने पुत्र और पोतोंके शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्र मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर गये, उस समय राजाकी ऐसी दशा होगई जैसे वायुसे उखड़े हुए वृक्षकी।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरे सब पुत्र, मन्त्री और मित्र मारे गये अब मैं जीकर जगत्‌में केवल दुःख ही भोगूंगा, अब मैं बन्धुरहित होकर जीकर क्या करूंगा? मेरी इस समय ऐसी दशा होगई है जैसे पङ्ख कटनेसे बूढ़े पक्षीकी, मेरा राज्य नष्ट होगया, आंख जाती रहीं और सब बन्धु भी मारे गये, अब तेजरहित सूर्य्यके समान मैं अब जीकर क्या करूंगा? मैंने पहिले अपने मित्र परशुराम, ब्रह्मऋषि नारद और कृष्णद्वैपायन मुनिके बचन नहीं माने थे, मुझसे जो सभाके बीचमें बैठकर श्रीकृष्णने कल्याण भरे बचन कहे थे मैंने इनके बचन नहीं सुने उन्होंने मुझसे कहा था "हे राजन्! पाण्डवोंके सङ्ग आप वैर मत कीजिये और अपने पुत्र दुर्य्योधनको वशमें कीजिये" तब मैंने दुर्बुद्धिमें पड़कर उनके बचन न माने भीष्मने जो धर्म्म भरे बचन कहे थे सो भी मैंने नहीं माने अब सोचता हूं नाचते हुये बैलके समान पराक्रमी दुर्य्योधन, दुःशासन और कर्णका मरना सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है। द्रोणाचार्य्यरूपी सूर्य्यको ग्रहण लग गया यह सुनकर भी मेरा हृदय फटता है।

हे सञ्जय! मुझे स्मरण नहीं होता कि मैंने अपने जन्ममें कोई पाप किया है जिसका

मुझको यह भयानक फल भोगना पड़ा मुझे निश्चय है कि मैंने पहिले जन्मोंमें कुछ पाप किया था, उसीसे ब्रह्माने मुझे ऐसे ऐसे दुःख दिये यह बुढ़ापा, बन्धु और मित्रोंका नाश ये प्रारब्धहीसे सब दुःख इकट्ठे होगये हैं; अब इस जगत्में हमारे समान दुःखी और कौन है? इसलिये व्रतधारी पाण्डव आज ही हमें ब्रह्म लोकके बड़े रस्तेमें जाते देखें अर्थात् हम इस ही समय प्राण त्याग करते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकारसे राजाको अनेक प्रकार रोते देख सञ्जय बोले, हे महाराज! आपने वृद्धोंके मुखसे वेद और अनेक शास्त्र सुने हैं, इसलिये आप शोकको छोड़ दीजिए, हे राजन्! जैसे पुत्रके मरनेसे राजा सृञ्जयको शोक हुआ था और उनको मुनियोंने समझाया था जैसे उनके पुत्रोंको अभिमान हुआ था ऐसे ही तुम्हारे पुत्रको भी अभिमान हुआ था आपने पहिले किसीको बात नहीं मानी केवल लोभमें पड़के अन्याय करने लगे और अपना भी प्रयोजन कुछ सिद्ध न कर सके, केवल अत्यन्त तेज धारवाली तलवारके समान अपनी महातेज बुद्धिसे काम करते रहे।

आपके पुत्रने सदा ही मूर्खोंको मन्त्री रक्खा, जिसका दुःशासन मूर्ख राधापुत्र कर्ण, दुष्टात्मा शकुनी, मन्त्री होय उसका नाश क्यों न होता? जिसने सब जगत्को जीता था, ऐसे शल्य, कुरुकुलमें बूढ़े भीष्म, गान्धारी विदुर, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, महाबाहु कृष्ण, बुद्धिमान नारद और अनन्त तेजस्वी व्यास आदि मुनियोंके वचन दुर्योधनने न माने, कभी किसी धर्मका आश्रय न लिया केवल सदा युद्ध करनेहीकी इच्छा रक्खी जैसे वायु तिनकोंको इधर उधर उड़ाकर लेजाता है, तैसेही काल भी सब जन्तुओंको इधर उधर करता रहता है, दुर्योधन मूर्ख, अभिमानी केवल युद्ध करनेकी इच्छा करनेवाला, दुष्ट, क्षमा हीन, असन्तोषी और बलवान था।

तुम विद्वान बुद्धिमान और सदासे सत्यवादी हो ऐसे बुद्धिमान मनुष्योंको कभी मोह नहीं होता।

हे राजन्! तुम्हारे पुत्रने धर्मका आदर नहीं किया सब क्षत्रियोंका नाश कराया और शत्रुओंका यश बढ़ा दिया, तुम भी उस समय मध्यस्थ थे, परन्तु कोई बात तुमने भी अच्छी न की तराजूके दोनों ओर समान बोझ न रक्खा, मनुष्यको ऐसा उचित है कि पहिले ही शक्तिके अनुसार ऐसा विचार करे जिसमें आगे कोई दुःख न भोगना पड़े, तुमने भी पुत्रके प्रेममें आकर दुर्योधनके अनुकूल ही बर्त्ताव किया, फिर अब आपत्ति पड़नेसे क्यों शोक करते हो? जो केवल शहत देखकर वृक्षपर चढ़ जाता है और अपने गिरनेका भय नहीं करता वह वृक्षपरसे गिरकर तुम्हारे ही समान आपत्ति भोगता है, शोचसे धन, बल, लक्ष्मी और मोक्ष सिद्ध नहीं होती। जो आप ही आग बनाकर पीछे कपड़ेसे ढकता है और पीछे जलनेसे शोच करता है वह पण्डित नहीं कहाता, तुमने अपने पुत्रको सङ्ग लेकर वचन रूपी वायुसे धौंककर और लोभरूपी घी डालकर युधिष्ठिररूपी अग्निको चैतन्य कर दिया उस बढ़ी हुई अग्निकी बाणरूपी ज्वालामें तुम्हारे पुत्र पतङ्गके समान जल गये, अब तुम उनका क्या शोच करते हो? अब जो तुम अपनी आंसुओंसे शरीरको भिगा रहे हो यह व्यवहार शास्त्रसे विरुद्ध है, पण्डित ऐसा नहीं करते ये आंसू मनुष्यको अग्निके समान भस्म करते हैं, इसलिये आप क्रोधको छोड़िये और अपने आत्माको शान्त कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब महात्मा सञ्जय ऐसा कह चुके तब शत्रुनाशन विदुर राजाको समुझाने लगे।

१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय ! तब पुरुषसिंह विचित्र वीर्य्यपुत्र धृतराष्ट्रके पास आकर विदुरने मरे हुये वाक्योंके समान जो कुछ कहा सो तुम सुनो, ये बचन विदुरने राजाके प्रसन्न होनेके लिये कहा था।

विदुर बोले, हे लोकनाथ ! हे महाराज ! आप क्यों शोचते हैं ? उठिये जगत्में सब जीवोंकी अन्तमें यही गति होती है, इसलिये अपने आत्माको शान्त कीजिये जगत्में जितनी सञ्चय की हुई वस्तु हैं, उन सबका एक दिन नाश होता है। जितनी ऊंची वस्तु हैं वे सब एक दिन नीची होती हैं, जितने संयोग है, उन सबका अन्तमें वियोग होता है और सब उत्पन्न होनेवाले मरते हैं।

हे क्षत्रियश्रेष्ठ ! जब शूर और कायर सबहीको एक दिन मरना है। तब वीर क्षत्री युद्धहीमें मरे यह कोई नियम नहीं है कि ऐसे मरे और बिना युद्ध किये जीता रहे क्यों कि काल आनेसे सब ही मर जाते हैं, जगत्के पहिले ब्रह्म था, अन्तमें ब्रह्म रहेगा केवल बीचमें शरीर धारण करता है इसलिये सब शरीर नष्ट होनेवाले हैं, इसमें रोनेसे क्या होगा ? शोच करनेसे मरा हुआ नहीं मिलता और शोचनेसे कोई मर भी नहीं जाता लोक इस ही प्रकार स्थित है, इसलिये आप शोच करने योग्य नहीं हैं।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! काल जगत्में सब प्रकारके जीवोंका नाश करता है, उसका कोई भी मित्र और शत्रु नहीं है, जैसे वायु तिनकोंको इधर उधर उड़ाया करता है वैसेही कालभी जीवोंको इधर उधर घुमाया करता है, यद्यपि सब एक रीति से उत्पन्न होते हैं परन्तु मरनेके समय जिसको काल पहिले आता है, वही मनुष्य पहिले मरता है, इसलिये रोनेसे क्या होगा ?

यदि आप शास्त्रों को प्रमाण मानते हो तो निश्चयही ये सब क्षत्री स्वर्गको गए इसलिये आप युद्धमें मरे हुए वीरोंका शोच न कीजिये वे सब क्षत्री वेदपाठी, व्रतधारी थे और सब युद्धमें सन्मुख मरे उनके लिये रोनेसे क्या लाभ है ? सब अज्ञानसे यहां आए थे, और अज्ञानसे नष्ट होगए, तुम उनके कोई नहीं हो और वे तुम्हारे कोई नहीं थे, इसलिये रोनेसे क्या होगा ? क्षत्रियों को दोनो ही ओरसे सुख है अर्थात् युद्धमें मरे तो स्वर्ग और शत्रुओंको मारा तो यश मिलता है जो क्षत्रिय युद्धमें मरता है वह इन्द्रका अतिथि बनता है इन्द्र उनको इच्छानुसार सुख देनेवाले लोकोंको देते हैं, जिस प्रकार युद्धमें मरनेवाले क्षत्रियोंको स्वर्ग मिलता है ऐसा अनेक दक्षिणा युक्त यज्ञ और अनेक तपस्या करनेसे भी नहीं मिलता और ऐसा सुख अनेक विद्या पढ़नेसे भी नहीं मिलता है।

हे राजन् ! वीरोंने शरीररूपी अग्निमें बाण रूपी आहुती छोड़ी और दूसरोंकी आहुती सही तब ये सब स्वर्गको चले गए हमने यह स्वर्गका मार्ग आपसे कहा वास्तवमें क्षत्रियोंका युद्धके समान कल्याण और कहीं नहीं है वे सब सभाकी शोभा बढ़ानेवाले वीर महात्मा क्षत्री उत्तम लोकोंको गए इसलिये आप उनका कुछ शोक न कीजिए।

हे पुरुषसिंह ! आप अपने आत्माको शान्त कीजिए और शोकसे व्याकुल होकर शरीर मत छोड़िये, जगत्में सहस्रों माता, पिता, स्त्री और पुत्र बन चुके। तुम किसके हुए और तुम्हारा कौन हुआ जगत्में शोकके सहस्रों और भयके सैकड़ों स्थान हैं, उनमें प्रतिदिन मूर्ख जाते हैं, पण्डित नहीं।

हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! कालका कोई मित्र, शत्रु और मध्यस्थ नहीं है, वह समान रूपसे सबका नाश करता है, काल जगत्का नाश करता है, काल सब जगत्के सोनेपर भी जागता है। कालको कोई भी नहीं नांघ सक्ता, यौवन

रूप, जीवनद्रव्य, सुख और मित्रोंके सङ्ग रहना सब अनित्य हैं, इसलिये पण्डित इनकी इच्छा न करें; सब जगत्‌के शोचको आप एकले अपने ऊपर न लीजिए क्यों कि जो अभाव होनेवाला होता है वह किसीके रोके रुकता नहीं।

यदि मनुष्य अपना पराक्रम देखे तो बिना शोक किये ही शोचका बदला लेय। शोकरूपी दुःखकी यही औषधी है, क्यों कि शोक करनेसे शोक नष्ट नहीं होता बरन् उलटा बढ़ता ही है बुरा कर्म्म करने और वस्तुओंके वियोगसे जो शोक उत्पन्न होता है उससे मूर्ख मनुष्योंका हृदय जला करता है, आप जो शोच करते हैं, इससे धर्म्म, अर्थ और कोई, सुख भी सिद्ध नहीं होगा, इससे जगत्‌के कार्य्य सिद्ध नहीं होते और स्वर्ग भी नष्ट होजाता है।

साधारण मनुष्य जब किसी छोटी अवस्थासे बड़ी अवस्थाको प्राप्त होता है, अर्थात् दरिद्रसे धनी होजाता है, तब उसे सन्तोष नहीं होता और अनेक प्रकारके उपद्रव करता है, परन्तु पण्डित क्रमसे सन्तुष्ट होता चलाजाता है मनुष्य मनका और बुद्धिसे औषधियोंसे शरीरका दुःख दूर करे, हमने जो यह ज्ञान तुमसे कहा इसको मूर्ख नहीं समझ सकता पूर्व्वजन्मका किया हुआ कर्म्म सोतेके सङ्ग सोता है, बैठेके सङ्ग बैठता है और चलते हुयेके सङ्ग चलता है अर्थात् किसी समय सङ्ग छोड़ता नहीं है।

मनुष्य जिस जिस अवस्थामें जो जो शुभ या अशुभ कर्म्म करता है, उसी उसी अवस्थामें उसका वैसा ही फल भोगता है, जिस जिस शरीरसे मनुष्य जो जो कर्म्म करता है, उसका उसका फल उसही शरीरसे भोगना पड़ता है, आत्मा ही आत्माका बन्धु है, आत्मा ही आत्माका शत्रु है और आत्मा ही किये हुए कर्म्मका साक्षी है, बिना किये हुए कोई कर्म्मका फल नहीं भोगता धर्म्मका सुख और पापका फल दुःख है, आपके समान बुद्धिमान लोग मूल नाश करनेवाले अज्ञानसे उत्पन्न हुये पाप कर्म्म नहीं करते हैं।

२ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे महाबुद्धिमान! तुम्हारे उत्तम वचन सुननेसे मेरा शोक नष्ट होगया, अब कुछ और सुननेकी इच्छा है हम तुमसे प्रश्न करते हैं, कि प्यारी वस्तुओंके छूटने और अनिष्ट वस्तुओंके मिलनेसे पण्डितोंके मनमें दुःख क्यों नहीं होता?

विदुर बोले, हे राजन्! जिस जिस वस्तुसे मनमें सुख वा दुःख होय पण्डित उनहीसे दूर रहे और अपने मनको वशमें रक्खे तो शान्ति प्राप्त होती है।

हे पुरुषसिंह! आप अत्यन्त विचार कर देखिये तो यह अनित्य जगत् केलेके वृक्षके समान सार हीन मिलेगा, देखो सब पण्डित, मूर्ख, धनी और निर्धन श्मशानमें जाकर एक समान सो रहते हैं, देखो उस समय मांसरहित हड्डी और नाड़ियोंसे बंधे हुए शरीरोंमें मनुष्यका भेद देखता है, अर्थात् मरे हुए दरिद्र और धनीके शरीरमें कुछ भेद नहीं रहता, जिससे कुल और रूप आदिके विशेष भाव होते हैं, वह प्रारब्ध सदा ही सब कामोंमें सङ्ग रहती है तब मूर्ख मनुष्य वृथा क्यों शोक करते हैं। पण्डितोंने शरीरोंको घरके समान कहा है जैसे घर टूटनेसे घरका स्वामी नहीं मरजाता ऐसे ही शरीर नष्ट होनेसे नित्य जीवका नाश नहीं होता; जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र छोड़कर नवीन वस्त्र पहिननेकी इच्छा करता है, ऐसे ही जीव एक शरीरको छोड़कर दूसरे शरीरमें चला जाता है।

हे विचित्रवीर्य्य पुत्र! मनुष्य विना कुछ कर्म्म किये फल नहीं भोगता सुख अथवा दुःख

अपने ही किये कर्म्मोंसे मिलता है, कर्म्मसे स्वर्ग, सुख, दुःख, स्वतन्त्रता और परतन्त्रता प्राप्त होती है, जैसे कोई मिट्टीका बरतन चाक पर चढ़ते ही फूट जाता है कोइ पकते और कोई बहुत दिनमें टूटता है, ऐसे ही किसी कर्म्मका फल उसी समय किसीका कुछ दिनमें और किसीका फल बहुत दिनमें होता है, कोई कर्म्म किसी कर्म्मसे ढका जाता है, कोई करते ही मात्र और कोई पीछे फल देता है।

हे राजन! मनुष्योंके शरीरोंकी ऐसी गति है, जैसे कोई फल होते, हो कोई सूखा और कोई पकता पकता गिर पड़ता है, जैसे किसी अन्नकी हाण्डी चुल्हेपर चढ़ी, कोई उतरी कोई उतरती कोई आधी पकी और कोई पूरी पककर फूटती है, ऐसे ही किसीका शरीर गर्भहीमें उत्पन्न होते ही, किसीका एक दिनमें किसीका दूसरे दिन, किसीका एक पक्षमें किसीका एक महीनेमें, किसीका एक वर्षमें किसीका दो वर्षमें, किसीका जवानीमें, किसीका बुढ़ापेमें, नष्ट होजाता है, पहिले कर्मोंके वशमें होकर मनुष्य उत्पन्न होते हैं और मरते हैं, यह संसार अपने स्वभावसे ऐसे ही चलता है, जैसे कोई जन्तु खेलनेके लिये पानीमें तैरता है, उसमें कभी डूबता है और कभी उछलता है, ऐसे हो इस गम्भीर जगत्में मूर्ख कर्म्मके वशमें होकर बंधते हैं और दुःख भोगते हैं परन्तु कल्याण चाहनेवाले पण्डित इन सब दुःखोंसे छूटकर मोक्ष पदको पाते हैं।

२ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे कहनेवालोंमें-श्रेष्ठ विदुर! इस संसाररूपी वनको मनुष्यसे ही जान सक्ता है, हम इस विषयको सुनना चाहते हैं तुम कहो।

विदुर बोले, इस जीवकी जन्महीसे क्रिया करनी होती है, पहिले जब स्त्रीके गर्भमें वीर्य्य और स्त्रीका रज मिलता है, तब ही जीव आकर उसमें बास करता है, फिर क्रमसे जब पांच महीने बीत जाते हैं तब उस बालकके सब अङ्ग पूरे होजाते हैं, उस समय वह अपवित्र मांस और ऊपरकी पेरके अनेक क्लेश सहता हुआ वायुके वेगसे योनीके द्वारमें टंगा रहता है। वहां उसे योनीकी पीड़ा और पूर्व्व जन्मके कर्म्मोंसे अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं जब उस घोर आपत्तिसे छूटता है, तब संसारमें आकर अनेक उपद्रव करता और देखता है उसके पास अनेक वस्तु बान्धव ऐसे आते हैं, जैसे मांसको और कुत्ते। फिर जब कुछ समय बीत जाता है, तब पहिले कर्म्मोंसे अनेक रोग आकर अनेक पीड़ा देते हैं, जब वह मनुष्य इन्द्रियोंकी फांसीमें फंसकर विषयोंके स्वादमें पड़ता है तब ही उसे अनेक प्रकारके विषय आकर घेर लेते हैं, उन विषयोंसे बार बार दुःख पानेपर भी आपत्तिसे नहीं छूटता, जब बुरा या भला काम करते करते आपत्तियोंसे तृप्त नहीं होता तब महात्मा शास्त्र और ध्यानकी विधिसे अपने आत्माकी रक्षा करते हैं। परन्तु मूर्ख कुछ भी नहीं जान सक्ता तब उसे यमदूत खींचकर मारडालते हैं और यम-लोकको ले जाते हैं। तब सब इन्द्रिय नष्ट होनेपर भी जो पहिले पुण्य और पाप किया था, उसका फल देखकर भी अपने कल्याणका कोई उपाय नहीं करता अर्थात् अपने आप ही बन्धन काटनेका उपाय नहीं करता।

देखो कैसे आश्चर्यकी बात है कि सब जगत् पागलके समान होकर लोभके वशमें पड़ा है, देखो मनुष्य लोभ, क्रोध और भयमें पागल होकर अपने आत्माका कुछ ज्ञान नहीं करता। "हम कुलीन हैं" इस अभिमानसे छोटे कुलवालोंका और धनके अभिमानसे दरिद्रि-योंकी निन्दा करता है, मैं पण्डित हूं और सब मूर्ख हैं यह जानकर दूसरोंके दोष देखाता

है, परन्तु अपने दोषोंको दूर करनेकी इच्छा नहीं करता।

देखो पण्डित, मूर्ख, धनी, निर्धन, कुलीन, अकुलीन, मानी और मानरहित सब ही श्मशानमें जाकर नङ्गे होकर सो जाते हैं किसीका मांस हड्डी और बसा भी नहीं बचती उस समय दूसरे मनुष्योंको धनी और दरिद्रमें कुछ भी भेद नहीं दीखता, इससे उनका अज्ञान हो कुलीन यह अकुलीन, रूपवान वा कुरूप था।

जब सब श्मशानमें जाकर एक समान ही पृथ्वीमें सो जाते हैं, तब मूर्ख मनुष्य लोभके वशमें होकर काहेको परस्पर लड़ना भिड़ना चाहता है?

हे पृथ्वीनाथ! जो इस तत्वको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सुनकर इस ही प्रकार इस अनित्य जीव लोकमें अपने धर्म्मको पालता है, वह परम गतिको पाता है। जो इस तत्वको जानकर ऐसा ही बर्त्ताव करता है। वह अनेक मनुष्योंको मोक्ष करता है।

४ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! तुमने जो वर्णन किया सो बुद्धिमानोंके जानने योग्य है इसलिये तुम इसहीका विस्तारपूर्व्वक हमको सुनाओ।

विदुर बोले, हे महाराज! हम ब्रह्माको प्रणाम करके आपसे इस जगत्‌रूपी बनका उसी ही प्रकार वर्णन करते हैं जैसे महर्षियोंने कहा है।

एक ब्राह्मण कभी अनेक मांस खानेवाले भयरूप महाशब्दवाले बाघ, हाथी और ऋच्छोंके झुण्डोंसे भरे, भयानक गर्जने योग्य बनमें पहुंच गया, जिस बनको देखकर साक्षात् यमराज भी डरे, वहां जाकर इस ब्राह्मणका हृदय कांपने लगा। रोएं खड़े होगये और सब काम भूल गया, फिर चारों ओर देखता हुआ "मैं किधर जाऊं" ये बिचारता हुआ, उन जन्तुवोंसे बचता हुआ भयसे व्याकुल होकर इधर उधर बनमें घूमने लगा। उस वायुसे भरे बनसे विषयोंसे व्याकुल ब्राह्मण दूर न जा सका फिर पर्व्वतोंके समान ऊंचे पांच सिरोंसे सांपके सहित एक स्त्रीको देखा, फिर आकाशके समान वृक्षोंसे पूरित वेत और बड़े बड़े तिनकोंसे भरे एक तालावको देखा, फिर ब्राह्मण उस गहरे तलावमें गिर पड़ा, फिर एक तिनकेको पकड़कर उस लता भरे तलावमें अभिमान सहित इस प्रकार लटकने लगा, जैसे कटहरका बड़ा फल, वह जिस डालमें लटकता था, वहां इसका शिर नीचेको पैर ऊपरको थे, तब वहां उसने फिर एक उपद्रव देखा कि कूवेके बीचमें सांप बैठा है और ऊपर एक मतवाला हाथी खड़ा है, उस हाथीके छः मुह, सफेद और काला रङ्ग और चार पैर हैं, और क्रमसे उसहीकी ओर चला आता है, उस कूवेके ऊपर जो वृक्ष था, उसकी डालियोंमें भयानक अनेक रूपवाली मखियोंका छाता लगा है, उससे बार बार थोड़ा सहत गिरता है, और उसीको खाकर वह मूर्ख ब्राह्मण उस सङ्कटहीमें प्रसन्न होरहा है और उसकी प्यास नहीं बुझती और उसकी यही इच्छा होती है कि मैं सदा यही सहत पीतारहूं। कभी उससे निराश नहीं होता फिर उस ब्राह्मणने देखा कि एक सफेद और एक काला मूसा जिस लताको मैं पकड़े रहा हूं उसे काट रहे हैं, परन्तु तौभी उस ब्राह्मणको जीनेकी आशा न छुटी, भयानक सांप, घोर स्त्री, बनके जन्तु, नीचेवाला सांप ऊपरवाला हाथी, लता काटनेवाले दोनों मूसे और मधुमक्खी इन महाभयोंको भूलकर भी वह ब्राह्मण केवल सहतके स्वादको लेने लगा, और जीनेसे निराश

न हुआ और इस ही प्रकार कूवेंरूपी संसारमें पड़ा रहा।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ विदुर! कष्टकी बात है कि वह ब्राह्मण महाकष्टमें पड़ा कहो वह वहां कैसे प्रसन्न और तृप्त होता था, वह देश कहां है, जहां ब्राह्मण धर्म्म सङ्कटमें पड़ा था, वह उस दुःखसे कैसे छूटेगा, मुझे उसके ऊपर बहुत कृपा आई है, तुम यह मुझसे सब वर्णन करो।

विदुर बोले, हे महाराज! मोक्ष जानने-वाले महात्माओंने यह वृत्तान्त कहा है, इससे मनुष्यका परलोकमें कल्याण होता है, हमने जो भयानक बन कहा वही घोर संसार है, जङ्गली जन्तु कहे वे सब रोग हैं, बड़ी शरीर-वाली जो स्त्री कही वह यौवन और रूप नाश करनेवाला बुढ़ापा है, जो सांप कहा सो शरी-रमें नीचे रहनेवाला सांप काल है वह सब शरीर धारियोंका नाश करता है उस कूवेंमें जो घास लटकती है जिसको मनुष्य पकड़कर लटक रहा है, वही अवस्था जीनेकी आशा हैं, जो इस वृक्षको ओर छह मुखवाला हाथी दौड़ा आता है, वही वर्ष है ६ ऋतु उसके मुख और चार महीने उसके पैर हैं और जो मूसे उसे वृक्षको काट रहे हैं, पण्डित उन्हे दिन रात कहे हैं, इसमें जो सहतकी मक्खी है वे अभिलाष हैं जो सहतकी धार बहती है वोही इच्छाओंके रस हैं, मनुष्य उसीमें डूबता और उछलता है पण्डितोंने इस प्रकार इस संसार चक्रका वर्णन किया है इसी प्रकार पण्डित लोग संसारकी फांसी काटकर सुख पाते हैं।

६ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! तुम बहुत पण्डित हो तुमने जो मित्रके समान वचन कहे इनको सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ अब तुम कुछ और वर्णन करो।

विदुर बोले, हे राजन्! अब हम इस ही विषयको फिर विस्तारसे वर्णन करते हैं, आप सुनिये इस ही तत्वको जानकर पण्डित लोग संसार बन्धनसे छूट जाते हैं, जैसे मनुष्य बहुत दूरके मार्गको चला जाता है और थक थककर कहीं कहीं बैठ जाता है, हे भारत! इसही प्रकार मनुष्य गर्भवासमें आकर मूर्ख फिर भी उसी बन्धनमें पड़ते हैं और पण्डित लोग उसी बन्धनको काटकर सुख भोगते हैं। जिस संसा-रको बनरूपसे वर्णन किया था, उसीको यहां पर मार्ग कहा है। हे भरतसिंह! चर और अचर जीवोंसे भरा हुआ यह लोक अनेक चक्रके समान है, पण्डित इस संसारकी कभी भी इच्छा नहीं करते, इस जगत्में जिन मनु-ष्योंको संसारमें मन और शरीरके रोग होते हैं, वेही सांप हैं। हे भारत! उन सांपोंसे मनुष्य बार बार दुःख पाता है, और बार बार कर्म्मोंके वशमें होकर फिर वही कर्म्म करता है, उन्हे छोड़नेकी इच्छा नहीं करता है इसीसे मनुष्य सदा मूर्ख बना रहता है, यदि उनसे भी मनुष्य किसी प्रकार बच जांय तो रूप और यौवन नाश करनेवाले बुढ़ापेसे किसी प्रकार नहीं बच सक्ता। शब्द, रूप, रस, गन्ध और अनेक प्रकारके स्पर्शके वशमें होकर मांस और चर्बीके भयानक कीचड़में फसता है, वर्ष, महीने, पक्ष, रात्रि दिन और सन्ध्या हो क्रमसे मनुष्यको रूप और आयुको नष्ट करते हैं, यही समयका विचार है मूर्ख लोग उसे नहीं जानते, ब्रह्माने, पहिले ही सब सुख, दुःख अवस्था बुढ़ापा और रोग लिख दिये हैं, शरीर, रथ, मन, सारथी इन्द्रिय घोड़े बुद्धि और कर्म्म रास है, जो इस रथमें बैठनेवाला अर्थात् जीव उन दौड़ते हुए घोड़ोंके सङ्ग दौड़ता है, वह संसार चक्रमें चाकके समान

घूमता है, जो पण्डित अपनी बुद्धिसे उन घोड़ोंको अपने वशमें रखकर घूमते हुए इस संसार चक्रमें आप स्थिर होता है, और किसी प्रकार मोहमें नहीं पड़ता वह उस घूमनेसे बचता है।

हे राजन्! संसारमें घूमने वालोंको बार बार यही दुःख भोगने पड़ते हैं, इसलिये पण्डित इनको छोड़नेहीका उपाय करे, इसके छोड़नेमें बिलम्ब नहीं करना चाहिये क्योंकि बिलम्ब करनेसे यह वृक्ष बढ़ता ही जाता है।

हे राजन्! जो मनुष्य इन्द्रियोंको वशमें करके क्रोध और लोभको छोड़ देता है, सन्तोष करके सत्य बोलता है वही शान्ती और सुख पाता है।

हे महाराज! यह शरीर यमराजका रथ है इसमें बैठकर मूर्ख लोग पागल होजाते हैं और उनही दुःखोंमें पड़ते हैं। जिनमें आप पड़े हैं। पुत्र, राज्य और मित्रोंका नाश होना ये सब दुःख उन्हें ही होते हैं। जो बहुत लोभ करते हैं, इसलिये पण्डितको उचित है कि अपने दुःखोंको औषधि करे संसाररूपी रोगकी औषधि मनुष्य अपने मनको वशमें करके करे। इसकी औषधी ब्रह्मज्ञान ही है, मनुष्यको जैसे मनकी स्थिरता शक्ति उसको जैसे छुड़ा सक्ती है तैसे बल, धन, मित्र और बन्धु बान्धव नहीं छुड़ा सकते। इसलिये आप अपने मनको स्थिर करके सावधान हूजिये। इन्द्रियोंको वशमें रखना, त्याग और सावधानी ये तीनों ब्रह्मके घोड़े हैं, जो मनुष्य इन घोड़ोंको लगामको पकड़कर शीलरूपी रथमें बैठकर चलता है, वह मृत्युके डरको पार होके ब्रह्मलोकको चला जाता है।

हे पृथ्वीनाथ! जो सब मनुष्योंको अभय दान करनेसे मनुष्यको फल मिलता है वह सहस्रों यज्ञ और व्रत करनेसे भी नहीं मिलता है ऐसी कोई बात नहीं है जो निश्चय करके मनुष्यको हित कही जाय परन्तु सब मनुष्योंके लिये मरना ही अहित है इसलिये पण्डित मनुष्यको उचित है, कि सदा सब प्राणियों पर कृपा करे परन्तु मूर्ख मनुष्य अनेक प्रकारके मोह और बुद्धिके जालमें फंसकर संसारमें घूमते हैं, परन्तु पण्डित संसारको छोड़कर सनातन ब्रह्मको प्राप्त होते हैं।

७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! कुरुकुलराज धृतराष्ट्र! विदुरके ऐसे बचन सुन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर मूर्च्छा खाकर पृथ्वीमें गिर पड़े। राजाको पृथ्वीमें पड़े और मूर्च्छित देखकर सब बान्धव, श्रीकृष्ण, द्वैपायन वेदव्यास, विदुर, और सञ्जय आदि सब मन्त्री उनके ऊपर ठंडा जल छिड़कने लगे बहुत देरमें बहुत यत्न करनेसे राजा धृतराष्ट्र चैतन्य होकर पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर बहुत देर तक रोते रहे फिर कहने लगे कि मनुष्य जन्मको धिक्कार है, विशेष कर गृहस्थोंको क्योंकि बार बार गृहस्थोंको दुःख ही भोगना होता है देखो पुत्र, धन, जाति और संबन्धियोंका नाश होनेसे दुःख और अग्निके समान महादुःख भोगने पड़ते हैं। जिनको सहते सहते शरीर जलने लगते और बुद्धिका नाश होजाता है, उस समय जीनेसे मरना अच्छा समझते हैं आज प्रारब्ध उलटी होनेसे मुझे भी वैसाही भयानक दुःख हुवा है मुझे निश्चय होता है, कि बिना प्राण छोड़े इस दुःखके पार नहीं जा सकूंगा, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ व्यास मुने! अब मैं अपना प्राण छोड़ दूंगा।

महात्मा वेद जाननेवालोंमें श्रेष्ठ अपने पिता व्यासमुनीसे ऐसा कहकर राजा धृतराष्ट्र फिर शोकसे व्याकुल होकर अपने पुत्रोंका ध्यान करते हुए मूर्खके समान चुप होकर बैठ गये।

राजा धृतराष्ट्रको पुत्र शोकसे व्याकुल देखकर व्यासमुनि ऐसे वचन कहने लगे।

श्रीव्यासमुनि बोले, हे महाराज महाबाहु धृतराष्ट्र! तुम बड़े बुद्धिमान हो तुमने अनेक कथा सुनी है अब हम तुमसे जो कहते हैं सो सुनो, हे शत्रुनाशन! जगत्में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे तुम नहीं जानते इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि तुम जगत्की अनित्यताको जानते हो, हे भारत! इस अनित्य जीव लोकमें जीव अपने समय तकही निवास करता है तब तुम जीने और मरनेका शोच क्यों करते हो?

हे राजन्! तुम्हारे देखते ही देखते समयके अभावसे यह बैर उत्पन्न होगया और दुर्य्योधन उसका कारण होगये, हे राजन्! जो बात अवश्य होनेवाली होती है वह कभी नहीं रुक सक्ती है कुरुकुलमें युद्ध होने ही वाला था, इसलिये तुम शोच क्यों करते हो, उस युद्धमें जो वीर रहे थे सो सब स्वर्गको गये।

हे महाबाहो! सब बातोंको जाननेवाले महात्मा विदुरने शांतिके लिये बहुत यत्न भी किये परन्तु कोई मनुष्य बहुत दिनतक बहुत यत्न करनेपर भी प्रारब्धको नहीं रोक सक्ता हमने जो देवतोंकी बात अपने कानसे सुनी थी सो तुमसे कहते हैं, उसके सुननेसे तुम कुछ सावधान होगे।

पहिले मैं एकदिन बहुत शीघ्रतासे सावधान होकर इन्द्रकी सभामें गया वहां जाकर सब देवतोंको इकट्ठे देखा, हे पापरहित! वहां नारद आदि सब देव ऋषि भी बैठे थे, मैंने वहां पृथ्वीको भी देखा पृथ्वी कुछ कामके लिये देवतोंके यहां गई थी, उसने सब देवतोंसे कहा तुम लोगोंने जो मेरे कामके लिये कहा था, और धर्म्मसे जो प्रतिज्ञा की थी, उसे सत्य करो।

पृथ्वीके ऐसे वचन सुन देवतोंकी सभामें बैठे हुए जगत् वन्दित विष्णु हंसकर पृथ्वीसे बोले, हे पृथ्वी! जो धृतराष्ट्रके सौ बेटोंमें बड़ा दुर्य्योधन है, वह तुम्हारे कामको सिद्ध करेगा, उस ही राजासे तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे; उसके लिये सब महाशस्त्रधारी राजा कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे होकर एक दूसरेको मारेंगे। हे देवि! उस ही युद्धमें तुम्हारा भार उतरेगा, इसलिये तुम अपने घरको जावो और सब जगत्को धारण करो।

हे राजन्! तुम्हारा बेटा दुर्य्योधन जगत्का नाश करनेके लिये गान्धारीके पेटसे उत्पन्न हुआ था, वह क्रोधी, चञ्चल, किसीको बातको न माननेवाला और कलियुगका अवतार था, प्रारब्धसे उसके भाई उसका मामा शकुनी और परममित्र कर्ण भी वैसे ही उत्पन्न होगये थे, जब जैसा राजा होता है, तब उसके सेब मनुष्य भी वैसे ही होजाते हैं। सब राजा जगत्के नाश करनेहीको इकट्ठे हुए थ।

जब राजा धर्म्मात्मा होता है; तब अधर्मी भी धर्म्मात्मा होजाते हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं कि स्वामीके दोष और गुण नौकरमें भी आजाते हैं।

हे राजन्! हे महाबाहो! दुष्टराजा दुर्य्योधनके वशमें होकर तुम्हारे सब बेटे मारे गये कुरुकुलका इस प्रकार नाश होगा, यह बात हमसे वेदका तत्व जाननेवाले नारद पहिले ही कह गये थे।

हे पृथ्वीनाथ! तुम्हारे पुत्रोंके ही देखते नाश हुआ इसलिये तुम उनका शोच मत करो क्यों कि शोकसे कुछ होता नहीं।

हे भारत! तुम्हारे दुष्ट पुत्रोंने इस जगत्का नाश किया अब भी पाण्डव तुम्हारा कुछ अपराध नहीं करेंगे, हे राजन्! तुम्हारा कल्याण हो युधिष्ठिरकी राजसूय यज्ञमें नारदने ये सब पहिले ही कह दिया था, कि कौरव और पाण्डव परस्पर लड़के मर जांयगे, इसलिये जो तुम्हें करना होय सो करलो।

नारदके ऐसे वचन सुन पाण्डवोंने उस ही समय बहुत शोच किया था, हमने ये सब गुप्त

बात तुमसे कहो अब तुम ये सब प्रारब्धसे ह्नआ ऐसा बिचार कर शोक छोड़ दो, सब पर कृपा करो। हे महाबाहो! हमने युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें ये सब समाचार पहिले हो सुना था जब मैंने यह गुप्तबात युधिष्ठिरसे कही थी, तभीसे उन्होंने शान्तिके लिये बह्नत यत्न किया परन्तु प्रारब्ध बड़ी हो बलवान है इसे कोई कभी नांघ नहीं सकता सब चर और अचर यमलोकको जायगे तब तुम ऐसे धर्म्मात्मा बुद्धिमानोंको प्राणियोंकी गति और अगति जानकर भी ऐसा शोच होता है तुमको बार बार शोकसे व्याकुल देखकर राजा युधिष्ठिर प्राणतक भी दे सक्ते हैं।

हे राजेन्द्र! जो बीर राजा युधिष्ठिर सदा पशुवोंपर भी कृपा करते हैं, सो तुम्हारे ऊपर कृपा क्यों न करेंगे? हे भारत! मेरे कहनेसे प्रारब्धके वश और पाण्डवोंकी कृपासे तुम प्राणोंको धारण करो। हे तात! ऐसा करनेसे जगत्में तुम्हारी बह्नत कीर्त्ति होगी। धर्म्म, अर्थ और तपकी बह्नत बृद्धि होगी, तुम इस आगके समान जलते ह्नए पुत्र शोकको बुद्धिरूपी पानीसे बुझा देवो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महातेजस्वी व्यासके ऐसे बचन सुन राजा धृतराष्ट्र थोड़ी देरतक शोच करके ऐसा बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! मैं महाशोक जालमें फसा ह्नं इसलिये मुझे कुछ ज्ञान नहीं होता मैं बार बार मूर्च्छित होता ह्नं, हे देव! अब आपके बचन सुनकर मैं शोक छोड़ने और मन सावधान होनेका यत्न करूंगा।

राजा धृतराष्ट्रके ऐसे बचन सुन सत्यवतीके पुत्र व्यास मुनि वहीं अन्तर्धान होगये।

८ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वैशम्पायन मुने! जब धृतराष्ट्रके पास भगवान वेदव्यास चले गये, तब उन्होंने क्या किया कुरुकुल श्रेष्ठ महात्मा धर्म्मराज युधिष्ठिरने तथा बचे ह्नए कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतबर्म्माने क्या किया सो कहिये, हमने अश्वत्थामा और श्रीकृष्णके परस्पर शापकी कथा सुनी इसके पश्चात् सञ्जयने राजा धृतराष्ट्रसे क्या कहा सो कहिये?।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब राजा दुर्य्योधन मारे गये और सब सेनाका नाश हो चुका तब सञ्जय शोकसे व्याकुल होकर राजा धृतराष्ट्रके पास आकर कहने लगे।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अनेक देशोंके राजा कुरुक्षेत्रमें इकट्ठे होकर तुम्हारे पुत्रोंके सहित मारे गये अनेक बार पाण्डवोंने पृथ्वी मांगी तो भी दुर्य्योधनने बैरका अन्त करनेके लिये ये सब जगत्का नाश कराया, अब आप क्रमसे बेटे, पोते, पिता, बन्धु और बान्धवोंके प्रेत कर्म्म कोजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सञ्जयके ऐसे भयानक बचन सुनते हो राजा धृतराष्ट्र मरे ह्नए मनुष्यके समान मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े।

राजाको पृथ्वीमें पड़ा देख सब धर्म्म जाननेवाले बिदुर उनके पास आकर ऐसा बचन कहने लगे, हे भरतकुल श्रेष्ठ महाराज! आप क्या पृथ्वीमें पड़े हैं, उठिये और कुछ शोच न कीजिये, हे लोकनाथ! जगत्के सब प्राणियोंकी यही दशा होती है, हे राजन्! जगत् पहिले नहीं था, केवल बीचमें होगया है और अन्तमें भी नहीं रहेगा, इसलिये उसका शोच क्या करना? कोई रोनेसे मरे ह्नएके सङ्ग नहीं जाता न रोनेसे मरा ह्नआ मिलता हो है, इसलिये आप शोच क्यों करते हैं? कभी ऐसा होता है कि मनुष्य बिना युद्ध किये हो मर जाता है और कभी युद्ध करनेसे भी बचता है परन्तु

काल आनेसे कोई नहीं बचता, कालका कोई मित्र या शत्रु नहीं है, इसलिये वह सबहीका नाश करता है, जैसे वायु तिनकोंको उड़ाया करता है ऐसे ही कालके वशमें होकर सब प्राणी घुमा करते हैं, सबको वहीं जाना है परन्तु जिसका काल पहिले आता है, वही पहिले जाता है इसमें शोचनेका क्या काम है?

हे राजन्! जिन युद्धमें मरेहुए महात्माओंका आप शोच करते हैं, वे शोचने योग्य नहीं थे, वे सब स्वर्गको गये चत्रियोंको युद्धमें मरनेसे जो गति मिलती है सो दक्षिणा सहित यज्ञ अनेक तप करनेसेभी नहीं मिलती। उन वीरोंने शत्रुओंकी शरीररूपी अग्निमें बाणरूपी आहुती छोड़ी और तेज बाणोंको सहा। हे राजन्! चत्रियोंके लिये युद्धसे बचकर और कोई स्वर्गका मार्ग नहीं है सब महात्मा वीर चत्री उत्तम स्वर्गको गये इसलिये उनका शोच नहीं करना चाहिये। हे भरतसिंह! आप अपनी बुद्धिसे अपना धीरज बांधिये क्यों कि शोचसे व्याकुल होकर आप कुछ न कर सकेंगे।

९ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! विदुरके ऐसे वचन सुन राजा धृतराष्ट्र वाहन तैयार होनेकी आज्ञा देकर फिर ऐसा बोले, गान्धारी और कुन्तीके सहित कुरुकुलकी सब स्त्री और जितनी स्त्रियां वहां हैं सबको हमारे पास लिआओ ऐसा कहकर राजा धृतराष्ट्र शोकसे व्याकुल होकर मूर्खके समान उठे और विदुरका हाथ पकड़के वाहनकी ओर चले, अपने पतिकी आज्ञासे पुत्रोंके शोकसे व्याकुल गान्धारी, कुन्ती आदि सब स्त्रियोंके सहित राज सभामें आई वे सब शोचसे व्याकुल हो एक दूसरीको पूछती हुई बहुत ऊंचे स्वरसे रोने लगी, तब विदुर उन्हें समझाने लगे। परन्तु समझाते समझाते आप उनसे भी अधिक शोकसे व्याकुल होगए उन रोती हुई स्त्रियोंको वाहनमें बिठला कर बाहरको ले चले, तब सब राजमहलोंमें महा हाहाकार शब्द होने लगा, बालकसे बूढ़े तक सब शोकसे व्याकुल होगये जिन स्त्रियोंको कभी देवतोंने भी नहीं देखा था, वेही स्वामियोंके मरनेसे साधारण मनुष्यके आगे कुरुक्षेत्रको चलीं, किसीने अपने बाल खोल दिये और कोई अपने गहने उतार उतार कर फेंकने लगीं, सब स्त्री एक एक धोती पहिनकर अनाथके समान घरसे निकलीं जैसे हाथियोंके न रहनेसे उनकी हथनी रोती हुई गुफाओंसे निकलती हैं ऐसे ही सब स्त्रीं सफेद पर्व्वतके शिखरके समान घरोंसे निकलीं उस समय रोती हुई स्त्रियोंके झुण्ड चारों ओर नगरमें दीखते थे कोई दूसरीका हाथ पकड़कर भाई, बेटे, पति आदिको रोती थीं उस समय ऐसा जान पड़ता था कि जगत्में प्रलय होगया कोई रोती थी, कोई चिल्लाती थी, कोई ज्ञानशून्य होकर इधर उधरको दौड़ती थी। उस समय उन्हें यह नहीं जान पड़ता था कि हमें क्या करना चाहिये जो स्त्री पहिले सखियोंसे भी लज्जित होती थीं सो निर्लज्ज होकर एक धोती पहिनकर सामान्य मनुष्यके आगे घूमने लगी, तब एक दूसरीको समझाने लगी और एक दूसरीको देखने लगी।

राजा उन सहस्रों रोती हुई स्त्रियोंको सङ्गमें लेकर शोकसे व्याकुल होकर शीघ्रता सहित कुरुक्षेत्रको चले, उनके पीछे चित्र बनानेवाले बनिये और सब जीविकाके लोग चले इस प्रकार महाराज सबको सङ्ग लेकर नगरसे बाहर निकले उस समय कुरुकुलका नाश होनेके पश्चात उन स्त्रियोंके रोनेका घोर शब्द उठा उससे सब जगत् कांपने लगा उस समय ऐसा जान पड़ता था मानों सब जगत् भस्म होगया सब लोग जानते थे कि जब सब जग-

तृका नाश हो चुका उस समय राजभक्त सब नगरवासी शोकसे अत्यन्त ही व्याकुल थे।

१० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब महाराज धृतराष्ट्र नगरसे निकलके एक कोस पहुंचे तब उन्हें कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मा मिले, अन्धे जगत्के स्वामी राजा धृतराष्ट्रको देखके ये वीर रोकर कहने लगे, हे महाराज! आपके पुत्र महा घोर कर्म्म करके अपने सब सहायकोंके सहित इन्द्रलोकको चले गये, हे महाराज दुर्य्योधनकी सेनासे केवल हम ही तीन वीर बचे हैं और आपकी सब सेना मर गई राजा धृतराष्ट्रसे ऐसा कहकर पुत्रशोकसे व्याकुल गान्धारीसे कृपाचार्य्य ऐसे बोले, हे गान्धारी तुम्हारे सब पुत्र निर्भय होकर शत्रुओंका नाश करके अपनी वीर कीर्त्तीको जगत्में स्थापन करके युद्धमें मारे गये। अपने निर्म्मल देह धारण करके अपने शस्त्रोंके बलसे उत्तम लोकमें देवतोंके समान विहार करते हैं, उन वीरोंमें ऐसा कोई न था, जो युद्धसे फिरा हो सब अस्त्रोंसे मारे गये किसीने शत्रुओंके आगे हाथ नहीं जोड़े अर्थात् कोई दीन होकर नहीं मरा, उन महात्माने चत्रियोंके लिये यही गति कही है शस्त्रसे मरना ही परम गति है, इसलिये तुम इनका शोच मत करो। हे रानी! तुम्हारे पुत्रोंके शत्रु पाण्डवोंकी भी वृद्धि नहीं होगी देखो अश्वत्थामाकी सहायतासे हम लोगोंने जो कुछ किया है सो सुनो; जब हम लोगोंने सुना कि तुम्हारे पुत्र राजा दुर्य्योधनको भीमसेनने अधर्म्मसे मारा तब हम लोगोंने डेरोंमें जाकर सबको मारडाला सोते हुए धृष्टद्युम्न आदि सब पाञ्चाल द्रुपदके सब बेटे और द्रौपदीके सब बेटे उसी रातमें मारे गये, इस प्रकार हमने तुम्हारे पुत्रोंके शत्रुका नाश कर दिया अब हम केवल तीनही शेष हैं, इसलिये युद्धमें नहीं खड़े हो सकते, अब हम यहांसे भागते हैं, क्योंकि वीर पाण्डव क्रोधसे व्याकुल होकर इधरहीको बहुत शीघ्र आवेंगे क्योंकि वे लोग वैरको समाप्त करना चाहते हैं, वह यशस्वी लोग हमारे पैरोंके चिन्ह। देखते देखते हमारे पीछे आवेंगे और हमने उनका सर्व्वनाश करदिया है इसलिये हम यहां खड़े नहीं हो सक्ते हैं, हे रानी! अब हमको जानेकी आज्ञा दो हम यहां खड़े नहीं होसकते और तुम भी कुछ शोक मत करो।

हे राजन्! आप भी कुछ शोक मत कीजिये केवल धर्म्म ही कीजिये आप ब्रह्म, चत्री धर्म्म और प्रारब्धकी शरण लीजिये, ऐसा कहकर उन तीनोंने राजाको प्रदक्षिणा करके अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा महा बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रको देखते हुए अपने घोड़ोंको शीघ्र हांकते हुए गङ्गाकी ओरको भागे। फिर गङ्गाके तटपर जाकर तीनों रथोंसे उतरे और घबड़ाकर एक दूसरेसे सम्मती करने लगे फिर तीनों एक दूसरेसे पूछकर तीन ओरको चलेगये, कृपाचार्य्य हस्तिनानरको छूदीक पुत्र कृतवर्म्मा अपने देश अर्थात् द्वारकाको ओर द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा व्याससुनीके आश्रमको चले गये, इस प्रकार ये तीनों वीर महात्मा पाण्डवोंके वैरसे व्याकुल होकर एक दूसरेको ओर देखते हुए तीन ओरको चले गए, जिस समय ये तीनों वीर राजा धृतराष्ट्रसे मिले थे उस समय सूर्य्य अस्त होना चाहते थे, जब अश्वत्थामा व्याससुनिके आश्रम पर पहुंचे तब ही महारथि पाण्डवोंने अपने बलसे वहां जाकर उनको जीत लिया।

११ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय। जब सब सेना मारी गई तब अश्वत्थामाको जीतके धर्म्मराज युधिष्ठिरने सुना कि हमारे बूढ़े पिता हस्तिनापुरसे चले आते हैं, तब पुत्र शोकसे व्याकुल राजा युधिष्ठिर पुत्र शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्रके पासको चले उनके सङ्ग महावीर श्रीकृष्ण सात्यकि और युयुत्सु भो चले उनके पीछे वहां आई हुई पाञ्चालदेशके क्षत्रियोंका स्त्रियोंके सङ्ग शोकसे व्याकुल द्रौपदी भी चली।

राजा युधिष्ठिरने कुररीयोंके समान रोती हुई स्त्रियोंके झुण्डोंको गङ्गाकी ओर जाते हुए देखा वे सब ऊपरको हाथ उठाये राजा युधिष्ठिरकी निन्दा करती अनेक झूठे और कठोर बचन कहती हुई गङ्गाको जाती थीं, उस समय वे सब स्त्रियां ही कहती थी कि, हे महाराज युधिष्ठिर! आपने अपने पिता, भाई, गुरुपुत्र और मित्रोंको मारडाला आपका वह धर्म्म लज्जा कहां चली गई आपने द्रोणाचार्य्य, भीष्म पितामह और जयद्रथको मारकर राज लेनेकी कैसे इच्छा करी?

हे महाराज! महाबलवान अभिमन्यु और द्रौपदीके पांचो पुत्र आदि बन्धु और बान्धवोंका नाश करके अब राज्यलेके क्या सुख भोगियेगा?

महाराज युधिष्ठिर! कुररीयोंके समान रोती हुई उन स्त्रियोंको छोड़ कर आगेको चले और जाकर अपने पिता धृतराष्ट्रको प्रणाम किया। पीछे सब शत्रुनाशन पाण्डवोंने अपना अपना नाम लेके महाराजको प्रणाम किया।

फिर महाराज धृतराष्ट्रने अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले युधिष्ठिरको शोकसे व्याकुल होके बिना प्रेम अपनी छातीसे लगाया फिर महाराज युधिष्ठिरको अपने मीठे बचनसे शान्त करके भीमसेनको मारनेकी इच्छासे ढूढ़ने लगे, उस समय महाराज धृतराष्ट्रके शरीरका तेज ऐसा दोखता था जैसे प्रलयकालमें जगतको जलानेवाली अग्निका; उस समय शोक रूपी वायुके चलनेसे क्रोध रूपी अग्नि भीमसेन वृक्षको जलाने चाहती थी।

महाराज धृतराष्ट्रकी भीमसेनको मारनेकी इच्छा जान कर श्रीकृष्णने भीमसेनको अपने हाथोंसे पकड़ कर उनके आगेसे हटा दिया और एक लोहेकी बनी भीमसेनकी मूर्त्ति राजाके आगे खड़ी करदी महा बुद्धिमान श्रीकृष्णने उनकी इच्छा जान कर पहिले ही यह उपाय कर रखा था।

राजा धृतराष्ट्रने उस मूर्त्तिको भीमसेन जानकर हाथोंमें दबाकर पीस दिया, दश हजार हाथियोंके समान बलवान् राजा धृतराष्ट्र जब उस भीमसेनकी मर्त्तिको तोड़ चुके तब उनका हृदय फट गया और मुहसे खून गिरने लगा फिर जैसे फला हुवा कल्पवृक्ष पृथ्वीमें गिर जाताहै वैसे ही रुधिरमें भीगे राजा धृतराष्ट्र पृथ्वीमें गिर पड़े तब महा विद्वान सञ्जयने उनको पकड़ा और उनको शान्त करनेके लिये कहने लगे कि आप ऐसा मत कीजिये।

तब राजा धृतराष्ट्रका क्रोध शान्त हुआ और शोकसे व्याकुल होकर हा भीम हा भीम कहके रोने लगे।

जब श्रीकृष्णने देखा अब राजाका क्रोध शांत होगया तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीकृष्ण बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! आप कुछ शोच मत कीजिये आपने भीमसेनको नहीं मारा आपने यह लोहेकी बनी भीमसेनकी मूर्त्ति तोड़ी है हमने आपको क्रोधके बशमें देखकर अपने हाथसे खींचकर भीमसेनको मृत्युके मुहसे निकालाहै हे राजशार्द्दूल! जगत्में आपके समान बलवान् कोई नहीं है जो आपके हाथोंके बलको सहसके ऐसा जगत्में कौन है जैसे यमराजके पास जाकर कोई जीता नहीं बच सक्ता तैसेही आपके हाथोंके बोचमें आकर कोई नहीं बच सक्ता इसी लिये

हमने राजा दुर्य्योधनके बनाये हुए भीमसेनकी लोहेकी मूर्त्ति आपके आगे रख दई थी आपका मन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होगया है, अब आपके मनमें कुछ भी धर्म्म नहीं रहा इसलिये भीमसेनको मारना चाहते हैं आपकी यह शक्ति नहीं है जो भीमसेनको मार सके आपके पुत्रोंकी अवस्था नष्ट हो चुकी थी, वह कदापि नहीं जी सक्ते थे, हमने जो पहिले शान्तिके लिये कहा था, उन सबको स्मरण करके शान्त होइये और शोकको दूर कीजिये ।

१२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात् महाराज धृतराष्ट्रके पास शौच कर्म्म करानेके लिये बहुत सेवक आये जब राजा पवित्र हो चुके तब श्रीकृष्ण उनसे बोले, हे राजन्! आपने सब वेद और अनेक शास्त्र पढ़े हैं अनेक पुराण सुने हैं और सब धर्म्म अधर्म्मको आप जानते हैं इस प्रकार महा बुद्धिमान और सब कार्य्योंमें समर्थ होकर भी अपने दोषको बिना विचारे ऐसा क्रोध क्यों करते हैं, हे भारत! शकुनी, द्रोणाचार्य्य, विदुर सञ्जय, और हमने जो आपसे पहिले कहा था सो आपने नहीं किया जब आपने हमलोगोंके रोकने पर भी और पाण्डवों की अपनेसे बल और क्रोधमें तेजमें अधिक जान कर भी इन वचनोंको नहीं ग्रहण किया इसीसे यह आपत्ति पड़ी जो राजा अपनी बुद्धिको स्थिर करके देश और कालके अनुसार सब दोषोंको देखता है जगतमें उसीका कल्याण होता है और जो बार बार कहनेपर भी सुख और दुःखके वचनोंको ग्रहण नहीं करता वह पीछे आपत्तिमें पड़के शोचता है।

हे राजन्! आपने अपनी बुद्धि को नाश कर दिया और केवल दुर्य्योधनके वशमें पड़ गये उसहीके अपराधसे आप इस आपत्तिमें पड़े हैं तब भीमसेन से बैर क्यों करते हैं? आप अपने अपराधको स्मरण करके क्रोधको त्याग कीजिये जिस दुष्टने ईर्षके वशमें होकर द्रौपदीको सभामें बुलाया था भीमसेनने बैर समाप्त होनेके लिये उसे मार डाला।

हे राजन्! आप अपने और अपने दुष्ट पुत्र के कर्म्म को स्मरण कीजिये आपने अपराध रहित पाण्डवों को निकाल दिया था।

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय श्रीकृष्णके ऐसे सच्चे वचन सुनकर महाराज धृतराष्ट्र श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! जो तुम इस समय कहते हो, सो सब ऐसेही है परन्तु पुत्रोंका प्रेम बहुत बलवान है, इससे मेरा धीरज नष्ट होगया था, प्रारब्धहोसे महापराक्रमी पुरुषसिंह भीमसेन आपसे रक्षित होकर मेरे हाथोंके बीचमें नहीं आये अब मेरा सब क्रोध शान्त होगया और अब मुझे कुछ दुःख भी नहीं रहा। इसलिये अब मैं महाबलवान भीमसेनको देखना चाहता हूं, हे कृष्ण! सब राजा और दुर्य्योधन आदि अपने बेटोंके मरनेके पीछे अब मेरा प्रेम पाण्डवोंसे अधिक बढ़ गया है, मैं उनका कल्याण चाहता हूं।

तब महाराज धृतराष्ट्रने रोकर सुन्दर शरीरवाले भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेवका शरीर स्पर्श किया।

१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात् महाराज धृतराष्ट्रकी आज्ञासे श्रीकृष्णके सहित पांचो पाण्डवोंने गान्धारीके पास गये।

तब पुत्रशोकसे व्याकुल निन्दारहित गान्धारीने शत्रुरहित युधिष्ठिरको आते हुए देखकर शाप देनेकी इच्छा करी।

गान्धारीके मनमें पाण्डवोंकी ओरसे पाप जानकर भगवान सत्यवती पुत्र व्यास आये भगवान व्यासने ये सब समाचार अपने आश्रमहीमें ज्ञाननेत्र और शुद्ध मनकी शक्तिसे जान लिये थे अनन्तर भगवान व्यास पवित्र सुगन्धसे भरे गङ्गाजलको स्पर्श करके मनके समान शिघ्र चलकर उस स्थानमें आए और आकर महातपस्वी वेदपाठी व्यासने शान्ति करनेके लिये गान्धारीसे ऐसे वचन कहे।

हे गान्धारी! तुम शान्त हो पाण्डवोंके ऊपर क्रोध मत करो, और हमारे वचन सुनो जिस समय विजयकी इच्छासे महाराज दुर्य्योधनने तुमसे कहा था कि, हे माता! मैं शत्रुओंसे युद्ध करनेको जाता हूं, तुम हमारे जयकारकी बात करो इस प्रकार १८ वीं बार मांगनेपर भी तुमने बार बार यही कहा था, कि जिधर धर्म्म होगा उधर ही बिजय होगी सो तुम्हारी बात झूठ नहीं हुई तुमको इस समय भी वैसे ही शान्त रहना चाहिये इस घोर युद्धमें पाण्डवोंने अनेक राजोंको मारकर बिजय पाई है, इससे यही निश्चय होता है, कि इस युद्धमें बिजयका मूल धर्म्महो था, तुम पहिले बहुत ही क्षमा करनेवाली थी, सो अब क्षमा क्यों नहीं करती हो?

हे धर्म्म जाननेवाली गान्धारी! हे सत्य बचन कहनेवाली! तुम अधर्म्मको छोडो, तुम अपने कहे हुए उस बचनको स्मरण करो कि जहां धर्म्म है वहां विजय होगी अब तुम क्रोधको छोड़ दो और ऐसी बुद्धिको दूर करो।

गान्धारी बोली, हे भगवन्! मैं पाण्डवोंकी निन्दा नहीं करती और न उनका नाश करना चाहती हूं परन्तु मेरा मन पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होगया है, इसीसे इतना क्रोध आगया था, जैसे कुन्तीको पाण्डवोंकी रक्षा करनी चाहिये ऐसे ही धृतराष्ट्र और मुझको भी उनके ऊपर कृपा करनी चाहिये दुर्य्योधन, मेरे भाई शकुनी, कर्ण और दुःशासनके अपराधसे यह कुरुकुलका नाश होगया युधिष्ठिर भीमसेन, नकुल और सहदेवने मेरा कुछ अपराध नहीं किया, सब बीर परस्पर लड़कर मर गये, इससे मुझे कुछ दुःख नहीं हुआ परन्तु भीमसेनने दुर्य्योधनको गदायुद्धमें बुलाकर अनेक प्रकारसे युद्ध करते और अपनेसे अधिक विद्वान देखके उनकी नाभीके नीचे गदा मारी और श्रीकृष्ण भी उस अधर्म्मको देखते रहे इसहीको स्मरण करके मुझे बहुत क्रोध आता है और यह भी शोच आता है कि महात्मा धर्म्म जाननेवाले शूरबीर केवल प्राणके भयसे धर्म्मको कैसे छोड़ देते हैं।

१४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! गान्धारीके ऐसे बचन सुनकर डरते हुए भीमसेन उनके पास गये और कहने लगे कि मैंने यह कर्म्म चाहे धर्म्मसे किया, चाहे अधर्म्मसे किया केवल दुर्य्योधनके डरसे अपनी रक्षा करनेके लिये ऐसा किया है। सो तुम क्षमा करो दुर्य्योधन महाबलवान था, उसे युद्धमें धर्म्मसे कोई नहीं जीत सक्ता था, इस ही लिये यह अधर्म्म मैंने किया दुर्य्योधनने भी पहिले महाराज युधिष्ठिरको अधर्म्महीसे जीता था, और हम लोगोंको अनेक दुःख दिये थे, इसी लिये मैंने यह अधर्म्म किया अपनी सब सेनामेंसे केवल बलवान दुर्य्योधनही बच गये थे ये अब हमको न मार डाले इसलिये मैंने ये अधर्म्म किया राजपुत्री रजस्वला द्रौपदीको सभामें बुलाकर जो कुछ बचन कहा था, सो सब तुम जानती हो इसलिये मैंने ये अधर्म्म किया दुर्य्योधनको बिना जीते हम समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीके राजा नहीं बन सकते, इसलिये मैंने यह अधर्म्म किया।

द्रौपदीको अनेक बचन कहनेपर भी दुर्य्योधन शान्त न हुआ और उसने सभाके बीचमें

द्रौपदीको अपनी बांई जांघ दिखलाई उस दुष्टको हम चारों भाई उस ही समय मार डालते परन्तु धर्म्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञाके वशमें होकर कुछ न कर सके।

हे रानी! इस घोर वैरको दुर्य्योधनहीने बढ़ाया, देखो हम लोगोंने बनमें कैसे कैसे दुःख उठाये इसलिये मैंने अधर्म्म किया।

दुर्य्योधनके मरनेसे युधिष्ठिरको राज्य मिला और हम चारों भाई भी वैर समाप्त करके शान्त हुए।

गान्धारी बोली, हे प्यारे भीमसेन! तुमजो हमारे पुत्रकी प्रशंसा करते हो और कहते हो कि हमने उसको मारा सो तुमने इतना ही अपराध नहीं किया जिस समय वृषसेनने नकुलके घोड़े मारडाले थे, तब तुमने दुःशासनके शरीरसे निकालकर रुधिर पिया उस घोर दुष्ट अनार्य्योंके करने योग्य कर्म्मको बड़ी प्रशंसा नहीं करते सो अयुक्त कर्म्म तुमने किया।

भीमसेन बोले, अपने शरीरमें और भाईके शरीरमें कुछ भेद नहीं होता जगत्‌में कोई मनुष्यका रुधिर नहीं पी सक्ता और अपने रुधिरकी कथा हो तो क्या है।

हे माता दुःशासनका रुधिर मेरे दांतोंसे भीतर नहीं गया था, अर्थात् मैंने केवल ओठ होंसे लगाकर छोड़ दिया था, तुम इसका कुछ शोच मत करो केवल मेरे हाथ ही रुधिरसे भीगे थे, इस सत्यको केवल यमराज ही जानते हैं, जिस समय युद्धमें वृषसेनके बाणोंसे नकुलके घोड़े मारे गये और तुम्हारे पुत्र बहुत प्रसन्न हुए तब मैंने उनको डरानेके लिये ही यह कर्म्म किया था, जिस समय जूवा खेलनेके पीछे दुःशासनने द्रौपदीके बाल पकड़कर खींचे थे, और मैंने क्रोधसे भरकर प्रतिज्ञा कर दी थी वही बात मेरे हृदयमें बनी रही मैं उस प्रतिज्ञाको बिना पूर्ण किये सदाको क्षत्रियोंके धर्म्मसे नष्ट होजाऊंगा, इसलिये मैंने ये यह कर्म्म किया।

हे गान्धारी! तुमने पहिले अपने पुत्रोंको हमारा अपराध करते देखकर भी न रोंका और अब हमपर दोष लगाती हो, सो यह दोष लगाना वृथा है।

गान्धारी बोली, हे भीम तुमने बूढ़े राजाके सौ पुत्रोंको मार डाला जिसने तुम्हारा कम अपराध किया था, उस एकको भी क्यों न छोड़ा हम दोनों बूढ़े और अन्धोंका राज्य भी छिनगया और लाठीके समान एक सन्तान भी न रही यदि तुम धर्म्मसे मेरे सब पुत्रोंको मारकर मेरे पास आते तो मुझे इतना दुःख न होता।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, फिर बेटे और पोतोंके शोकसे व्याकुल गान्धारीने क्रोधमें भरकर पूंछा की राजा युधिष्ठिर कहां हैं।

तब रानीके महाराज युधिष्ठिर डरसे कांपते हुए हाथ जोड़कर उनके पास गये और इस प्रकार मीठे बचन बोले, हे माता! तुम्हारे पुत्रोंको मारनेवाला सब जगत्‌के नाश करनेका मूल कारण युधिष्ठिर मैं ही हूं, निश्चय ही मैं तुमारा अपराधी हूं इसलिये मुझे शाप दो मुझे ऐसे मित्रोंके मरनेके पीछे राज्य धन और जीनेसे कुछ प्रयोजन नहीं है, मैं बड़ा मूर्ख और मित्रोंका द्रोही हूं।

राजा युधिष्ठिरको डरे देख और उनके ऐसे बचन सुन गान्धारीने कुछ न कहा केवल श्वास लेने लगी जिस समय महाराज युधिष्ठिर डरसे कांपते हुए उनके पैरोंपर गिर पड़े तब धर्म्म जाननेवाली गान्धारीने उन्हें अपने कपड़ोंके भीतरसे अंगुली दिखाई उसी समय सुन्दर नखूनवाले महाराज युधिष्ठिरके नखून बिगड़ गये, महाराजको यह दशा देखके अर्जुन श्रीकृष्णके पीछे जाकर छिप गये।

पाण्डवोंको इधर उधर छिपते देख गान्धारीका क्रोध शान्त हुआ। फिर उनको माताके समान समझने लगी।

फिर गान्धारीकी आज्ञा लेकर येसब वीर माता कुन्तीके पास गये जिस समय वीर पाण्डव अपनी माताके पास गये तब पुत्रोंके दुःखसे व्याकुल बहुत दिनोंसे पुत्रोंसे छूटी कुन्ती अपने आंसुओंको कपड़ेसे पोंछती हुई आई और बार बार उनके शरीरोंको स्पर्शकरके अनेक प्रकारके अस्त्रोंसे कटे हुए। शरीरोंको देखने और छूने लगी फिर पुत्ररहित द्रौपदीका शोच करने लगी फिर भूमिमें पड़ी और रोती हुई द्रौपदीको देखा द्रौपदी बोली, हे माता! अभिमन्युके सहित तुम्हारे सब पोते कहां चले गये तुमको बहुत दिनके पीछे यहां आई हुई देखकर भी वे तुमारे पास अभी तक क्यों नहीं आते? बिना पुत्रोंके मैं इस राज्यको लेकर क्या करूंगी?

रोती हुई शोकसे व्याकुल द्रौपदीको उठाकर बड़े बड़े नेत्रवाली कुन्ती समझाने लगी। फिर अपने पुत्र और द्रौपदीके सहित रोती हुई कुन्ती रोती हुई गान्धारीके पास गई।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, यशस्विनी कुन्तीको द्रौपदीके सहित रोते हुए देख गान्धारी बोली, तुम कुछ शोच मतकरो देखो मैं भी कैसे शोकमें पड़ी हुई हूं भयानक समय स्वभावहीसे आगया था, महाबुद्धिमान विदुरने जैसे कहा था, सो सब वैसे ही हुआ, यह कर्म्म अवश्य होनेवाला था, सो समाप्त होगया वे सब युद्धमें मारे गये, उनका सोच करना अब वृथा है जैसे शोकमें तुम पड़ी हो वैसे ही मैं भी पड़ी हूं। तुममें और मुझमें कोई भेद नहीं है और अब तुम्हे हमें समझाने और कौन अवैगा? मेरे ही अपराधसे इस कुलका नाश हुआ।

१५ अध्याय समाप्त।

जल प्रदानिक पर्व्व समाप्त।

आगे स्त्री बिलाप पर्व्व लिखते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जयमेजय! ऐसा कहके गान्धारी चुप हो गई फिर उसने वहीं बैठे बैठे हुवे ज्ञान दृष्टिसे उस युद्धभूमिका देखा, सदा सत्य बोलनेवाली पतिव्रता महाभाग्यवती तपस्विनी गान्धारीने धर्म्मात्मा महामुनि व्यासकी कृपासे उस युद्ध भूमिको देखा। बुद्धिमती गान्धारीने उस वीरोंकी युद्धभूमिको दूरसे इस प्रकार देखा जैसे कोई अपने घरकी वस्तुको देखता है उस भयानक युद्धभूमिको देखकर वीरोंके भी रोंयें खड़े होते थे, उस युद्धभूमिमें हड्डी, बाल, चर्बी, रुधिर, और शस्त्र भरे हुए थे, उस समय उस युद्धभूमिमें मरे हुए हाथी, घोड़े, मरे हुए रुधिरमें भरे हुए मनुष्य दिखाई देते थे, किसीके शरीरका पता भी नहीं था, वह युद्ध भूमि हाथी, घोड़े, मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दसे भर गई चारों ओर शियार बगुले और गिद्ध आदि मांस खानेवाले मनुष्य दीखने लगे मनुष्योंका मांस खानेवाले राक्षस कुररी भयानक सियारी और गिद्ध उस युद्धभूमिको देखकर प्रसन्न होने लगे।

तब भगवान् व्यासकी आज्ञासे महाराज, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेव श्रीकृष्ण और बन्धु रहित महाराज धृतराष्ट्रको आगे करके कुरुकुलकी स्त्रियोंको सङ्ग लेकर युद्धभूमिमें गये।

कुरु क्षेत्रमें जाकर पति रहित स्त्रियोंने मरे हुए अपने अपने पति, पिता, पुत्र और भाइयोंको देखा और देखा की वहां उनके शरीरके मांसको कौवे, सियार, गिद्ध, भूत, पिशाच और राक्षस खा रहे हैं उस समय उस युद्धभूमिको उन स्त्रियोंने महाकालके अखाड़ेके समान देखा फिर अनेक बहुत मूल्यवाले वाहनोंसे रोती हुई उतरीं जिन कुरुकुलकी स्त्रियोंने दुःख कभी नहीं देखा था, वे दुःखसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें लोटने लगीं।

उस समय नाथ रहित रोती हुई चेतना रहित दुःखसे व्याकुल रोती हुई पांचाल और कौरवोंकी स्त्रियोंके शब्दसे वह युद्ध भूमि पूरित हो गई।

उस युद्ध भूमिको देखकर धर्म्म जाननेवाली सुबलपुत्री गान्धारी महात्मा श्रीकृष्णको बुलाकर ऐसे वचन बोली।

हे कमल नेत्र कृष्ण! हे माधव! देखो हमारे बेटोंकी स्त्री विधवा होकर बाल खोले कुररीके समान रो रही हैं ये अपने अपने पतियोंके गुण स्मरण करके रो रही हैं ये अपने अपने पति पुत्र और पिताको ढूंढ़ रहीहैं।

यें युद्धभूमिमें अनेक वीर माता और अनेक वीरोंकी स्त्री अपने अपने पुत्र और पतियोंको देख रोरही हैं।

ये देखो पुरुष सिंह कर्ण, भीष्म, अभिमन्यु, द्रोणाचार्य्य, महाराज द्रुपद और महाराज शल्य आदि वीर, जलती हुई अग्निके समान मरे हुवे पड़े हैं।

यह युद्धभूमिमें सोनेके कवच निष्टमणि, वीरोंके बाजूबन्द, अङ्गूठी, माला, वीरोंके हाथसे टूटे हुवे सांगो परिघ, खड्ग अनेक प्रकारके तेजवान धनुष पड़े हैं।

कहीं मांस खानेवाले पक्षी प्रसन्न होकर बैठे हैं कहीं खेल रहे हैं और कहीं सुखसे सो रहे हैं। हे वीर! हे भगवन्! हे जनार्दन! उनको देखकर मेरा हृदय शोकसे जला जाता है। इस पाञ्चाल और कुरुकुलके नाशसे हमे ऐसा जान पड़ता है, कि सब जगत्का नाश हो गया।

देखो इन वीरोंके रुधिरमें भीगे शरीरों सहस्रों गिद्ध आदि पक्षी खा रहे हैं, कहीं कोई गिद्ध किसी वीरका पेट खींचे लिये जाते हैं।

जयद्रथ, कर्ण, भीष्म और अभिमन्यु आदि वीरोंकी मृत्यु देखकर किसे शोच न होगा। जिनको कोई नहीं मार सक्ता था, आज उनको चेतन्यरहित निरखकर मनुष्यके समान मरा हुआ देखकर कौवे, सियार और गिद्ध खारहे हैं।

ये सब वीर क्रोधके वशमें होकर दुर्य्योधनकी आज्ञासे युद्धमें मारे गये, ये पुरुषसिंह वीर इस समय जलती हुई अग्निके समान पृथ्वीमें पड़े हैं।

जो पहिले कोमल बिछौनोंपर सोते थे सो आज पृथ्वीमें मुह फैलाये पड़े हैं, पहिले जो सदा भाटोंके मुखसे स्तुति सुनकर प्रसन्न होते थे, वे आज अनेक प्रकारके भयानक सियारियोंके शब्द सुन रहे हैं जो पहिले यशस्वी वीर शरीरमें चन्दन और अगर लगाकर पलङ्गपर सोते थे सो आज धूलमें लोटते पृथ्वीमें पड़ेहैं उनके भूषणोंको घोर शब्द करते युद्धमें सियार और कौवे इधर उधर खिच रहे हैं, ये अभिमानी वीर अबतक भी तेजवाण खड्ग और निर्म्मल गदा इस प्रकार ले रहे हैं जैसे जीते हुए लिये रहते थे, अनेक सुन्दर वीरोंके हाथोंको मांस खानेवाले जन्तु इधर उधर लिये घूमते हैं, इस समय भी उनका तेज सूर्य्यके समान दिखाता है, कोई परिघके समान सुन्दर हाथवाले वीर गदाको छातीसे लगाये युद्धकी ओर मुख किये इस प्रकार सोते हैं, जैसे अपनी प्यारी स्त्रीके सङ्ग सोते थे, किसी वीर को कवच विमल शस्त्र धारण किये देख और उन्हें जीता जान कोई मांस खानेवाला जन्तु उनके पास नहीं जाने सक्ता। किसी किसी महात्मा वीरको मांसभक्षी वीर खिच रहे हैं और उनकी सोनेकी माला इधर उधर फैली जाती है ये देखो ये भयानक सियार महात्मा वीरोंके गलेसे हार निकालकर इधर उधर खींचे फिरते हैं।

जो स्त्री पहिले समयमें रात्रिके पिछले पहरमें भाटोंके मुखसे स्तुति सुनकर जागती थी और जो अनेक पूजा और शिक्षासे युक्त थी

वेही आज शोक और दुःखसे व्याकुल होकर और स्त्रीके समान रो रहो हैं, हे केशव ! हे वृष्णि कुल शार्द्दूल ! इन सुन्दर स्त्रियोंके सूखते हुवे कोमल मुख इस समय लाल कमलके समान दीखते हैं, ये कुरुकुलकी स्त्री रोना बन्द करके अपने अपने पतियोंके पास बैठी हैं, ये दुःख और क्रोधसे व्याकुल कौरवोंकी स्त्रियोंके मुख प्रातःकालके सूर्य्यसे सोना और ताम्बेके समान लाल होगये हैं ।

हे कृष्ण ! ये गोरे रङ्गवाली (१६) सोलह वर्षकी दुर्य्योधनकी उत्तम स्त्रियोंके झुण्ड एक साड़ी पहिने दुःखसे व्याकुल होरही हैं, इनका भयानक रोना सुनकर और एक दूसरीको समझाते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है ये बहुत समयतक रोकर ऊंचे सांस लेकर और दुःखसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़ी हैं मानों अभी मर जांयगी ।

कोई अपने पतियोंका शरीर देखकर रोती है, कोई कोमल हाथोंसे शिर पीट रही है ।

इस समय यह युद्धभूमि कटे हुए शिर हाथ और शरीरोंसे पूर्ण दीखती है ।

ये देखो ये स्त्री शरीर रहित शिर और शिररहित शरीरोंको देखकर मूर्च्छित हो-रही हैं ।

कहीं कोई स्त्री दुःखसे व्याकुल होकर शरीरमें शिर लगाकर देखती है और कहती है कि यह शिर इनका नहीं है ।

कोई बाणोंसे कटे हुवे हाथ, पैर और जांघ मिलाकर दुःखसे व्याकुल होरही हैं ।

कोई कुरुकुलकी स्त्री स्यार और पक्षियोंसे खाये हुवे शिर हाथमें लेकर अपने पतियोंको नहीं पहिचानती ।

हे मधुसूदन ! कोई शत्रुओंके हाथसे मरे भाई, पुत्र और पतियोंको पृथ्वीमें पड़ा देख हाथोंसे शिर पीट रही हैं, इस समय यह रुधिर और मांसके कीचड़से भरी कटे हुवे खड्गके सहित हाथ और कुण्डल सहित शिरोंसे ऐसी शोभित पूर्ण होगई है कि जानने योग्य नहीं रही ।

हे यदुकुलश्रेष्ठ ! यह भूमि मरे हुए शरी-रोंसे भर गई है ये निन्दारहित स्त्री दुःख भोगने योग्य नहीं थी परन्तु दुःख भोग रही हैं । यह युद्धभूमि इस समय इन मरे हुए शरीरोंसे ऐसी पूर्ण होगई जैसे तारागणसे रात्रिमें आकाश पूर्ण होता है इस समय महा-राज धृतराष्ट्रके बेटोंकी थोड़ी अवस्थावाली और सुन्दर बालोंवाली स्त्रियोंके अनेक झुण्ड इधर उधर घूमते फिरते हैं मेरे लिये इससे अधिक दुःख और क्या होगा ? मैं जो इन स्त्रियोंके ऐसे रूप देखती हूं इससे निश्चय होता है कि मैंने पहिले जन्ममें महा अपराध किया है ।

हे कृष्ण ! मेरे सब बेटे और सब पोते मारे गये और इससे और अधिक दुःख क्या होगा ?

श्रीकृष्णसे ऐसा कहकर गान्धारी रोने लगी और उसने मरे हुवे बेटोंको देखा ।

१६ अध्याय समाप्त ।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय ! दुर्य्योधनको मरा हुआ देखकर गान्धारी शोकसे व्याकुल होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़ी जैसे केलेका वृक्ष टूट कर गिर पड़ता है, फिर थोड़े समयमें चैतन्य होकर रुधिरसे भीगे हुए दुर्य्योधनको उठाकर हा पुत्र ! हापुत्र ! कह कर रोने लगी इस समय गान्धारी की सब इन्द्री शोकसे व्याकुल हो रही थीं, फिर हार आदि भूषणोंसे युक्त हृदयको आंशुओंसे भिगोती हुई शोकसे व्याकुल होकर पास खड़े हुए श्रीकृष्णसे ऐसे बचन बोली ।

हे कृष्ण ! जब ये क्षत्रियोंका नाश करने-वाला युद्ध होनेवाला था, तब सब राजोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधनने हाथ जोड़ कर मुझसे कहा था,

हे माता! अब ये घोर युद्ध होनेवाला है, तुम हमारे बिजयके लिये आशिर्व्वाद करो।

मैंने इस आनेवाली आपत्तिको पहिले ही जान लिया था तब मैंने कहा कि, हे पुरुषसिंह! जहां धर्म्म है वहांही विजय होगी तुम युद्धमें कुछ भूल मत करना और पीछे युद्धमें शस्त्रसे मरकर देवतोंके लोकको जावो।

हे कृष्ण! मैंने इससे पहिलेही यह कह दिया था, इसलिये इसका मुझे कुछ शोच नहीं है परन्तु बन्धु रहित दीन राजा धृतराष्ट्रका शोच करती हूं।

हे कृष्ण! य देखो महा बलवान् सब शस्त्र विद्या जाननेवाले महा क्रोधी वीर श्रेष्ठ दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें सोते हैं देखो समयकी गति कैसी कठिन है कि जो शत्रुनाशन दुर्य्योधन पहिले राजोंके आगे चलते थे, सो आज धूलमें लिपटे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं हमें यह निश्चय होता है कि वीर दुर्य्योधन साधारण गतिको नहीं प्राप्त हुवे य अवश्य ही स्वर्ग लोकको गये, क्योंकि इस समय तक भी युद्धहीको और सुख करके सोते हैं जिस वीरके पास पहिले उत्तम उत्तम स्त्री रहती थीं, आज उसे वीर शय्यापर सोते हुए देख भयानक सियारी पास बैठी हैं जिसके पास पहिले राजा लोग बैठते थे, आज उसहो मरे हुए पृथ्वीमें पड़े दुर्य्योधनके पास गिद्ध बैठे हैं पहिले समयमें उत्तम पङ्खेसे हवा की जाती थी, आज उस होको कौवे अपने पंखोंकी हवासे शीतल कर रहे हैं ये महा बलवान् सत्य पराक्रमी महाबाहु दुर्य्योधनको युद्धमें भीमसेनने ऐसे मारा जैसे सिंह हाथीको मार डालता है।

हे कृष्ण! ये देखो वीर दुर्य्योधन भीमसेनके हाथसे मरकर गदा लिये रुधिरमें भीगे पृथ्वीमें सोते हैं देखो किसी दिन ग्यारह अक्षौहिणी सेना इनके सङ्ग थी सो आज मर कर पृथ्वीमें पड़े हैं जो महा धनुषधारी महा बलवान् दुर्य्योधन भीमसेनके हाथसे मर कर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे सिंहके डरसे शार्द्दूल इस मूर्ख बालकने विदुर और महाबाहु धृतराष्ट्रका निरादर किया था, इससे इस अवस्थाको पहुंचा जिसके वशमें शत्रुरहित पृथ्वी १३ वर्ष तक रही थी वही महाराज दुर्य्योधन आज पृथ्वीमें पड़े हैं।

हे कृष्ण! थोड़े ही दिन हुए कि हाथी घोड़े और गाड़ीसे भरी पृथ्वी राजा दुर्य्योधनकी आज्ञामें चलती थी, सो आज हाथी घोड़े और बलसे हीन होकर दूसरेकी आज्ञामें चलती है अब हमें जीनेसे क्या सुख है देखो अनेक स्त्रियां मरे हुए वीरके पास बैठी हुई रोरही हैं।

हे कृष्ण! ये देखो उत्तम बाल और पतली कमरवाली लक्ष्मणकी माता दुर्य्योधनकी गोदमें लिये सोनेकी देवीके समान बैठी हैं जिस समय राजा जीते थे, तब यह सुन्दरी उनके पास बैठ कर बिलास करती थी मैं अपने बेटे पोतेको मरा हुवा देखती हूं तो भी मेरे हृदयके सौ टुकड़े नहीं होते, ये देखो निन्दा रहित लक्ष्मणकी माता अपने पुत्रका माथा सूंघती हैं और दुर्य्योधनको हाथसे पोंछती हैं ये इस समय अपने पति और पुत्रका सोचकर रही है ये बड़े नेत्रवाली रानी अपने दोनों हाथोंसे शिर पीटती है और दुर्य्योधनके सन्मुख गिरती है ये कमल पर गिरी दूसरे कमलके समान दिखती है कभी अपने पुत्रको पूंछती है। यदि वेद और श्रुति सब सत्य है तो राजा दुर्य्योधनने अवश्यही अपने बाहु बलसे स्वर्गको जीत लिया।

१७ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये देखो भीमसेनकी गदासे मरे हुवे परिश्रम रहित मेरे सौ

बेटे पृथ्वीमें पड़े हैं, इससे अधिक दुःख मुझे और क्या होगा जो मेरे बेटे की स्त्री और अपने पति और पुत्रोंको मरा हुआ देख बाल खोले इधर उधर दौड़ रही है जो पहिले भूषण पहिन कर छत पर टहलती थी, सो आज रुधिरसे भीगी पृथ्वीमें लोट रही है ये, सब बड़े कष्टसे गिद्ध सियार और कौवेको हटाती है और दुःखसे व्याकुल होकर पागलके समान इधर उधर घूम रही है।

ये देखो दूसरी सुन्दर शरीरवाली स्त्री इस युद्धभूमिको देखकर दुःखसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें पड़ी है।

हे कृष्ण! लक्ष्मणकी माता राजपुत्री और दुर्य्योधनकी पटरानीको देखकर मेरा मन शान्त नहीं होता।

कोई पतिको कोई पुत्रको और कोई अपने भाईको पृथ्वीमें पड़ा हुआ देख मूर्च्छा खाकर पृथ्वीमें गिरती है, हे कृष्ण! कहीं युवती कहीं बूढ़ी स्त्री अपने बन्धुओंको रो रही है।

हे कृष्ण कहीं कोई स्त्री थकाई और मोहसे व्याकुल होकर रथके जुए या मरे हुवे हाथी और घोड़ोंके शरीरका आश्रय लेकर रोरही है।

हे कृष्ण कोई स्त्री अपने बन्धुका कटा हुआ कुण्डल समेत शिर हाथमें लेकर रोरही है, हमें यह निश्चय होता है कि मैंने और सब स्त्रियोंने पहिले जन्ममें कोई महा पाप किया था, इसीसे धर्म्मराजने इस वंशका नाश किया।

हे कृष्ण! पहिले किये हुए पुण्य और पापका अवश्य ही फल होता है ये देखो बड़े बड़े कुलमें उत्पन्न हुए काले बालोंवाली लज्जा-वती हंसके समान सुन्दर बालोंवाली स्त्री शोक और दुःखसे व्याकुल सारसोंके समान रोरही है।

हे कृष्ण! ये देखो इन स्त्रियोंके सुखको सूर्य्य अपने किरणोंसे तपा रहा है।

हे कृष्ण! ये देखो महा अभिमानी मतवाले हाथियोंकेसमान बलवान मेरे बेटोंके अनेक चन्द्रमा युक्त बाल सूर्य्यके समान सोनेके कवच सोनेकी माला पृथ्वीमें इस प्रकार पड़े हैं जैसे जलती हुई अग्नि।

हे कृष्ण! ये देखो शत्रुनाशन वीर भीम-सेनके हाथसे मर कर पृथ्वीमें सोते हैं भीमसे-नने इनके सब शरीरका रुधिर पी लिया भीम-सेनने इसे जूवेमें जीती हुई द्रौपदीके वचनसे मार डाला।

हे कृष्ण! इसने कर्ण और दुर्य्योधनको प्रसन्न करनेके लिये जुवेमें जीती हुई द्रौपदीसे कहा था की, हे पाञ्चाली! तू नकुल, सहदेव, और अर्ज्जुनके सहित हमारी दासी होगई अब हमारे घरमें जाकर दासीके काम कर।

हे कृष्ण! मैंने उस ही समय राजा दुर्य्यो-नसे कहा था कि, हे पुत्र! इस मृत्यु कि फांसमें पड़े हुवे लड़ाईके प्यारे दुर्बुद्धि अपने मामा शकुनीको त्याग कर पाण्डवोंसे सन्धिकर ले, अरे दुर्बुद्धे! तू क्रोधो भीमसेनको नहीं जानता जैसे कोई मशाल जलाकर हाथीको क्रोधित करता है ऐसे ही तू अपने वचन रूपी तेज बाणोंसे भीमसेनको क्रोध दिलाता है मैंने एक बार क्रोध करके अपने पुत्रोंको ऐसे ही सम-झाया था परन्तु उन्होंने न माना, इसीसे पाण्ड-वोंने उन्हें इस प्रकार नष्ट कर दिया जैसे बिषैला सांप अपने बिषसे बैलोंका नाश करता है, ये दुःशासन अपने बड़े बड़े हाथ फैलाये दुःशासन इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे सिंहसे मर कर हाथी, महा क्रोधी भीमसेन ये महा घोर कर्म्म किया जो दुःशासनका रुधिर पिया।

१८ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली हे कृष्ण! ये देखो मेरे पुत्र महापण्डित विकर्ण भीमसेनके बाणोंसे सो टुकड़े हुए पृथ्वीमें पड़े हैं।

हे मधुसूदन! ये हाथियोंके झुण्डमें पड़े हुए विकर्ण ऐसे शोभित होरहे हैं, जैसे शरदकालके मेघोंके बीचमें चन्द्रमा, ये देखो इसके धनुषोंको ठेंठयुक्त हाथके मांस खानेके लिये गिद्ध काट रहे हैं।

हे कृष्ण! इसकी तपस्विनी स्त्री मांस खानेवाले गिद्धोंको बहुत कष्टसे हटाती है, परन्तु हटा नहीं सकती।

हे कृष्ण! जो विकर्ण सुखसे सोने योग्य था, सो आज धूलमें लपटा हुआ पृथ्वीमें पड़ा है, इसके सब मर्म्मस्थान बाणोंसे कट गये हैं, तौभी तेज नष्ट नहीं हुआ।

हे कृष्ण! ये शत्रुनाशन दुर्मुख युद्धकी ओर मुख किये प्रतिज्ञापालक भीमसेनके हाथसे मरे हुए पड़े हैं, उनका आधा मुख सियार खा गये हैं, तो भी वह ऐसा दीखता है जैसे अष्टमीका चन्द्रमा, इस वीरका मुख अभीतक शोभासे नष्ट नहीं हुआ तो भी न जाने यह शत्रुओंके हाथसे मरकर धूलमें क्यों पड़ा है? जिस वीरके आगे युद्धमें कोई भी वीर खड़ा न हो सक्ता था, जो अपने बलसे स्वर्गको भी जीत सकता था, वह दुर्मुख शत्रुओंके हाथसे कैसे मारा गया?

हे कृष्ण! जगत्में वीर जिस धनुषधारीकी उपमा देते थे, वह धृतराष्ट्रका बेटा चित्रसेन आज मरकर पृथ्वीमें सोता है उस विचित्र मालाधारीके पास मांस खानेवाले जन्तुओंके सहित खड़ी हुई सुन्दर स्त्रियोंके रोनेसे और मांस खानेवाले जन्तुओंके शब्दसे यह युद्धभूमि इस समय विचित्र दीखती है।

हे कृष्ण! ये अपनी स्त्रियोंके बीचमें पड़े कटे तरुण विविंशति धूलमें सोते हैं इस बाणोंसे कटे हुए वीरके पास सहस्रों गिद्ध बैठे हैं, जिसने पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया था, वोही आज महात्माके योग्य शय्यापर सोता है, इसका हंसता हुआ सुन्दर नाक और सुन्दर भौंहवाला मुख चन्द्रमाके समान दीख रहा है, इसकी स्त्री इसके पास ऐसी बैठी है, जैसे क्रीड़ा करते हुए गन्धर्वोंके पास देवतोंकी सहस्रों कन्या।

ये देखो शत्रुओंकी सेनाके नाश करनेवाले महावीर दुःसहका शरीर लगे हुए बाणोंसे ऐसा दीखता है, जैसे फले हुए कचनारके वृक्षोंसे पर्व्वत, सोनेकी माला और चमकते हुए कवचसे इसकी शोभा ऐसी दीखती है, जैसे जलती हुई अग्निके सहित सफेद पर्व्वत की।

१९ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! जिसको जगत्में मनुष्य बल और तेज में आपसे छोटा कहते थे, जो सिंहके समान बलवान था, उस अकेलेने दुर्य्योधनके भयानक चक्र व्यूहको तोड़ दिया था, सो अभिमन्यु शत्रुओंके लिये मृत्यु होकर आप मर गये।

हे कृष्ण! उस महातेजस्वी अर्ज्जुनपुत्रका तेज मरनेपर भी अभीतक शान्त नहीं हुआ, ये उनकी स्त्री विराटकी पुत्री निन्दारहित उत्तरा अपने बालक पतिको मरा हुआ देख रो रही है, ये देखो उसे गोदमें लेकर उत्तरा पूछ रही है, ये सुन्दरी उत्तरा उसके फूले हुए कलीके समान मुखको देख देखके रोती है, पहिले ये लज्जामें भरकर और मद्यके मदसे मतवाली होकर उनके पास जाती थी, सो आज उनका रुधिरमें भीगा सोनेका कवच उतारकर देख रही है, उनको देखकर उनसे कहती है, कि, हे पापरहित कृष्ण! ये तुम्हारे समान सुन्दर आंखवाले तुम्हारे समान बली और तेजस्वी अभिमन्यु मरकर पृथ्वीमें पड़े हैं।

फिर उनसे कहती है कि तुम अत्यन्त सुकुमार थे, सदा कोमल हरिनके चमड़ेपर सोते थे, आज पृथ्वीमें क्यों पड़े हो? क्या कुछ दुःख नहीं होता? आज ये बड़े बड़े सोनेके बाजूबन्द

युक्त धनुष खींचनेसे ठेंठयुक्त हाथीके सूंड़के समान हाथ फैलाकर पृथ्वीमें क्यों पड़े हो? इतने सुखसे आज क्यों सोते हो कि जो मेरे इये रोनेपर भी नहीं बोलते; पहिले दूरहीसे मुझको देखकर बोलते थे, आज मैंने क्या अपराध किया जो नहीं बोलते? तुम सुभद्रा देवतोंके समान पिता और मुझे दुःखसे व्याकुल छोड़कर कहां जाते हो।

हे कृष्ण! ये देखो अभिमन्युके रुधिरसे भीगे हुए बाल खींच करके उसका मुंह अपनी गोदमें रखकर उत्तरा ऐसे पूछ रही है, मानो ये जीते ही हैं, उत्तरा पूछती है कि तुम अर्जुनके बेटे और साचात् श्रीकृष्णके भानजे थे, सो युद्धमें कैसे मारे गये? पाप कर्म्म करनेवाले कृपाचार्य्य, कर्ण, जयद्रथ, द्रोणाचार्य्य, और अश्वत्थामाको धिक्कार है, जिन्होंने मुझे विधवा कर दिया, जिस समय उन सबने अकेले बालक तुमको मिलकर मारा था, उनका मन कैसा होगया था? पाञ्चाल और पाण्डवोंके देखते देखते तुम्हे सनाथ होनेपर भी अनाथके समान वे दुष्टात्मा शत्रुवोंने कैसे मारडाला? तुमको मरा हुआ देख तुम्हारे महात्मा पिता बहुत रोरहे हैं, तुम्हारे विना न जाने वीर पुरुषसिंह अर्जुन कैसे जीते हैं, हे कमलनेत्र! तुम्हारे विना पाण्डव विजय और राज्य पानेपर भी प्रसन्न नहीं हुए मैं भी तुम्हारे पीछे उन्हीं लोकोंको जाती हूं जिनको तुमने अपने शस्त्र और धर्म्मसे जीता है, मैं बड़ी अभागिनी हूं जो तुम्हें युद्धमें मरा हुवा देखकर भी जीती हूं हे पुरुषसिंह! अब स्वर्गमें जाकर हंसकर मीठी बाणीसे मेरे समान किस स्त्रीको बुलाओगे, निश्चय ही अपने भोली और मीठी बाणीसे अप्सराओंको वशमें करोगे, तुम अपने पुण्यसे स्वर्गको गये जब वहां अप्सरावोंके सङ्ग विहार करोगे, तब मुझे भी स्मरण करना, हे सुभद्रापुत्र! केवल छः ही महीनेतक मेरा और तुम्हारा संग लिखा था, सातवें महीनेमें तुम मर गये।

उत्तराके ऐसे बचन सुनकर ये विराटकुलकी स्त्री उन्हें पकड़ती हैं, फिर आप ही विराटको रुधिरमें भीगे और द्रोणाचार्य्यके बाणसे कटे पृथ्वीमें पड़े देख वे आप ही रोती हैं, ये सियार, कौवे और गिद्ध उनका मांस खारहे हैं, ये उनकी स्त्री मांस खानेवालोंको हटा नहीं सकती और ये सब रानी घाम और परिश्रमसे व्याकुल होरही हैं इनके मुख सूख कर पीले होगये हैं।

हे कृष्ण! ये उत्तरा अभिमन्यु काम्बोजदेशी सुदक्षिण लक्ष्मण और सुदर्शन आदि बालक मरे पड़े हैं।

२० अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये विकर्त्तन पुत्र महा धनुषधारी महारथ कर्ण जलती हुई अग्निके समान अर्जुनके ही बाणरूपी जलसे शान्त होकर पड़े, उन्होंने अनेक महारथोंको युद्धमें मारा था, सो आज ये रुधिरमें भीगकर युद्धमें मरे पड़े हैं ये महा क्रोधी महा धनुषधारी बलवान वीर कर्ण अर्जुनके हाथसे मर कर पृथ्वीमें सोते हैं ये सब बाल खोले उनकी स्त्री उनके पास बैठी रोरही हैं जिस दुर्य्योधनके आश्रयसे हमारे महारथ पुत्रोंने पाण्डवोंसे इस प्रकार युद्ध किया था जैसे हाथियोंका झुण्ड अपने राजाको आगे करके लड़ता है उस ही कर्णको अर्जुनने इस प्रकार मार डाला जैसे सिंह शार्द्दूलको। अथवा मतवाला हाथी हाथीको। जिस कर्णके भयसे सदा धर्म्मराज युधिष्ठिर घबड़ाते रहते थे जिसके डरसे युधिष्ठिर तेरह बर्ष सुखसे नहीं सोये थे, जिसको युद्धमें कोई नहीं जीत सका था, जो जलती हुई प्रलय कालकी अग्निके समान तेजस्वी इन्द्रके समान वीर और हिमाचल पर्व्वतके समान

स्थिर था, सो वीर कर्ण धृतराष्ट्र पुत्र दुर्य्योधनको शरण देकर आज मर कर इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं जैसे वायुसे टूटा हुआ वृत्त, ये देखो वृषसेनकी मा कर्णकी स्त्री पृथ्वीमें पड़ी हुई रोरही है और कहती है कि तुम्हारे गुरुने जो शाप दिया था इसहीसे पृथ्वीने तुम्हारे रथका पहिया पकड़ लिया उसही समय वीर अर्जुनने युद्धमें तुम्हारा शिर काट लिया।

ये सुषेणकी माता महापराक्रमी महावीर कर्णको सोनेका कवच पहिने पृथ्वीमें पड़े देख मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी है, देखो मांस खानेवालोंने महात्मा कर्णका शरीर थोड़ा ही छोड़ा है, इस समय ये ऐसे भयानक दीखते हैं, जैसे कृष्णापक्षका चन्द्रमा यह उनकी स्त्री उठकर और कर्णका मुख देखकर रोती है और अपने पुत्रके शोकसे व्याकुल होगई है।

२१ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण ! ये देखो आवन्ती नगरीके मरे हुवे राजाको गिद्ध और सियार खारहे हैं जगतमें इनके अनेक बन्धु थे, परन्तु इस समय बन्धु रहित मनुष्यके समान भीमसेनके हाथसे मारे गये, इस वीरने अनेक वीरोंको युद्धमें मारा था, सो आज आप मर कर रुधिरसे भीगकर और शय्यापर सोते हैं आज उन्हें ही मांस खानेवाले सियार कौवे आदि पक्षी इधर उधर खींचे फिरतेहैं समय बड़ा कठोर है, आज इस ही वीरकी स्त्री इसके चारों ओर बैठी रोरही है।

हे कृष्ण ! ये देखो महा धनुषधारी यशस्वी बाल्हिक सोते हुए शार्दूलके समान बाणसे मरे हुवे पृथ्वीमें पड़े हैं उनके मरनेपर भी मुख ऐसा सुन्दर दीखताहै जैसे पूर्णमासीका चन्द्रमा।

हे कृष्ण ! देखो पुत्रके शोकसे व्याकुल प्रतिज्ञा पालक अर्जुनके हाथसे मरे हुवे जयद्रथ पड़े हुवे हैं महात्मा द्रोणाचार्य्यके रक्षा करने परभी ११ अक्षौहिणीका व्यूह तोड़ कर सत्यपालन करनेके लिये इन्हें मारा था, ये महा यशस्वी महा अभिमानी जयद्रथ सिंधू और सौवीर देशके स्वामी थे, आज उन्हेंही सियार और गिद्ध खारहे हैं यद्यपि इनकी भक्त स्त्री उनकी रक्षा कर रही हैं तो भी इनको डराकर गिद्ध और सियार उन्हें खींच कर बनमें ले जाना चाहते हैं परन्तु काम्बोज वन देशकी स्त्री उनकी रक्षा कर रही हैं जिस समय केकैयदेशके क्षत्रियोंके समेत द्रौपदीको जयद्रथ ले भागे थे, उसी समय पाण्डव उन्हें मार डालते परन्तु उस समय उन्होंने दुःसलाका मान रखनेके लिये उन्हें नहीं मारा था, परन्तु न जाने आज दुःसलाको क्यों बिसरा दिया, आज वही हमारी पुत्री दुःसला अपने पतिको मरा हुआ देख पाण्डवोंको गाली देती है, अपना शिर और छाती पीटती है और रोती है।

हेकृष्ण ! इससे अधिक मेरे लिये और क्या दुःख होगा जो मेरी पुत्री और बेटोंकी बहू विधवा होकर रो रही हैं ये देखो दुःसला अपने पतिका शिर न पाकर शोक और भयसे रहित मनुष्यके समान चारों ओर दौड़ती है अकेले जयद्रथने अभिमन्युकी रक्षा करनेके लिये आते हुवे सब पाण्डवोंको रोक दिया था, जिसने पाण्डवोंकी बहुत सेनाका नाश कर दिया था, सोई जयद्रथ आज मरे हुए पड़े हैं उस महा योधा वीरके चारों ओर रोती हुई चन्द्रमाके समान मुखवाली स्त्री इस प्रकार बैठी हैं जैसे मतवाले हाथीके पास हथिनी।

२२ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण ! ये साक्षात् नकुलके मामा शल्य धर्म्म जाननेवाले युधिष्ठिरके हाथसे मर कर पृथ्वीमें पड़े हैं

ये मद्र देशके महा बलवान् राजा सदा अपनेको तुम्हारे समभते थे इन्होंने ही कर्णका

रथ हांकते समय पाण्डवोंकी बिजयके लिये कर्णका तेज नाश किया था, आज उसही शल्यके पूरे चन्द्रमाके समान सुन्दर और कमलके समान नेत्रयुक्त मुखको कौवे खा रहे हैं।

इसके मुखसे जो सोनेके समान जीभ निकल आई है उसे पक्षी खा रहे हैं। युधिष्ठिरके हाथसे मरे हुए मद्रराज शल्यके चारोंओर बैठी हुई स्त्री रो रही हैं ये उत्तम क्षत्री कुलमें उत्पन्न हुए पतला कपड़ा पहिननेवाली स्त्री पुरुष सिंह क्षत्रिय श्रेष्ठ शल्यको देख रोरही हैं शल्यके चारोंओर बैठी स्त्री इस प्रकार रोती है जैसे कीचड़में फसे हाथीके चारोंओर खड़ी उसी समयकी व्याई हथिनी, ये ही शल्य शरण आयेको शरण देते थे वही वीर शल्य बाणोंसे कटे पड़े हैं।

हे कृष्ण! ये पर्व्वत वासी महा प्रतापवान श्रीमान राजा भगदत्त हाथीका अङ्कुश हाथमें लिये हुए पृथ्वीमें पड़े हैं जिसके शिर पर ये सोनेकी माला विराजमान है उसे ये मांस खानेवाले खाय रहे हैं इस समय राजा भगदत्तके बाल बहुत ही शोभित हो रहे हैं। अर्ज्जुनके सङ्ग इसका घोर युद्ध हुआ था उस युद्धको देखकर वीरोंके रोयें खड़े होते थे इन दोनोंका ऐसा युद्ध हुआ था, जैसे इन्द्रके सङ्ग वृत्रासुरका; अन्तमें महाबाहु भगदत्त अर्ज्जुनके हाथसे मारे गये अपने बलसे अर्ज्जुनके हृदयमें सन्देह कर दिया था।

हे कृष्ण! जगत्में जिसके समान कोई तेजस्वी बलवान् और वीर्य्यवान् कोई नहीं है वह भी इस समय मरे पड़े हैं ये महातेजस्वी इस समय ऐसे शोभित हो रहे हैं जैसे प्रलयकालमें आकाशसे गिर हुए सूर्य्य अपने बाणरूपी किरणोंसे शत्रुवोंको तपा कर अब अस्त होना चाहते हैं, उन्होंने जन्म भर अपना वीर्य्य नष्ट नहीं किया, सो आज वीर शर शय्यापर सो रहे हैं, नालीक आदि बाणोंकी शय्यापर सोते हुए भीष्मको शोभा इस समय ऐसी दीखती है जैसे सरकण्डोंके बनमें सोते हुए भगवान् कार्त्तिकेयकी बाणोंकी शय्यापर भीष्म सोते हैं, अर्ज्जुनने एक बाणका तकिया भी इनको दिया है, इन्होंने अपने पिताकी आज्ञासे ब्रह्मचर्य्य पालन किया है सोई भीष्म आज शर शय्यापर सोते हैं, इनके समान जगत्में कोई वीर नहीं है, ये धर्म्मज्ञ सब विद्या जाननेवाले सब विषयोंका निर्णय करनेवाले भीष्म देवतोंके समान प्राण धारण कर रहे हैं, इनके समान कोई विद्यमान्, पराक्रमी और धर्म्मात्मा कोई नहीं है, सो आज शर शय्यापर सोते हैं, जब पाण्डवोंने इनको बुलाकर पूछा था कि आपकी मृत्यु कैसे होगी, तब सत्यवादी महात्मा धर्म्म-जाननेवालेने अपनी मृत्यु पहिले ही बता दी थी इन्होंहीने नष्ट हुए कुरुवंशका फिर उद्धार किया था सोई महाबुद्धिमान आज इस दशाको प्राप्त हो गए।

हे कृष्ण! जब देवतोंके समान भीष्म ही स्वर्गको चले गये तब कौरव लोग हस्तिनापुरमें जाकर क्या करेंगे।

हे कृष्ण! सात्यकीके गुरू और अर्ज्जुन आदि कौरवोंके गुरू द्रोणाचार्य्य मरे पड़े हैं ये महाबलवान् परशुराम और इन्द्रके समान शस्त्रविद्याको जानते थे, इन्हींके प्रतापसे अर्ज्जुनने ऐसे ऐसे घोर कर्म्म करे थे, सोई द्रोणाचार्य्य आज मरे पड़े हैं, शस्त्रोंने भी उनकी रक्षा नहीं करी इन्हींके आश्रयसे कौरव लोग पाण्डवोंको युद्ध करनेके लिये ललकारते थे, वेही शस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य आज शस्त्रोंसे कटे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं जिन्होंने अग्निके समान तेज धारण करके पाण्डवोंको सेनाको भस्म किया था वेही द्रोणाचार्य्य आज बुती हुई अग्निके समान मरे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं। इस समय भी उनके धनुषको मूठी नहीं खुली और करहस्ती भी नहीं छुटी, ये अभी

भी जीते हुएके समान दीखते हैं ये ब्रह्माके समान चारों वेद और शस्त्र विद्याको जानते थे, देखो जिन द्रोणाचार्य्यके चरणोंमें सैकड़ों शिष्य प्रणाम करते थे उन्ही प्रणाम करने योग्य सुन्दर चरणोंको सियार खींचते फिरते हैं, ये देखो धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्यके पास दुःखसे भरी हुई कृप्ती बैठी है, देखो शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अपने पति मरे हुए द्रोणाचार्य्यके पास बाल खोले नीचा मुख करे रोती हुई कृप्ती बैठी है, धृष्टद्युम्नके बाणोंसे कुर्त्ता कवचली कट गया है अब जटाधारिणी ब्रह्मचारिणी, सुकुमारी, यशस्विनी कृप्ती अपने पतिका प्रेत कर्म्म करनेको कहती हैं, ये जटाधारी ब्रह्मचारी द्रोणाचार्य्यके ब्राह्मण शिष्य धनुष शक्ति रथोंके पहिये और अनेक प्रकारके बाणोंसे चिता बना रहे हैं, अब उन्होंने चितामें आग लगाकर द्रोणाचार्य्यको जला दिया ये साम वेद जाननेवाले द्रोणाचार्य्यके शिष्य रोरहे हैं और अपने गुरुकी प्रशंसा कर रहे हैं, अब ये चिताकी प्रदक्षिणा करके और कृप्तीको आगे करके गङ्गा स्नानको जाते हैं।

२३ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा सात्यकीके हाथसे मरे हुए पड़े हैं देखो अनेक प्रकारके पक्षी इनका मांस खा रहे हैं, ये देखो पुत्रके शोकसे व्याकुल सोमदत्त महाधनुषधारी सात्यकीकी निन्दा कर रहे हैं, जो निन्दारहित भूरिश्रवाकी माता शोकसे व्याकुल होकर अपने पतिको बहुत समझा रही है कहती हैं, हे महाराज! अपने प्रारब्ध होसे इस भयानक कुरुकुल नाशको देखा अपने प्रारब्धहीसे अनेक यज्ञ करनेवाले अपने पुत्र भूरिश्रवाकी मृत्यु न देखी, अपने प्रारब्धहीसे सारसियोंके समान रोती हुई अपने बहुओंके शब्द नहीं सुनते हैं, महाराज ये आपके बेटेकी बहू एक साड़ी पहिने बाल खोले अनाथ होकर इधर उधर रोती फिरती हैं, अपने प्रारब्धहीसे सियारोंसे खाये जाते हुए अर्जुनके बाणसे हाथ कटे भूरिश्रवाको नहीं देखते आप प्रारब्धही से रोती हुई बहू स्त्रीका शब्द नहीं सुनते अपने प्रारब्धहीसे महात्मा भूरिश्रवाका शोकका भरा हुवा छत्र रथसे गिरता हुआ न देखा।

ये सुन्दर नेत्रवाली भूरिश्रवाकी स्त्री अपने मरे हुवे पतिके चारों ओर बैठी सोच कर रही है, जो पतिके शोकसे व्याकुल दीन स्वरसे रोती हुई भूरिश्रवाकी स्त्री पृथ्वीमें गिरती हैं और कहती हैं कि अर्जुनने यह क्या कुकर्म्म किया, जो यज्ञ करनेवाले आपका हाथ छलसे काट लिया इससे भी अधिक पाप कर्म्म सात्यकीने किया जो शस्त्ररहित आपका शिर काट लिया है, परन्तु आप एकलेको अधर्म्मसे दो दो मनुष्यने मिलकर मारा इस यशनाशक अधर्म्म भरे कर्म्मको करते सात्यकी सभा और महात्माओंके बीचमें क्या कहेंगे? इस प्रकार जो भूरिश्रवाकी स्त्री रो रही है, ये भूरिश्रवाकी पटरानी स्त्री अपने पतिका हाथ गोदमें लेकर कहती है कि यदि बीर क्षत्रियोंका नाश करनेवाला मित्रोंको अभय दान देनेवाला और सहस्रों जीवोंको दान करनेवाला आपका हाथ बीर अर्जुनने कृष्णके देखते देखते दूसरेके सङ्ग युद्ध करते हुए बिना कहे काट दिया, अब ऐसा पाप कर्म्म करके कृष्ण और अर्जुन क्या कहेंगे, इतना कहकर ये रानी चुप होगई है, भूरिश्रवाकी स्त्री सब रोरही हैं।

जो महापराक्रमी शकुनी अपने भानजे सहदेवके हाथसे मरे हुए पड़े हैं, पहिले अनेक मनुष्य सोनेके डण्डेवाले पङ्खासे हवा करते थे, आज उनको ही कौवे अपने पङ्खोंसे हवा कर रहे हैं, जो अपनी मायासे सैकड़ों सहस्रों रूप बनाता था, उस छलीकी माया सहदेवके तेजसे

भस्म होगई, जिस छलीने सभामें युधिष्ठिरको जीता था और उनका सब राज्य ले लिया था, वही शकुनी आज मर कर पृथ्वीमें पड़ा है, जिस छलीने मेरे पुत्रोंका नाश करनेहीके लिये छल सीखा था सोई उस ही छलसे शकुनीको आज गिद्ध और कौवे खा रहे हैं, इस ही दुष्टके कारणसे मेरे पुत्र और पाण्डवोंमें बैर हुआ था, इसहीसे मेरे पुत्र और बान्धवोंके सहित मारा गया। जैसे मेरे पुत्र शस्त्रोंसे मरकर स्वर्गको गये हैं, ऐसे ही यह दुर्बुद्धि मरकर स्वर्गको गया ऐसा नहीं कि यह दुष्टबुद्धि वहां भी कोमल बुद्धिवाले मेरे बेटोंमें बैर करादे।

२४ अध्याय समाप्त।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण! ये देखो दुशालीकी शय्यापर सोने योग्य बैलके समान कन्धेवाला महापराक्रमी काम्बोज देशका राजा मरके धूलमें सोता है जिसके चन्दन लगने योग्य हाथोंको रुधिरमें भीगे हुए देख उसकी स्त्री रोरही है, उसकी दुःख भरी स्त्री ऐसा कह रही है कि जो सुन्दर उजली अंगुलीवाले परिघके समान दृढ़ आपके यही हाथ हैं जिनके संगमें बिहार करती करती मैं तृप्त नहीं होती थी। हे प्रजा नाथ! अब मैं आपके बिना अनाथ होकर कहां कांपती और रोती फिरूंगी इन स्त्रियोंको घरमें बैठे बहुत समय बीत गया, तौभी फूल मालाओंके समान इनकी सुगन्ध नष्ट नहीं हुई।

हे कृष्ण ये देखो सब प्रकार समान सोनेके बाजू बन्द पहिने कलिङ्गदेशका बीर राजा मरा पड़ा है।

हे कृष्ण! ये जयसेन नामक मगधदेशके राजाकी स्त्री अपने मरे हुवे पतिके चारों ओर खड़ी हुई व्याकुल होकर रोरही है।

हे कृष्ण! जिन बड़ी बड़ी आंखवाली स्त्रियोंका मीठा और कोमल रोनेका शब्द मेरे हृदयको शोच नहीं होने देता, जो मगधदेशकी रानी उत्तम सेजपर सोने योग्य थी सो आज शोकसे व्याकुल होकर वस्त्र आभूषण फेंककर भूमिमें लोट रही हैं।

हे कृष्ण! जो कोशलदेशके राजपुत्र बृहद्दलकी स्त्री अपने पतिके चारों ओर बैठी हुई रोरही हैं और दुःखसे व्याकुल होकर अभिमानके छूटे हुए बाणोंको इनके शरीरसे निकालती है और मूर्च्छा खाकर गिरती हैं, इन सुन्दरी स्त्रीके मुख घाम और परिश्रमसे व्याकुल होकर ऐसे होगये हैं। जैसे मुरझाये हुए कमल।

हे कृष्ण। ये देखो सोनेकी माला और सुन्दर बाजूबन्द पहिरे धृष्टद्युम्नके बालक बेटे मरे पड़े हैं, ये सब बालक रथरूपी गदा, धनुष, ज्वाला, बाण, शक्ति और गदारूपी इन्धनयुक्त द्रोणाचार्य्यरूपी अग्निमें इस प्रकार जल गये जैसे आगमें पतङ्ग जलते हैं।

ये सुन्दर बाजूबन्द पहिरे केकयदेशके पांचो राजपुत्र द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरकर युद्धकी ओरको मुख किये पड़े हैं।

ये तपे हुए सोनेके कवच पहिने ताड़की ध्वजावाले बीर अपने तेजसे पृथ्वीको जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित करते हैं।

हे कृष्ण! जैसे बनमें सिंहसे मरकर मतवाला हाथी गिरता है, ऐसे ही द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरे हुए महाराज द्रुपद [illegible] पड़े हैं महाराज द्रुपदका कमलके समान सफेद छत्र ऐसा दीखता है, जैसे शरद कालमें चन्द्रमा। दुःखसे भरी बूढ़े राजा द्रुपदकी स्त्री और बेटोंकी बहू राजा द्रुपदको जलाकर और उनकी चिन्ताकी प्रदक्षिण करके लौटी आती है

हे कृष्ण! ये देखो चन्देरीके राजा धृष्टकेतुकी स्त्री अपने बीर पतिको द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे मरा हुआ देख रोरही है इस ही महाधनुषधारी द्रोणाचार्य्यके बाणोंको नाश किया था, अन्तमें उनहीके बाणोंसे इस प्रकार मारे गये, जैसे नदी बढ़नेसे वृक्ष टूट जाता है,

इस ही महारथने युद्धमें सहस्रों वीरोंको मारा था, इस समय उसे पक्षी खारहे हैं, और इसकी स्त्री भी पास बैठी है।

जो महापराक्रमी वीर तुम्हारी फूफीका पोता था, सो आज बान्धव और सेनाके सहित मारा गया। इसकी स्त्री इसे गोदमें लेकर रोरही है।

हे कृष्ण ! ये देखो सुन्दर कुण्डल और सुन्दर मुखवाला धृष्टकेतुका पुत्र द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे कटा हुआ पृथ्वीमें पड़ा हुआ है इसने शत्रुवोंसे युद्ध करते हुए अपने पिताको अभी-तक नहीं छोड़ा।

हे कृष्ण ! ऐसे ही मेरा पोता लक्ष्मण भी अपने मित्रोंके सहित स्वर्गको चला गया।

हे कृष्ण ! ये सोनेके बाजूबन्द और कवच पहिने बाण, खड्ग धारण किये, निर्मल माला पहिने हुए बैलके समान आंख और रूपवाले उज्जैन निवासी विन्द और अनुविन्द इस प्रकार पृथ्वीमें पड़े हैं, जैसे बसंत ऋतुमें वायुसे टूटे हुए कचनारके वृक्ष।

हे कृष्ण ! युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव और तुमको कोई जगत्में नहीं मार सक्ता जो भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, कृपा-चार्य्य, दुर्य्योधन, अश्वत्थामा, सिन्धुराज जय-द्रथ, सोमदत्त, विकर्ण, और वीर कृतवर्म्माके हाथसे तुम सब बच गये।

हे कृष्ण ! समयकी गति बड़ी कठिन है जो पुरुषसिंह वीर अनेक बाणोंसे देवता और गन्धर्वोंको भी मार सकते थे, सोही आज मर-कर पृथ्वीमें पड़े हैं, कालके लिये कोई कर्म्म कठिन नहीं है देखो सब वीर मारे गये।

हे कृष्ण ! जिस समय तुम सन्धि करानेको आये थे, और बिना काम सिद्ध भये लौट गये थे, तब ही मेरे बलवान पुत्रोंका नाश हो चुका था, उसी दिन भीष्म और बुद्धिमान विदुरने मुझसे कहा था, कि "अब तुम अपने पुत्रोंसे [illegible]म मत करो" उनका ज्ञान झूठा नहीं हुआ थोड़े ही दिनमें मेरे महापराक्रमी पुत्र भस्म होगये। श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे जय ! ऐसा कहकर गान्धारी धीरजको छोड़ कर शोकसे व्याकुल होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी फिर पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होकर उठी और क्रोधसे कृष्णको दोष लगाने लगी।

गान्धारी बोली, हे कृष्ण ! जब कौरव और पाण्डव दोनों परस्पर लड़के नष्ट होते थे, तब तुमने उन्हें मना क्यों नहीं किया ? तुमने सबके बचन सुने थे, तुम समर्थ बलवान और बहुत सेवकोंसे युक्त होनेपर भी कौरवोंका नाश देखते रहे। इस लिये उस कर्म्मका फल भोगो मैंने जो अपने पतिकी सेवासे तप किया हो तो उससे मेरा बचन सत्य होय, तुमने कौरव और पाण्डवोंको युद्ध करनेसे न रोका इससे तुम भी अपनी जातिका नाश करोगे।

हे कृष्ण ! अबसे छत्तीसवें अपने बेटे, पोते, जाती और बन्धुवोंसे हीन होकर अनाथके समान बनमें दुष्ट उपायसे मारे जावोगे। जैसे ये कुरु-कुलकी स्त्रीयें रोती फिरती हैं ऐसेही तुम्हारी स्त्री पुत्र और बान्धवोंसे हीन होकर रोवेंगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, देवी गान्धारीके ऐसे भयानक बचन सुनकर श्रीकृष्ण हंसकर बोले, हे गान्धारी ! तुम जो कहती हो सो पहिले ही हमने विचार लिया था, प्रारब्धहीसे यदुवंशियोंके नाशका समय आगया है, उन्हे मेरे सिवाय देवता और दानव भी नहीं मार सकते वे परस्पर लड़के नष्ट हो जांयगे।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन पाण्डवोंने घबड़ा-कर अपने जीनेकी आशा छोड़ दी।

२५ अध्याय समाप्त।

स्त्री बिलाप पर्व्व समाप्त।

आगे श्राद्ध पर्व्व लिखते हैं।

श्रीकृष्ण बोले, हे गान्धारी ! अब तुम उठो शोक मत करो ; ये कुरुवंशका नाश तुम्हारे ही

अपराधसे हुआ है, तुमने पहिले महाअभिमानी दुरात्मा निठुर लड़ाईके प्यारे और बूढ़ोंकी आज्ञा न माननेवाले दुर्य्योधनको न रोका, अब मुझे दोष क्यों देतो हो, जो मरे हुए मनुष्य अथवा नष्ट हुए कामका शोच करता है, उसे कुछ लाभ नहीं होता और सदा दुःखहीमें पड़ा रहता है, ब्राह्मणी तपस्वी, गाय, बोझ ले चलनेवाले, घोड़ी दौड़ानेवाले, शूद्रदास, वैश्य पशु पालनेवाले और राजपुत्री चत्रियाणी मनुष्यको मारनेवाले पुत्रको उत्पन्न करती है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, श्रीकृष्णके दूसरी बार ऐसे कठोर वचन सुनकर गान्धारी शोकसे व्याकुल होकर चुप होगई।

धर्म्म जाननेवाले राजा धृतराष्ट्र भी अपनी दुर्बुद्धि दूर करके युधिष्ठिरसे बोले, हे पाण्डव! तुम युद्धसे बचोहुई सेनाकी गिन्ती जानतेहो यदि मरे हुवोंकी गिन्ती जानते हो तो हमसे कहो।

युधिष्ठिर बोले, हे राजन्! इस युद्धमें १० हजार १० हजार छाछट करोड़ मनुष्य मारे गए, इनके सिवाय जिन वीरोंको कोई नहीं देख सक्ता था, ऐसे १४ हजार १० हजार ३ हजार और ५ वीर मारे गये महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिर! मेरो बुद्धिमें तुम सर्व्वज्ञ हो इसलिये हमसे कहो वे वीर कौन कौन गतिको प्राप्त भये!

महाराज युधिष्ठिर बोले, जो इस युद्धमें प्रसन्न होकर मरे हैं वे सब महावीर इन्द्रलोकको गये, जो युद्धमें बिना प्रसन्न होकर युद्ध करते करते मरे हैं वे गन्धर्व्व लोकको गए, जो भागते और प्राणदान मांगते हुये युद्धमें शस्त्रसे मारे गये वे गुह्यक लोकको गये, जो गिरे हुए शस्त्रहीन लज्जासे भरे युद्धको और मुख देय वीर चत्री धर्म्मसे मरे हैं, वे निःसन्देह ब्रह्मलोकको गए, जो डेरोंके भीतर मारे गए उनका जन्म उत्तर कुरुदेशमें होगा।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे पुत्र! तुम कौनसे ज्ञानके बलसे सिद्धके समान उन्हें देख रहेहो।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे राजन्! जब मैं आपकी आज्ञासे बनमें घूमता था, तब तीर्थयात्राके समय देवर्षि लोमस मेरे पास आये थे, उन्हीकी कृपा और योगसे यह शक्ति होगई है।

महराज धृतराष्ट्र बोले, हे युधिष्ठिर! अब तुम विधिपूर्व्वक अनाथ और सनाथ चत्रियोंके शरीर जलावो किसीका शरीर नष्ट न होने पावे इनका संस्कार करनेवाला कोई नहीं है और जिन्हें गिद्ध और सियार खींच रहे हैं, उनका कर्म्म भी हमेंही करना चाहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! धृतराष्ट्रकी ऐसी आज्ञा सुन कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने दुर्य्योधनके पुरोहित सुधर्म्मा,अपने पुरोहित धौम्य सञ्जय, महाबुद्धिमान बिदुर, युयुत्सु, इन्द्रसेन आदि सारथी और सब सेवकोंको आज्ञा दी कि तुम लोग इन सबके प्रेतकर्म्म करो।

महाराज युधिष्ठिरकी आज्ञासे बिदुर, सञ्जय, सुधर्म्मा और इन्द्रसेन आदि सेवकोंने चन्दन अगर तगर आदि काठ, घी, तेल सुगन्धी और बहुत मूल्यवाले रेशमी कपड़े इकट्ठे करके काठ टूटे रथ और शस्त्रोंकी चिता बनाकर सावधान होकर शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार सब राजोंको क्रमसे फूका सौ भाइयोंके सहित राजा दुर्य्योधन, शल्य, भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिमन्यु, सुदर्शन, लक्ष्मण, राजा धृष्टकेतु, बृहद्दल, सोमदत्त, सैकड़ों सञ्जय, राजा चेमधन्वा, बिराट, द्रुपद, सिखण्डी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, बिक्रान्त, उत्तमौजा, कौशल्य द्रौपदीके पुत्र, शकुनी, अचल वृषक, राजा भगदत्त, पुत्रोंके सहित कर्ण, महाधनुषधारी कैकेय, राक्षसराज घटोत्कच, बकासुरका भाई अलम्बुष और जलसिन्ध आदि सहस्रों राजोंको घीके धारासे जलती हुई अग्निमें फूक दिया, किसी महात्माका पिताके समान कर्म्म किया ब्राह्मण साम और ऋगवेदकी ऋचा पढ़ने

लगी। उस रात्रीमें स्त्रियोंके रोनेके शब्दसे मिला हुआ वेदका शब्द भी भयानक होता, वे धूंआरहित जलती हुई चिता आकाशतक दिखाई देने लगी, और जो अनेक देशोंसे आये हुए अनाथ जवो वहां मरे हुए पड़े थे, विदुरने राजाकी आज्ञासे उन सबको इकट्ठा करके चिताओंमें घी डालकर जला दिया इस प्रकार राजा युधिष्ठिर उनकी फूककर राजा धृतराष्ट्रको आगे करके गङ्गाको चले।

२६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! वे सबलोग पवित्र जलवाली पवित्र गङ्गामें जाकर आभूषण कपड़े और पगड़ी उतारकर पिता, भाई, पोते, मित्र और पुत्रोंको जल देने लगे! दुःखसे रोती हुई स्त्रियां भी अपने पति और बान्धवोंको जल देने लगीं, उस समय गङ्गाका जल अत्यन्त सुन्दर दीखने लगा, वीरोंकी स्त्रियोंसे भरा हुआ वह गङ्गाका तट समुद्रके समान दीखने लगा।

हे महाराज! उस समय शोकसे व्याकुल रोती हुई कुन्ती धीरे धीरे अपने पुत्रोंसे बोली, हे पाण्डवो! जिस वीर लक्षणोंसे भरे महाधनुषधारी महारथ कर्णको अर्जुनने मारडाला जिसको तुम लोग राधा और सूतपुत्र जानते थे, जो सेनाके बीचमें सूर्य्यके समान चमकता था, जो एक ही सब सेना सहित सब पाण्डवोंसे लड़ता था, जो दुर्य्योधनका सेनापति था, जिसके समान जगत्में कोई राजा बलवान नहीं था, जो कभी युद्धको छोड़कर नहीं भागता था जो जगत्में यशको प्राणोंसे भी अधिक प्यारा मानता था, वह कर्ण तुम्हारा बड़ा भाई था पहिले सूर्य्यके तेजसे वही सूर्य्य समान तेजस्वी कवच और कुण्डल धारण किये मेरे गर्भसे उत्पन्न हुआ था, इसलिये तुम लोग उसे भी जल दो। अपनी माताके ऐसे कठोर वचन सुनकर सब पाण्डव कर्णके शोकसे व्याकुल होगये। तब पुरुष सिंह युधिष्ठिर सांपके समान लम्बा स्वांस लेकर अपनी मातासे बोले, ये बाणरूपी तरङ्ग ध्वजारूपी बड़ी बड़ी तरङ्ग बड़े बड़े हाथरूपी ग्राहतालीके शब्दरूपी शब्द और रथरूपी भौरसे युक्त कर्णरूपी समुद्र पहिले तुम्हारे देवरूपी गर्भसे कैसे उत्पन्न हुए थे, जिसके बाणोंको अर्जुनके सिवाय और कोई नहीं सह सक्ता था, जिसके बाहुबलसे हमलोग सदा डरते रहते थे, जिसके बाहुबलसे धृतराष्ट्रके पुत्र राज्य करते थे, उस अग्निरूपी वीर्य्यको तुमने कपड़ेसे कैसे छिपाया था, अर्जुनके बाणोंको महारथ कर्णके सिवाय और कोई राजा नहीं सह सक्ता था, यह सब शस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ हम लोगोंके बड़े भाई थे, उस महा बलवानको तुमने पहिले कैसे उत्पन्न किया था, तुमने यह कथा आज तक हम लोगोंसे नहीं कही इसलिये हमारा नाश होगया। कर्ण, अभिमन्यु द्रौपदीके पांचो पुत्र पाञ्चाल और कौरवोंके मरनेसे हमें महा दुःख हुआ है और सब दुःखसे सौ गुना यह दुःख होगया इस समय हम कर्णके शोकसे ऐसे व्याकुल होगये हैं जैसे कोई अग्निसे जलता है, यदि हम पहिले इस बातको जानते तो यह कुरुकुलका नाश न होता।

धर्म्मराज युधिष्ठिरने इस प्रकार धीरे धीरे रो कर कर्णको जल दिया फिर राजा युधिष्ठिरने कर्णको सब स्त्रियोंको बुलाकर भाईके ओरसे उनका सब कर्म्म किया फिर बोले कि हमने भूलसे अपने बड़े भाईको मारडाला इस लिये हम शापदेते हैं कि स्त्रियोंके मनकी इच्छा पूरी न होगी। ऐसा कहकर महाराज युधिष्ठिर व्याकुल होकर गङ्गासे निकले और तटपर बैठे।

२७ अध्याय समाप्त।

इति श्रीभाषा महाभारत स्त्रीपर्व्व समाप्त।